विद्यापति संकलित

शैवसर्वस्वसारः

विषय-सूचि

एच्० एच्० विल्सनक विचारमे रुद्र निश्चित रूपसँ अग्नि अथवा इन्द्रक एक विशेष रूप छलाह। एल० बी० श्राडरक अनुसार रुद्र ओहि परमात्मा सभमे प्रमुख छलाह जे वायुक संग मिलि अन्हड़ उत्पन्न करैत छलाह। ग्रासमान हिनका एक कल्पित रुद् (चमकब) धातुसँ निष्पन्न भेल कहैत छथि, जखन कि पिशल हिनका रुद् (लोहित होयब) एहि कल्पित धातुसँ व्युत्पन्न भेल मानैत छथि आ' एकर अर्थ चमक वा लोहित करैत छथि।[५]

ऋग्वेदमे रुद्रक शारीरिक विशेषता निम्न रूपक कहल गेल छनि —

रुद्रकेँ एक हाथ छनि। हुनक भुजा दृढ़ एवं अवयवसँ युक्त छनि। हुनक ठोर सुन्दर छनि आ' रंग कैल छनि। हुनक केश औंठिया छनि आ' रूप अनेक छनि। ओ द्युतिमान् सूर्य एवं स्वर्णक सदृश चमकैत छथि। ओ स्वर्णिम आभूषणसँ प्रसाधन कयने छथि आ' अनेक प्रकारक निष्क पहिरने छथि। ओ रथारूढ़ रहैत छथि।

वाजसनेयिसंहिता (१६-८) हिनका रूपमे किछु आरो जोड़ि दैत छनि। यथा, ओ सहस्राक्ष छथि। हुनका पेट, मुह, जिह्वा आ दाँत छनि। हुनक पेट कारी आ पीठ लाल छनि। ओ नील शिखण्ड छथि। ओ ताम्र आ' लोहित रंगक छथि आ' पर्वत पर रहैत छथि।

रुद्रक अनेक उपाधिक चर्चा वेदमे कयल गेल अछि। रुद्रक एक रूपसँ 'गोघ्न' 'नृघ्न' आ' 'क्षयद्वीर' उपाधिक सार्थकता सिद्ध होइत अछि। रुद्रक दोसर रूप 'कपर्दिन्' सेहो अछि। एकर अर्थ जटाजूटधारी होइत अछि। रुद्रक एक उपाधि 'दिवोवराह' अर्थात् 'आकाशवराह' सेहो अछि।

ऋग्वेदीय सूक्त सभसँ ज्ञात होइत अछि जे रुद्रकेँ अग्निसँ अधिक सम्बन्ध छनि। कारण, अग्निकेँ अनेक ठाम रुद्र कहल गेल छनि। रुद्रकेँ एक ठाम मेधापतिक उपाधि देल गेल छनि।[६] एहिसँ रुद्र आ' अग्निमे तादात्म्य बुझना जाइत अछि।

अथर्ववेद मे 'तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये' मन्त्र सेहो एहि दिश संकेत करैत अछि। शतपथब्राह्मण (३-१-३)क प्रमाण सर्वथा स्पष्ट अछि। शुक्लयजुर्वेद (३९-८)मे अग्नि, अशनि, पशुपति, भव, शर्व, ईशान, महादेव एवं उग्र ई सभ एके देवताक पृथक्-पृथक् नाम कहल गेल अछि।

५ डॉ० सूर्यकान्त, वैदिक देवशास्त्र, पृ० १८९।
६ ऋग्वेद, २-१-६, ३-२-५।

जनिकापर जनसाधारणक आस्था छलैक। ऋग्वेदमे ई बात एतेक स्पष्ट नहि अछि।

वैदिक साहित्यक अवलोकनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे रुद्र एक प्रमुख देवताक रूपमे आसीन भेलाह आ' हुनक उपासनाक प्रचार-प्रसार सेहो क्रमशः भेल। ओकर बाद आरण्यक आ' उपनिषद्मे रुद्रक कोनो विशेष चर्चा नहि अछि।

क्रमशः हुनका सामान्य रूपसँ ईश, महेश्वर, शिव आ ईशान कहल गेलनि।[११] एकर अतिरिक्त श्वेताश्वतर उपनिषद्क किछु स्थलमे शिवक प्रकृति — शक्तिक कल्पना शिवक आध्यात्मपुरुषक संग विकसित भेल छनि।

भक्तिवादक प्रचार उपनिषदकालमे भ' गेल छल मुदा ओकर पूर्ण प्रचार बादमे भेल। प्राचीन उपनिषद् सभमे एकमात्र श्वेताश्वतर उपनिषद् एहन अछि, जाहिसँ रुद्रक उपासनाक किछु ज्ञान होइत अछि।

तत्पश्चात् श्रौतसूत्रमे सेहो ब्राह्मणग्रन्थ-शदृश रुद्रक पूजाक स्वरूप देखना जाइछ। एहूमे हुनका रुद्र, भव, शर्व आदि अनेक नाम तथा महादेव, पशुपति, भूपति आदि अनेक उपाधिक उल्लेख भेल अछि।[१२] मनुष्य आ' पशुक रक्षाक हेतु रुद्रक उपासनाक विधान कयल गेल अछि।

रुद्रक उपासनाक पद्धति धर्मसूत्रमे सेहो भेटैत अछि। मुदा एहि सूत्रक उपासनाक विधि श्रौत-सूत्र सभक सदृशे अछि। एहूमे रुद्रक अनेक नामक चर्चा अछि। साधारण रूपसँ वृक्ष, चतुष्पथ (चौबट्टी), पुण्यतीर्थ आ' श्मशान आदिमे लोकक अनिष्टक निवारणार्थ हुनक आराधनाक विधान अछि।[१३]

सूत्र-कालमे जन-साधारणक धार्मिक आचार-विचार सभक विषयमे सभसँ अधिक जानकारी गृह्यसूत्रसँ प्राप्त होइत अछि। रुद्रक उपासनाक विषयमे गृह्यसूत्रमे बहुतो मूल्यवान् सामग्री भेटैत अछि। एहिसँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे एक दिस रुद्र दार्शनिकक परब्रह्मक पद प्राप्त कयने छलाह तँ दोसर दिस हुनक उपासनाक सरल विश्वासक संग सेहो घनिष्ठ सम्बन्ध छल। एहि तरहेँ रुद्रक प्राचीन रूपक उपासना होइत रहल।

गृह्यसूत्रमे सेहो रुद्रक प्राचीन वैदिक उपाधि सभक उल्लेख भेल अछि।[१४] यद्यपि हुनक नव नाम 'शिव' आ' 'शंकर' अत्यधिक प्रचलित भ' रहल छल।[१५]

---

११ श्वेताश्वतर उपनिषद्, ३-११; ४-१०; ४-११; ५-१४।
१२ शांखायनश्रौतसूत्र, ३-२०-१४; ४-२०-१।
१३ मानव गृह्यसूत्र, २-१३; ९-१४।
१४ आश्वलायन गृह्यसूत्र, ४-१०। १५ ऐज़न, २, १, २।

४-१००) मे रुद्र आ' हुनक उपाधि 'भव', 'शर्व' आदिक उल्लेख अछि। एहि ग्रन्थक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे पाणिनिकालीन भारतमे विष्णु आ' शिवक उपासना होइत छल। कौटिल्यक अर्थशास्त्रसँ पता चलैत अछि जे दुर्गक भीतरमे शिव आ' अन्य देवता सभक मन्दिर रहैत छल।

एकर बाद रामायण आ' महाभारतमे शैव धर्मक प्रचुर सामग्री उपलब्ध होइत अछि। सूत्रग्रन्थादिसँ विशेष रूपमे शिवक स्वरूप रामायणमे दृष्टिगत होइत अछि। महादेव, महेश्वर, शंकर, त्र्यम्बक नामक उल्लेख पहिनेसँ अधिक रामायणमे देखल जाइत अछि। ओहि समयमे रुद्रक सौम्य रूप 'शिव'क प्रचलन भ' गेल छल आ' शिवकेँ कल्याणकारी देवताक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे ओ वर देबयवला, आशुतोष आ' दयानिधि छथि।

रामायणमे शिवकेँ सर्वश्रेष्ठ देवता कहल गेल छनि। ओ देवता सभमे सर्वोच्च आ' सर्वोत्तम तथा देवता सभक देव अर्थात् महादेव कहल गेल छथि। एकर अतिरिक्त कहल गेल अछि जे प्रत्येक महान् संकटमे देवतागण सहायताक हेतु हुनके समीप जाइत छलाह। एकबेरि विष्णु सेहो अन्य देवगणक संग हुनका लग गेल छलाह।[१९] अमरलोकक लोक सेहो हुनक पूजा करैत छलाह। रामायणमे एक ठाम शिवकेँ जगतक सृष्टि आ' अन्त करयवला, सभ लोकक आधार आ' परम गुरु सेहो कहल गेल छनि।

रामायणमे शिवसँ सम्वद्ध अनेक कथा अछि, जाहिमे शिवोपासनाक प्रमुख रूप सभक वर्णन कयल गेल अछि। एहिसँ बुझना जाइछ जे ओहि समयमे शिवक दू गोट उपाधि—'हर' आ' 'वृषध्वज' प्रशस्त भ' गेल छल।

शिवक योगाभ्यासक संग जे सम्बन्ध उपनिषद्मे दृष्टिगोचर होइछ, से रामायणकालमे अत्यधिक स्पष्ट भ' जाइत अछि। शिवक उपासना आ' हुनका प्रसन्न करवाक एक मार्ग तपश्चर्या अछि। भगीरथ सेहो हुनका एहि विधिसँ तुष्ट कयने छलाह। स्वयं देवतालोकनिकेँ सेहो वरदान पयबाक हेतु तप करय पड़ैत छनि।

एहि युगमे भगवद्दर्शन आ' मोक्ष-प्राप्तिक लेल तपस्याकेँ अत्यन्त उपयुक्त बूझल जाइत छल। एतबे नहि, योगाभ्यासपर सेहो बल देल गेल छल। एक स्थलपर हिमालयमे योगाभ्यास करैत भगवान् शिवक सेहो उल्लेख कयल गेल अछि।

---

१९ रामायण, बालकांड, ४५-२२-२६; ६६-११-१२।

कल्पना सतत मानव जातिक कल्याणकारी आ' भक्तानुकम्पी देवताक रूपमे कयल गेल छनि। जहिना प्राचीनकाल आ' रामायण आदिक कालमे ऋषिलोकनि अपन भक्तिक बल पर शिवसँ अनेक वरदान पओने छलाह, तहिना महाभारत-काल मे सेहो अर्जुन एवं उपमन्यु आदि वर पओने छलाह।

एहि युगमे एक विशेष उपासनाक प्रचलन भेल छल, जाहिसँ शिव प्रसन्न होइत छलाह। ई 'पाशुपत व्रत' छल, जकर उल्लेख महाभारतक कर्णपर्व (२५-२४) मे कयल गेल अछि। व्रत कयनिहारक परिस्थिति आ' ओकर उद्देश्यक अनुसार एहि व्रतक अवधि १२ दिनसँ १२ वर्ष धरि होइत छल। मुदा एहि व्रतक विस्तृत वर्णन नहि कयल गेल अछि।

महाभारतमे शिवक रुद्र रूप सेहो भेटैत अछि। कर्णपर्वमे हुनका 'ब्रह्मद्विट्-संहातिन्' अर्थात् देवता आ' ब्राह्मण सभक शत्रुक संहार करयवला कहल गेल छनि। 'पिनाक' नामक धनुष आ' 'शूल' नामक वज्र हुनक प्रिय अस्त्र छनि। एही कारणसँ हुनका 'प्रवरायुधयोमी' सेहो कहल जाइत छनि। हुनकर शक्तिक केओ सामना नहि कय सकैत छनि। हुनकर जे विरोध करैत छनि ओकरा हेतु तँ ओ साक्षात् काल छथि। एहि रूपमे ओ कुपित, भयावह आ' महासंहारकर्त्ता छथि। हुनक सम्पूर्ण आकृति भयंकर छनि। एहि रूपमे हुनका 'कृष्णवस्त्रधारी' मानल गेल छनि। मुदा साधारणतया ओ श्वेतवस्त्रधारिये छलाह।

एहि कालमे शिवक दुनू रूप—सौम्य आ' भयंकर देखल जाइत अछि। एक स्थल पर स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे शिवक ई दूटा भिन्न रूप छनि। मुदा जे केओ शिवक शरणागत होइत छथि, तनिक सभ पाप ओ हरण कय लैत छथिन।

रामायण-सदृश महाभारतोमे शिव-सम्बन्धी अनेक कथा अछि। महाभारतमे किछु एहनो कथा भेटैत अछि, जकर रामायणमे बीज मात्र भेटैत अछि। एहिमे कार्त्तिकेयक जन्मक कथा सर्वप्रमुख अछि। महाभारतमे एकर विस्तृत उल्लेख कयल गेल अछि। एहिसँ शिव तथा स्कन्दक परस्पर सम्बन्धपर सेहो बहुत प्रकाश पड़ैत अछि। एकर संगहि संग, देवकथा सभक क्रमिक विकास कोन प्रकारसँ होइत अछि, एकरो कथा बड़ रोचक अछि। एहि कथाक सभसँ प्राचीन रूप वनपर्वमे भेटैत अछि।

भगवान् शिवक उपासनाक जे विधि रामायणमे दृष्टिगोचर होइत अछि ओहिसँ किछु अधिक महाभारत कालमे उपलब्ध होइत अछि। साधारण रूपसँ

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रमाणं शब्द उच्यते ।
तत्रापि वैदिकः शब्दः प्रमाणं परमं मतः ॥
वेदेन गीयते यस्तु पुरुषः स परात्परः ।
मूर्तोऽपरः स विज्ञेयो ह्यमूर्तः पर उच्यते ॥
योऽमूर्तः स परो ज्ञेयो ह्यपरो मूर्त उच्यते ।
गुणाभिव्याप्तिभेदेन मूर्तोऽसौ त्रिविधो भवेत् ॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवश्चेति एक एव त्रिधोच्यते ।
त्रयाणामपि देवानां वेद्यमेकं परं हि तत् ॥
एकस्य बहुधा व्याप्तिर्गुणकर्मविभेदतः ।
लोकानामुपकारार्थमाकृतित्रितयं भवेत् ॥
यस्तत्वं वेत्ति परमं स च विद्वान् न चेतरः ।
तत्र यो भेदमाचष्टे लिङ्गभेदी स उच्यते ॥[२५]

अर्थात्, धर्मार्थकाममोक्षक निश्चय करयबला (प्रमाण) शब्द अछि। ओहू मे वेदक शब्द प्रमाण अछि। वेद जनिक वर्णन करैत अछि, से पुरुष[२६] छथि जे कारणोक कारण छथि। परक नाम अमृत अछि आ' अपरकें मृत बुझबाक चाही। जे निराकार छथि से पर छथि आ' साकारक नाम मूर्त्त। गुणक व्याप्तिक भेदसँ ई साकार तीन प्रकारक होइत छथि। एकेकें तीन प्रकारसँ कहल जाइत छनि—ब्रह्मा, विष्णु आ' महेश। तीन देवक सेहो वेद्य वस्तु ओएह अछि, जकरा 'तत्' आ' 'पर' कहल जाइछ। गुण आ' कर्मक भेदसँ एके नाना रूपसँ विस्तृत छथि। लोक सभक उपकारक हेतु आकृति सभ तीन प्रकारक भय गेल अछि। जे एहि परम तत्त्व (सत्य)कें जनैत छथि, सैह विद्वान छथि—दोसर नहि। एहि मे जे भेद मानैत छथि, तनिक नाम लिङ्गभेदी होइछ।

एका तनुः स्मृता वेदे धर्मशास्त्रे पुरातने ।
सांख्ययोगपरैर्वीरैः पृथक्त्वैकत्वदर्शिभिः ॥
इदं परमिदं नेति ब्रुवन्तोऽभिन्नदर्शनाः ।
ब्रह्माणं कारणं केचित् केचित् प्राहुः प्रजापतिम् ॥
केचिच्छिवं परत्वेन प्राहुर्विष्णुं तथाऽपरे ।
अविज्ञानेन संसक्ताः सक्ता रत्यादिचेतसा ॥

---

२५ ब्रह्मपुराण, १३०, ७-१२।
२६ भारतीय प्रतीकविद्या, पृ० ९४, पादटिप्पणी, १, पुरुषक अर्थ अछि परमात्मा। एहि शब्दक अनेक प्रकारसँ अर्थ कयल गेल अछि।

बिद्यापति सेहो कूर्मपुराणक वचनसँ एकर समर्थन करैत छथि।

ौरपुराणमे शिवक प्रशंसा करैत कहैत छथि :—

मत्स्वामिनोऽवगणना नहि शक्यते मे
कृत्वापि पूज्यतमर्मूत्तिमिमं गिरीशम्।
नो मन्यते तदिह वज्रसमं ममैव॥
अस्ति सर्वं वरारोहे मयि तत्तथ्यमेव हि॥
श्रीमन्महेश्वराल्लब्धं मदीयं नहि किंचन।
वेदवेदांगवेत्तृणां सहस्राण्यग्रजन्मनाम्॥
हननान्मुच्यते जीवो न तु श्रीशिवहेलनात्।
स्वामी मदीयः श्रीकंठस्तस्य दासोऽस्मि सर्वदा॥

प्रायः सभ पुराणमे शिव आ विष्णुक तादात्म्य पर जोर देल गेल अछि। शिवपुराणक कथन अछि जे शिव तथा विष्णुमे कोनो प्रकारक पार्थक्य नहि अछि। वायुपुराण जे शैव पक्षक अछि ओहूमे शिवकें विष्णुसँ अभिन्न मानल गेल अछि।[२८] एतबे नहि, एहि पुराणक किछु स्थलपर शिवकें विष्णुक नाम देल गेल अछि यथा नारायण।[२९]

सौरपुराणमे सेहो कहल गेल अछि जे शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि अछि—

नावाभ्यां विद्यते भेदो मच्छक्तिस्त्वं न संशयः।

पुनश्च :—

सूत भद्रं समाचक्ष्व सेवको यस्य माधवः।
श्रीमहेशस्य विष्णोश्च तुल्यत्वं ब्रूवते कथम्।
ब्रूवन्ति तुल्यतां केचित् वैपरीत्येन केचन।
एकत्वं केचिदीशेन केशवस्य वदन्ति हि॥
अत्र सिद्धान्तमर्यादां ब्रूहि तत्त्वेन सूतज॥

पुनश्च :—

अद्वैतं शिवमीशानमज्ञात्वा नैव मुच्यते॥[३०]

---

२८ वायुपुराण, २५.२१; २४: २०, २३ :—
प्रकाशं चाप्रकाशं च जंगमं स्थावरं च यत्।
विश्वरूपमिदं सर्वं रुद्रनारायणात्मकम्॥
आत्मानं प्रकृतिं विद्धि मां विद्धि पुरुषं शिवम्।
भवानर्धशरीरं मे त्वहं तव तथैव च॥

२९ वायुपुराण, ५४. ७७।

३० सौरपुराण, ४०.१, २, ३, ९।

सेहो करैत छथि। सर्वप्रथम ओ हरिवंशक अनुसार हरि आ हरक अद्वैत रूपक वर्णन करैत छथि।

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः॥
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं शिवः।[३५]

अर्थात् शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि छनि। एके दू भागमे विभक्त भ' नित्य रूपसँ संसारमे विचरण करैत छथि। शंकरक विना विष्णु नहि आ ने केशवक विना शिव। एहि हेतु रुद्र आ विष्णु एकत्वके प्राप्त कयलनि।

एहि मतक समर्थनमे दोसर प्रमाणक रूपमे निबन्धकार विद्यापति लिंगपुराणक उद्धरण दैत कहैत छथि, जे विष्णु छथि से स्वयं रुद्र, जे रुद्र छथि सैह जनार्दन। दुनूकेँ एक मानि क' जे पूजा करैत छथि हुनका परम गति भेटैत छनि—

यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्दनः।
इति मत्वा यजेद् देवं स याति परमां गतिम्॥

हयशीर्षपंचरात्रमे सेहो एहि बातपर जोर देल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे जे व्यक्ति दुनूमे भेद नहि बुझैत छथि हुनका अवश्ये मुक्ति भेटैत छनि। जे बुद्धिमान दुनूमे भेद नहि मानैत छथि से शिवक श्रेष्ठ भक्तमे गनल जाइत छथि—

यस्त्वभेदेन तौ पश्येत् तस्य मुक्तिर्न संशयः॥

मुदा जे विष्णु आ शिवमे भेद मानैत छथि से मानव मोहसँ ग्रसित भ' नरक जाइत छथि।

कवि विद्यापतिक अन्य अन्य रचना यथा विभागसार, गंगावाक्यावली आ पदावलीसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे शिव आ विष्णु एक छथि। उदाहरण स्वरूप एहि सम्बन्धक दू गोट पद द्रष्टव्य अछि:—

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पितवसन खनहि बघछला॥
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन संकर खन देव मुरारि॥

---

३५ शैवसर्वस्वसार, हस्तलेख, पात सं० २।

पुराणकाल धरि लिंग शिवक सर्वमान्य आ' सम्मानित प्रतीक बनि गेल छल तथा ओकर उपासना दीर्घकालसँ स्थापित भ' गेल छल। एहि युगमे एहि लिंगके देखि ककरो मनमे ई विचार नहि अबैत अछि जे 'लिंगमूर्त्ति' प्रारम्भमे जननेन्द्रियक प्रतीक छल। एकर पूजा लोक ओहिना करैत छल जेना शिवक मानवाकार मूर्त्तिक।

शिवलिंगक उत्पत्तिक सम्बन्धमे एक गोट कथा प्रचलित अछि, जकर मूल रूप सभ पुराणमे एके रंग अछि। मुदा विस्तृत रूपमे किछु विभिन्नता अवश्य अछि। एकर कथानक एहि रूपक अछि :—

एक खेप ब्रह्मा आ' विष्णुमे ई विवाद भ' गेलनि जे के श्रेष्ठ छथि। ओहि समयमे भगवान शिव एक लिंगाकार अग्निस्तम्भक रूपमे ओहि दुनूक समक्ष प्रकट भलाह आ' हुनका लोकनिके ओहि स्तम्भक ओर-छोरक पता लगयबाक हेतु कहलथिन। विष्णु नीचा दिस आ' ब्रह्मा उपर दिस बढ़लाह। मुदा केओ ओहि स्तम्भक पता नहि लगा सकलाह। अन्तमे हारि क' दुनू गोटा लौटि गेलाह। तखन ओ सभ भगवान शिवेके सर्वश्रेष्ठ मानलनि आ' लिंगरूपक यथोचित सम्मान कयलनि। एहि कथाक जे रूप लिंगपुराणमे देल गेल अछि, ओहिमे शिवलिंगक उत्कर्ष अपन चरम सीमापर पहुँचैत अछि।

अतएव निबन्धकार विद्यापति सेहो शवैसर्वस्वसारमे लिंगपुराणेक वचन उद्धृत करैत छथि। एतय स्वयं कृष्ण कहैत छथिन जे जे महादेवक प्रारम्भिक तेज अछि, सैह प्रथम लिंग कहल गेल अछि। कल्पान्तमे सभ देवता ओहिमे लीन भय जाइत छथि। हुनकेसँ ब्रह्मासँ लय चराचर सहित सभ उत्पन्न होइत छनि।[३९] एहि मतक समर्थनमे विद्यापति भविष्यपुराणक वचनके उद्धृत करैत कहैत छथि जे आकाश ओकर लिंग अछि, पृथ्वी ओकर पीठिका। ओ सभ भूतक निवास स्थान अछि। ओहिमे सभके लीन होयबाक कारणे ओ लिंग कहल जाइत अछि।

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवानां लयनाल्लिगमुच्यते ॥[४०]

स्कन्दपुराणमे सेहो 'लयनाल्लिङ्गमुच्यते' कहल गेल अछि। एही लिंगमे सम्पूर्ण विश्वक लय भ' जाइत अछि आ' पुनः सृष्टिक आदिमे सम्पूर्ण संसार लिंगेसँ उत्पन्न होइत अछि। लय होयब आ प्रलय होयब एके बात होइत अछि।

---

३९ शैवसर्वस्वसार, पात न० २६९।
४० शैवसर्वस्वसार, पात न० २।

पुराणकाल धरि लिंग शिवक सर्वमान्य आ' सम्मानित प्रतीक बनि गेल छल तथा ओकर उपासना दीर्घकालसँ स्थापित भ' गेल छल। एहि युगमे एहि लिंगकेँ देखि ककरो मनमे ई विचार नहि अबैत अछि जे 'लिंगमूर्त्ति' प्रारम्भमे जननेन्द्रियक प्रतीक छल। एकर पूजा लोक ओहिना करैत छल जेना शिवक मानवाकार मूर्त्तिक।

शिवलिंगक उत्पत्तिक सम्बन्धमे एक गोट कथा प्रचलित अछि, जकर मूल रूप सभ पुराणमे एके रंग अछि। मुदा विस्तृत रूपमे किछु विभिन्नता अवश्य अछि। एकर कथानक एहि रूपक अछि :—

एक खेप ब्रह्मा आ' विष्णुमे ई विवाद भ' गेलनि जे के श्रेष्ठ छथि। ओहि समयमे भगवान शिव एक लिंगाकार अग्निस्तम्भक रूपमे ओहि दुनूक समक्ष प्रकट भलाह आ' हुनका लोकनिकेँ ओहि स्तम्भक ओर-छोरक पता लगयबाक हेतु कहलथिन। विष्णु नीचा दिस आ' ब्रह्मा उपर दिस बढ़लाह। मुदा केओ ओहि स्तम्भक पता नहि लगा सकलाह। अन्तमे हारि क' दुनू गोटा लौटि गेलाह। तखन ओ सभ भगवान शिवेकेँ सर्वश्रेष्ठ मानलनि आ' लिंगरूपक यथोचित सम्मान कयलनि। एहि कथाक जे रूप लिंगपुराणमे देल गेल अछि, ओहिमे शिवलिंगक उत्कर्ष अपन चरम सीमापर पहुँचैत अछि।

अतएव निबन्धकार विद्यापति सेहो शैवसर्वस्वसारमे लिंगपुराणेक वचन उद्धृत करैत छथि। एतय स्वयं कृष्ण कहैत छथिन जे जे महादेवक प्रारम्भिक तेज अछि, सैह प्रथम लिंग कहल गेल अछि। कल्पान्तमे सभ देवता ओहिमे लीन भय जाइत छथि। हुनकेसँ ब्रह्मसँ लय चराचर सहित सभ उत्पन्न होइत छनि।[३९] एहि मतक समर्थनमे विद्यापति भविष्यपुराणक वचनकेँ उद्धृत करैत कहैत छथि जे आकाश ओकर लिंग अछि, पृथ्वी ओकर पीठिका। ओ सभ भूतक निवास स्थान अछि। ओहिमे सभकेँ लीन होयबाक कारणेँ ओ लिंग कहल जाइत अछि।

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवानां लयनाल्लिंगमुच्यते॥[४०]

स्कन्दपुराणमे सेहो 'लयनाल्लिङ्गमुच्यते' कहल गेल अछि। एही लिंगमे सम्पूर्ण विश्वक लय भ' जाइत अछि आ' पुनः सृष्टिक आदिमे सम्पूर्ण संसार लिंगेसँ उत्पन्न होइत अछि। लय होयब आ प्रलय होयब एके बात होइत अछि।

३९ शैवसर्वस्वसार, पात न० २६९।
४० शैवसर्वस्वसार, पात न० २।

फल प्राप्त करैत अछि। तेसर दिस जे अपराह्नमे शिवलिंग के पूजैत अछि, से दस हजार गो-दानक फल प्राप्त करैत अछि। चारिम दिस जे ब्रह्मचारी पवित्र भय तीनू सन्ध्यामे शिवके पुजैत अछि से अपन सात पीढ़ीक उद्धार कय शिवलोकमे श्रेष्ठता प्राप्त करैत अछि।

निबन्धकार विद्यापति प्रस्तुत ग्रन्थक प्रारम्भ शिवक पंचाक्षरी मन्त्र सँ करैत छथि। ओ कहैत छथि 'ओँ नमः शिवाय' ई पंचाक्षरी मन्त्र अपन उपासक के निश्चित रूपसँ मुक्ति प्रदान करयबला होइछ। अतएव मुक्तिक आकांक्षा राखयबला सभ ऋषि-मुनि द्वारा एकर सेवन कयल जाइत अछि। एहि मन्त्रक माहात्म्य चतुमुर्ख ब्रह्मा द्वारा सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। समस्त श्रुति, उपनिषद तथा धर्मशास्त्रक सारतत्त्व एहिमे सन्निहित अछि। सत्-चित् आ आनन्दक क्षणवला भगवान शिव स्वयं एहिमे रमण करैत रहैत छथि। एहि मन्त्रराजक आश्रय लय पँघ-पँघ ऋषि, मुनि आ' महात्मा लोकनि परम ब्रह्म के प्राप्त कयने छलाह। भगवान शिवके एहि प्रकार सेबलासँ जीव ब्रह्मैक्य प्राप्त कय लैत अछि।

भव-बन्धनमें ग्रसित प्राणी सभक उद्धारक हेतु भगवान शिव स्वयं एहि मन्त्रके कहने छलाह। ई मन्त्र जाहि मानवक हृदयमे बसि जाइत अछि, ओकरा हेतु बहुत दोसर जप-तप, कष्ट सहनसँ कोन प्रयोजन छैक? ई देहधारी तखनहि धरि अनेक दुखके भोगैत एहि दारुण जगतमे भ्रमण करैत रहैत अछि, जखन धरि एहि महामन्त्रक उच्चारण नहि कयने रहैत अछि। ई पंचाक्षरी मन्त्र अनेक मन्त्रराजक सेहो राजा अछि। ई सम्पूर्ण वेदान्तमे शिरोमणि अछि। ई सम्पूर्ण भांडार अछि। ई मोक्ष-मार्गक दीप अछि आ अविद्यासागरक बड़वानल अछि। ई महान पातकी सभक पाप नष्ट करबाक हेतु दावाग्निक सदृश अछि। मुक्तिक इच्छा राखयबला व्यक्ति—खाहे ओ शूद्र, स्त्री अथवा निम्न कोटिक जाति किएक ने हो—एकरा बिना बाधाक धारण कय सकैत अछि। एहि मन्त्रराजक सभसँ पँघ विशेषता ई अछि जे एहि मे ने तँ कोनो दीक्षा अपेक्षित होइत अछि, ने कोनो होमक आवश्यकता होइत अछि आ ने कोनो संस्कार तर्पण करय पड़ैत अछि। एहि मन्त्रक कोनो विशेष काल नहि होइत अछि आ ने कोनो विशेष उपदेश होइत अछि। ई मन्त्र सदिखन शुद्धि रहैत अछि।[४१]

---

४१ स्कन्दपुराण, भाग १, सम्पादक श्री राम, प्रथम संस्करण, १९७०, भूमिका, पृ० २७।

विद्यापति विभिन्न पुराणादिक आधार पर विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिंग सभक उल्लेख शैवसर्वस्वसारमे कयने छथि। एहि लिंगमेसँ वेसी लिंगक पूजा विभिन्न देवता सभक द्वारा कयल गेल छनि। यथा :

इन्द्रनीलमयलिंग—भगवान विष्णु प्रत्येक दिन इन्द्रनीलमय लिंगक पूजा करैत छथि। एहि हेतु ओ अद्भुत तथा सनातन विष्णुत्वकें प्राप्त कयलनि अछि।

मणिमयलिंग—देवदेवेन्द्र इन्द्र प्रतिदिन उत्तम मणिमय लिंगक भक्तिपूर्वक पूजन करैत छथि। एहि कारणसँ ओ शक्रत्वकें प्राप्त कयलनि।

हेमलिंग—स्वर्णमय सुन्दर लिंगक पूजा नित्यहि कुवेर करैत छथि। एहिसँ ओ कुवेरत्व प्राप्त कयलनि।

चाँदीक लिंग—महात्मा विश्वदेव विधिवत् भक्तिपूर्वक सुन्दर चानीक लिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ विश्वत्वकें प्राप्त कयलनि।

प्रवाललिंग - पन्नगराज प्रवालनिर्मित शिवलिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ साँपक मध्य भोगसँ समृद्ध परम पदकें प्राप्त कयलनि।

वज्रलोहमयलिंग—मायसभ सदिखन वज्रलोहमय लिङ्गकें पुजैत छथि, जाहिसँ ओ सभ मातृत्व पदकें प्राप्त कय परम पदकें प्राप्त करैत छथि।

एहि रूपसँ आनो आन लिङ्गक पूजाक उल्लेख कयल गेल अछि।

विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिङ्गक पूजा कयनिहारकें विभिन्न प्रकारक फल होइत छनि। यथा—एकदिस गुड़सँ निर्मित लिङ्गक पूजनसँ पुरुष श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त कय अनेक राज्यक अधिकारी होइत अछि तँ दोसर दिस स्त्री हजारो सौतिन सभक मध्य अतुलनीय सौभाग्य प्राप्त कय सर्वश्रेष्ठ (स्त्री) बनि रहैत छथि आ पुत्र-पौत्रक संग मात्र सुख प्राप्त करैत छथि।

मक्खनसँ निर्मित लिंगक पूजा कयनिहार छओ मासमे अपन अभीष्ट फल प्राप्त करैत अछि आ शिवलोकमे वास करैत अछि। ठीक ओहिना जे नोनसँ निर्मित लिंगकें पुजैत अछि, से श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त करैत अछि।

निवन्धकार विद्यापतिक पुराणादिक आधार पर देल गेल प्रमाणसँ ज्ञात होइत अछि जे लिंगक संख्यापर, पूजाक समयपर आ' पूजाक अवधिपर फलक मात्रा आ' विशेषता निर्भर करैत अछि।

शिवधर्मक अनुसार एकदिस प्रातःकालमे भक्तिपूर्वक जे एको खेप लिंगकें पूजैत अछि, से एक सय कपिला गाय-दानक फल प्राप्त करैत अछि। दोसर दिस मध्याह्नमे जे शिवलिंगक पूजा करैत अछि, से सम्पूर्ण पृथ्वी-दानक

प्रस्तुत शैवसर्वस्वसार नामक ग्रन्थक रचना निवन्धकार विद्यापति ओइनवारवंशीय राजा पद्मसिंहक पत्नी विश्वासदेवीक आदेशसँ कयने छलाह। एहि ग्रन्थक प्रारम्भमे ओइनवारवंशीय राजा भवसिंह, देवसिंह, शिवसिंह, पद्मसिंह आ रानी विश्वासदेवीक यशोगान कयल गेल छनि।

ई ग्रन्थ पौराणिक आधारपर लिखल गेल शिवमाहात्म्यसम्बन्धी निबन्ध अछि। कारण, एहिमे विभिन्न पुराण, यथा लिंगपुराण, कूर्मपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, कालिकापुराण, हरिवंशपुराण आदिक प्रधानता अछि। ओना, मध्य-मध्यमे शिवमाहात्म्य, शिवधर्मोत्तर, शिवमाहात्म्य, दानधर्म, शिवधर्म, आदिक वचन सेहो उद्धृत कयल गेल अछि।

एहि ग्रन्थमे विभिन्न पुराणक आधार पर शिवक माहात्म्य, पूजा, अर्चा, व्रत, दानधर्म आ विभिन्न प्रकारक पूजा-अर्चाक फलक वर्णनक संगहि संग प्रत्येकक हेतु निवन्धकार विद्यापति द्वारा संकल्पवाक्य सेहो देल गेल अछि। एकर अतिरिक्त किछु कठिन शब्दसभक अर्थ सेहो देल गेल अछि।

प्रस्तुत हस्तलेख हमरा संस्कृत विश्वविद्यालयक उप पुस्तकालयाध्यक्ष पं० जीवानन्द ठाकुर जीक सौजन्यसँ प्राप्त भेल छल। ओतय एक गोट मिथिलाक्षरमे लिखल तालपत्र सेहो अछि। ओ तालपत्र खंडित अछि।

प्रस्तुत हस्तलेख देवनागरी लिपिमे लिखल अछि। एकरो अन्तिम अंश खंडित अछि। मुदा ओकर पूर्ति भय गेल अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थक सम्पादनक प्रसंगमे हमरा पता लागल जे एकर एक हस्तलेख नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सेहो अछि। अतएव हम ओकरो छान-बीनमे लागि गेलहुँ। अन्ततोगत्वा पता लागल जे ओहि हस्तलेखक प्रतिलिपि डॉ॰ जयमन्त मिश्र (प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) क ओतय छनि। अतएव हम ओतय जाय नेपालक हस्तलेख सँ प्रस्तुत हस्तलेखके मिला कय देखलहुँ तँ ओ हस्तलेख अधिक अशुद्ध बुझि पड़ल। तथापि दुनूक मध्य जे साधारण अन्तर देखल गेल से सभ हम प्रस्तुत हस्तलेखमे अंकित कयलहुँ।

हम ऋणी छियनि श्रद्धेय प्रो० डॉ० जयमन्त मिश्र आ पं० जीवानन्द ठाकुरक जनिका लोकनिक सहायतासँ दुनू अप्रकाशित हस्तलेख प्राप्त भेल।

हम मैथिली अकादमीक अध्यक्ष पं० श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छियनि; किएक तँ हिनके प्रयासक फलस्वरूप अकादमीक स्थापना-वर्षहिक स्वीकृत प्रतिलिपि आइ छपि गेल अछि। हम आभारी

शैवसर्वस्वसारः

ओं नमः शिवाय[1] ॥

सूर्य्याचन्द्रमसौ दृशौ तदुपरि ज्योतिर्मयं दर्शनं
बिभ्राणो गणयन्निव स्व[2]मनघं विश्वैकबीजं वपुः ।
धत्ते यः शिरसा सुधाकरकलामेणाङ्कमुद्रामयीं
देयादभ्युदयं त्रिकालविदयं देवो भवानीपतिः ॥१॥

गङ्गोत्तुङ्गतर[3]ङ्गसङ्गिमलसत्कीर्तिच्छटाक्षालित-
क्षोणिः क्ष्मातलशर्वपर्वतवरो वीरव्रता[4]लङ्कृतः ।
भूपालावलिमौलिमण्ड[5]नमणिप्रत्यर्चिताङ्घ्रिद्वयाऽ-
म्भोजः श्रीभवसिंहभूपतिरभूत् सर्वार्थिकल्पद्रुमः ॥२॥

दृप्यद्दुर्वारवैरिद्विपकुलदलनाकुण्ठकण्ठीरवश्री-
रासीमाशेषभूभृन्मणिमुकुटतटज्योतिरुद्द्योतिताङ्घ्रिः ।
तत्सूनुः पुण्यकीर्तिर्नयविनयदयादानदाक्षिण्यदक्षो
वृक्षः सर्वाश्रितानां मिथिलभुवि नृपो देवसिंहो बभूव ॥३॥

---

१ विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक हस्तलेख, नेपालसँ प्राप्त पांडुलिपिक प्रतिलिपि डॉ० जयमन्त मिश्र (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) सँ प्राप्त नेपाल पांडुलिपि, श्री शिवाय नमः ।

२ मूले, समनघं, विद्यापति-वाङ्मय, सम्पादक, डॉ० मुनीश्वर झा, निबन्धकार, पं० जीवानन्द ठाकुर, पृ० १२६, स्वमनघं ।

३ पुरुषपरीक्षा, सम्पादक प्रो० रमानाथ झा, पृ० ३७६, पाद-टिप्पणी, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गितामललसत्कीर्त्तिः; विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२६, गंगोत्तुङ्गतरङ्गिसङ्गिविलसत्, पाठान्तरम्, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गसङ्गिमलसत्; नेपाल पांडुलिपि, सङ्गम-लसत् ।

४ नेपाल पांडुलिपि, वीरप्रभालङ्कृतः ।

५ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७६, मण्डल ।

जनिकापर जनसाधारणक आस्था छलैक। ऋग्वेदमे ई बात एतेक स्पष्ट नहि अछि।

वैदिक साहित्यक अवलोकनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे रुद्र एक प्रमुख देवताक रूपमे आसीन भेलाह आ' हुनक उपासनाक प्रचार-प्रसार सेहो क्रमशः भेल। ओकर बाद आरण्यक आ' उपनिषद्मे रुद्रक कोनो विशेष चर्चा नहि अछि।

क्रमशः हुनका सामान्य रूपसँ ईश, महेश्वर, शिव आ ईशान कहल गेलनि।[११] एकर अतिरिक्त श्वेताश्वतर उपनिषद्क किछु स्थलमे शिवक प्रकृति—शक्तिक कल्पना शिवक आध्यात्मपुरुषक संग विकसित भेल छनि।

भक्तिवादक प्रचार उपनिषदकालमे भ' गेल छल मुदा ओकर पूर्ण प्रचार बादमे भेल। प्राचीन उपनिषद् सभमे एकमात्र श्वेताश्वतर उपनिषद् एहन अछि, जाहिसँ रुद्रक उपासनाक किछु ज्ञान होइत अछि।

तत्पश्चात् श्रौतसूत्रमे सेहो ब्राह्मणग्रन्थ-शदृश रुद्रक पूजाक स्वरूप देखना जाइछ। एहूमे हुनका रुद्र, भव, शर्व आदि अनके नाम तथा महादेव, पशुपति, भूपति आदि अनेक उपाधिक उल्लेख भेल अछि।[१२] मनुष्य आ' पशुक रक्षाक हेतु रुद्रक उपासनाक विधान कयल गेल अछि।

रुद्रक उपासनाक पद्धति धर्मसूत्रमे सेहो भेटैत अछि। मुदा एहि सूत्रक उपासनाक विधि श्रौत-सूत्र सभक सदृशे अछि। एहूमे रुद्रक अनेक नामक चर्चा अछि। साधारण रूपसँ वृक्ष, चतुष्पथ (चौबट्टी), पुण्यतीर्थ आ' श्मशान आदिमे लोकक अनिष्टक निवारणार्थं हुनक आराधनाक विधान अछि।[१३]

सूत्र-कालमे जन-साधारणक धार्मिक आचार-विचार सभक विषयमे सभसँ अधिक जानकारी गृह्यसूत्रसँ प्राप्त होइत अछि। रुद्रक उपासनाक विषयमे गृह्यसूत्रमे बहुतो मूल्यवान् सामग्री भेटैत अछि। एहिसँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ऐक दिस रुद्र दार्शनिकक परब्रह्मक पद प्राप्त कयने छलाह तँ दोसर दिस हुनक उपासनाक सरल विश्वासक संग सेहो घनिष्ठ सम्बन्ध छल। एहि तरहेँ रुद्रक प्राचीन रूपक उपासना होइत रहल।

गृह्यसूत्रमे सेहो रुद्रक प्राचीन वैदिक उपाधि सभक उल्लेख भेल अछि।[१४] यद्यपि हुनक नव नाम 'शिव' आ' 'शंकर' अत्यधिक प्रचलित भ' रहल छल।[१५]

---

११ श्वेताश्वतर उपनिषद्, ३-११; ४-१०; ४-११; ५-१४।
१२ शांखायनश्रौतसूत्र, ३-२०-१४; ४-२०-१।
१३ मानव गृह्यसूत्र, २-१३; ९-१४।
१४ आश्वलायन गृह्यसूत्र, ४-१०। १५ ऐजन, २, १, २।

४-१००) मे रुद्र आ' हुनक उपाधि 'भव', 'शर्व' आदिक उल्लेख अछि। एहि ग्रन्थक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे पाणिनिकालीन भारतमे विष्णु आ' शिवक उपासना होइत छल। कौटिल्यक अर्थशास्त्रसँ पता चलैत अछि जे दुर्गक भीतरमे शिव आ' अन्य देवता सभक मन्दिर रहैत छल।

एकर बाद रामायण आ' महाभारतमे शैव धर्मक प्रचुर सामग्री उपलब्ध होइत अछि। सूत्रग्रन्थादिसँ विशेष रूपमे शिवक स्वरूप रामायणमे दृष्टिगत होइत अछि। महादेव, महेश्वर, शंकर, त्र्यम्बक नामक उल्लेख पहिनेसँ अधिक रामायणमे देखल जाइत अछि। ओहि समयमे रुद्रक सौम्य रूप 'शिव'क प्रचलन भ' गेल छल आ' शिवकेँ कल्याणकारी देवताक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे ओ वर देबयवला, आशुतोष आ' दयानिधि छथि।

रामायणमे शिवकेँ सर्वश्रेष्ठ देवता कहल गेल छनि। ओ देवता सभमे सर्वोच्च आ' सर्वोत्तम तथा देवता सभक देव अर्थात् महादेव कहल गेल छथि। एकर अतिरिक्त कहल गेल अछि जे प्रत्येक महान् संकटमे देवतागण सहायताक हेतु हुनके समीप जाइत छलाह। एकबेरि विष्णु सेहो अन्य देवगणक संग हुनका लग गेल छलाह।[१९] अमरलोकक लोक सेहो हुनक पूजा करैत छलाह। रामायणमे एक ठाम शिवकेँ जगतक सृष्टि आ' अन्त करयबला, सभ लोकक आधार आ' परम गुरु सेहो कहल गेल छनि।

रामायणमे शिवसँ सम्बद्ध अनेक कथा अछि, जाहिमे शिवोपासनाक प्रमुख रूप सभक वर्णन कयल गेल अछि। एहिसँ बुझना जाइछ जे ओहि समयमे शिवक दू गोट उपाधि—'हर' आ' 'वृषध्वज' प्रशस्त भ' गेल छल।

शिवक योगाभ्यासक संग जे सम्बन्ध उपनिषद्मे दृष्टिगोचर होइछ, से रामायणकालमे अत्यधिक स्पष्ट भ' जाइत अछि। शिवक उपासना आ' हुनका प्रसन्न करबाक एक मार्ग तपश्चर्या अछि। भगीरथ सेहो हुनका एहि विधिसँ तुष्ट कयने छलाह। स्वयं देवतालोकनिकेँ सेहो वरदान पयबाक हेतु तप करय पड़ैत छनि।

एहि युगमे भगवद्दर्शन आ' मोक्ष-प्राप्तिक लेल तपस्याकेँ अत्यन्त उपयुक्त बूझल जाइत छल। एतबे नहि, योगाभ्यासपर सेहो बल देल गेल छल। एक स्थलपर हिमालयमे योगाभ्यास करैत भगवान् शिवक सेहो उल्लेख कयल गेल अछि।

---

१९. रामायण, बालकांड, ४५-२२-२६; ६६-११-१२।

कल्पना सतत मानव जातिक कल्याणकारी आ' भक्तानुकम्पी देवताक रूपमे कयल गेल छनि। जहिना प्राचीनकाल आ' रामायण आदिक कालमे ऋषिलोकनि अपन भक्तिक बल पर शिवसँ अनेक वरदान पओने छलाह, तहिना महाभारत-कालमें सेहो अर्जुन एवं उपमन्यु आदि वर पओने छलाह।

एहि युगमे एक विशेष उपासनाक प्रचलन भेल छल, जाहिसँ शिव प्रसन्न होइत छलाह। ई 'पाशुपत व्रत' छल, जकर उल्लेख महाभारतक कर्णपर्व (२५-२४) मे कयल गेल अछि। व्रत कयनिहारक परिस्थिति आ' ओकर उद्देश्यक अनुसार एहि व्रतक अवधि १२ दिनसँ १२ वर्ष धरि होइत छल। मुदा एहि व्रतक विस्तृत वर्णन नहि कयल गेल अछि।

महाभारतमे शिवक रुद्र रूप सेहो भेटैत अछि। कर्णपर्वमे हुनका 'ब्रह्मद्विट्-संहातिन्' अर्थात् देवता आ' ब्राह्मण सभक शत्रुक संहार करयवला कहल गेल छनि। 'पिनाक' नामक धनुष आ' 'शूल' नामक वज्र हुनक प्रिय अस्त्र छनि। एही कारणसँ हुनका 'प्रवरायुधयोमी' सेहो कहल जाइत छनि। हुनकर शक्तिक केओ सामना नहि कय सकैत छनि। हुनकर जे विरोध करैत छनि ओकरा हेतु तँ ओ साक्षात् काल छथि। एहि रूपमे ओ कुपित, भयावह आ' महासंहारकर्त्ता छथि। हुनक सम्पूर्ण आकृति भयंकर छनि। एहि रूपमे हुनका 'कृष्णवस्त्रधारी' मानल गेल छनि। मुदा साधारणतया ओ श्वेतवस्त्रधारिये छलाह।

एहि कालमे शिवक दुनू रूप—सौम्य आ' भयंकर देखल जाइत अछि। एक स्थल पर स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे शिवक ई दूटा भिन्न रूप छनि। मुदा जे केओ शिवक शरणागत होइत छथि, तनिक सभ पाप ओ हरण कय लैत छथिन।

रामायण-सदृश महाभारतोमे शिव-सम्बन्धी अनेक कथा अछि। महाभारतमे किछु एहनो कथा भेटैत अछि, जकर रामायणमे बीज मात्र भेटैत अछि। एहिमे कार्त्तिकेयक जन्मक कथा सर्वप्रमुख अछि। महाभारतमे एकर विस्तृत उल्लेख कयल गेल अछि। एहिसँ शिव तथा स्कन्दक परस्पर सम्बन्धपर सेहो बहुत प्रकाश पड़ैत अछि। एकर संगहि संग, देवकथा सभक क्रमिक विकास कोन प्रकारसँ होइत अछि, एकरो कथा बड़ रोचक अछि। एहि कथाक सभसँ प्राचीन रूप वनपर्वमे भेटैत अछि।

भगवान् शिवक उपासनाक जे विधि रामायणमे दृष्टिगोचर होइत अछि ओहिसँ किछु अधिक महाभारत कालमे उपलब्ध होइत अछि। साधारण रूपसँ

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रमाणं शब्द उच्यते।
तत्रापि वैदिकः शब्दः प्रमाणं परमं मतः॥
वेदेन गीयते यस्तु पुरुषः स परात्परः।
मृतोऽपरः स विज्ञेयो ह्यमृतः पर उच्यते॥
योऽमूर्तः स परो ज्ञेयो ह्यपरो मूर्त उच्यते।
गुणाभिव्याप्तिभेदेन मूर्तोऽसौ त्रिविधो भवेत्॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवश्चेति एक एव त्रिधोच्यते।
त्रयाणामपि देवानां वेद्यमेकं परं हि तत्॥
एकस्य बहुधा व्याप्तिर्गुणकर्मविभेदतः।
लोकानामुपकारार्थमाकृतित्रितयं भवेत्॥
यस्तत्वं वेत्ति परमं स च विद्वान् न चेतरः।
तत्र यो भेदमाचष्टे लिङ्गभेदी स उच्यते॥[२५]

अर्थात्, धर्मार्थकाममोक्षक निश्चय करयबला (प्रमाण) शब्द अछि। ओहू मे वेदक शब्द प्रमाण अछि। वेद जनिक वर्णन करैत अछि, से पुरुष[२६] छथि जे कारणोक कारण छथि। परक नाम अमृत अछि आ' अपरकें मृत बुझबाक चाही। जे निराकार छथि से पर छथि आ' साकारक नाम मूर्त्त। गुणक व्याप्तिक भेदसँ ई साकार तीन प्रकारक होइत छथि। एकेकें तीन प्रकारसँ कहल जाइत छनि—ब्रह्मा, विष्णु आ' महेश। तीन देवक सेहो वेद्य वस्तु ओएह अछि, जकरा 'तत्' आ' 'पर' कहल जाइछ। गुण आ' कर्मक भेदसँ एके नाना रूपसँ विस्तृत छथि। लोक सभक उपकारक हेतु आकृति सभ तीन प्रकारक भय गेल अछि। जे एहि परम तत्त्व (सत्य)कें जनैत छथि, सैह विद्वान छथि—दोसर नहि। एहि मे जे भेद मानैत छथि, तनिक नाम लिङ्गभेदी होइछ।

एका तनुः स्मृता वेदे धर्मशास्त्रे पुरातने।
सांख्ययोगपरैर्वीरैः पृथक्त्वैकत्वदर्शिभिः॥
इदं परमिदं नेति ब्रुवन्तोऽभिन्नदर्शनाः।
ब्रह्माणं कारणं केचिन् केचित् प्राहुः प्रजापतिम्॥
केचिच्छिवं परत्वेन प्राहुर्विष्णुं तथाऽपरे।
अविज्ञानेन संसक्ताः सक्ता रत्यादिचेतसा॥

---

२५ ब्रह्मपुराण, १३०, ७-१२।
२६ भारतीय प्रतीकविद्या, पृ० ९४, पादटिप्पणी, १, पुरुषक अर्थ अछि परमात्मा। एहि शब्दक अनेक प्रकारसँ अर्थ कयल गेल अछि।

बिद्यापति सेहो कूर्मपुराणक वचनसँ एकर समर्थन करैत छथि।

सौरपुराणमे शिवक प्रशंसा करैत कहैत छथि :—

मत्स्वामिनोऽवगणना नहि शक्यते मे
कृत्वापि पूज्यतममूर्त्तिमिमं गिरीशम्।
नो मन्यते तदिह वज्रसमं ममैव॥
अस्ति सर्वं वरारोहे मयि तत्तथ्यमेव हि॥
श्रीमन्महेश्वराल्लब्धं मदीयं नहि किंचन।
वेदवेदांगवेत्तॄणां सहस्राण्यग्रजन्मनाम्॥
हननान्मुच्यते जीवो न तु श्रीशिवहेलनात्।
स्वामी मदीयः श्रीकंठस्तस्य दासोऽस्मि सर्वदा॥

प्रायः सभ पुराणमे शिव आ विष्णुक तादात्म्य पर जोर देल गेल अछि। शिवपुराणक कथन अछि जे शिव तथा विष्णुमे कोनो प्रकारक पार्थक्य नहि अछि। वायुपुराण जे शैव पक्षक अछि ओहूमे शिवकेँ विष्णुसँ अभिन्न मानल गेल अछि।[२८] एतबे नहि, एहि पुराणक किछु स्थलपर शिवकेँ विष्णुक नाम देल गेल अछि यथा नारायण।[२९]

सौरपुराणमे सेहो कहल गेल अछि जे शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि अछि—

नावाभ्यां विद्यते भेदो मच्छक्तिस्त्वं न संशयः।

पुनश्च :—

सूत भद्रं समाचक्ष्व सेवको यस्य माधवः।
श्रीमहेशस्य विष्णोश्च तुल्यत्वं ब्रुवते कथम्।
ब्रुवन्ति तुल्यतां केचित् वैपरीत्येन केचन।
एकत्वं केचिदीशेन केशवस्य वदन्ति हि॥
अत्र सिद्धान्तमर्यादां ब्रूहि तत्त्वेन सूतज॥

पुनश्च :—

अद्वैतं शिवमीशानमज्ञात्वा नैव मुच्यते॥[३०]

---

२८ वायुपुराण, २५.२१; २४: २०, २३ :—
प्रकाशं चाप्रकाशं च जंगमं स्थावरं च यत्।
विश्वरूपमिदं सर्वं रुद्रनारायणात्मकम्॥
आत्मानं प्रकृतिं विद्धि मां विद्धि पुरुषं शिवम्।
भवानर्धशरीरं मे त्वहं तव तथैव च॥

२९ वायुपुराण, ५४. ७७।

३० सौरपुराण, ४०.१, २, ३, ९।

करैत छथि। सर्वप्रथम ओ हरिवंशक अनुसार हरि आ हरक अद्वैत रूपक
न करैत छथि।

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः॥
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं शिवः।[३५]

अर्थात् शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि छनि। एके दू भागमे
भक्त भ' नित्य रूपसँ संसारमे विचरण करैत छथि। शंकरक विना विष्णु
इ आ ने केशवक विना शिव। एहि हेतु रुद्र आ विष्णु एकत्वकें प्राप्त
लनि।

एहि मतक समर्थनमे दोसर प्रमाणक रूपमे निवन्धकार विद्यापति
गपुराणक उद्धरण दैत कहैत छथि, जे विष्णु छथि से स्वयं रुद्र, जे रुद्र छथि
इ जनार्दन। दुनूकें एक मानि क' जे पूजा करैत छथि हुनका परम गति
टैत छनि—

यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्दनः।
इति मत्वा यजेद् देवं स याति परमां गतिम्॥

हयशीर्षपंचरात्रमे सेहो एहि वातपर जोर देल गेल अछि। ओहिमे
हल गेल अछि जे जे व्यक्ति दुनूमे भेद नहि बुझैत छथि हुनका अवश्ये मुक्ति
टैत छनि। जे बुद्धिमान दुनूमे भेद नहि मानैत छथि से शिवक श्रेष्ठ भक्तमे
नल जाइत छथि—

यस्त्वभेदेन तौ पश्येत् तस्य मुक्तिर्न संशयः॥

मुदा जे विष्णु आ शिवमे भेद मानैत छथि से मानव मोहसँ ग्रसित
भ' नरक जाइत छथि।

कवि विद्यापतिक अन्य अन्य रचना यथा विभागसार, गंगावाक्यावली
आ पदावलीसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे शिव आ विष्णु एक छथि। उदाहरण
स्वरूप एहि सम्बन्धक दू गोट पद द्रष्टव्य अछि:—

भल हर भल हरि भल तुअ कला।
खन पितवसन खनहि बघछला॥
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन संकर खन देव मुरारि॥

३५ शैवसर्वस्वसार, हस्तलेख, पात सं० २।

सेहो करैत छथि। सर्वप्रथम ओ हरिवंशक अनुसार हरि आ हरक अद्वैत रूपक वर्णन करैत छथि।

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः॥
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं शिवः।[३५]

अर्थात् शिव आ विष्णुमे कोनो अन्तर नहि छनि। एके दू भागमे विभक्त भ' नित्य रूपसँ संसारमे विचरण करैत छथि। शंकरक विना विष्णु नहि आ ने केशवक विना शिव। एहि हेतु रुद्र आ विष्णु एकत्वके प्राप्त कयलनि।

एहि मतक समर्थनमे दोसर प्रमाणक रूपमे निबन्धकार विद्यापति लिंगपुराणक उद्धरण दैत कहैत छथि, जे विष्णु छथि से स्वयं रुद्र, जे रुद्र छथि सैह जनार्दन। दुनूकें एक मानि क' जे पूजा करैत छथि हुनका परम गति भेटैत छनि—

यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्दनः।
इति मत्वा यजेद् देवं स याति परमां गतिम्॥

हयशीर्षपंचरात्रमे सेहो एहि बातपर जोर देल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे जे व्यक्ति दुनूमे भेद नहि बुझैत छथि हुनका अवश्ये मुक्ति भेटैत छनि। जे बुद्धिमान दुनूमे भेद नहि मानैत छथि से शिवक श्रेष्ठ भक्तमे गनल जाइत छथि—

यस्त्वभेदेन तौ पश्येत् तस्य मुक्तिर्न संशयः॥

मुदा जे विष्णु आ शिवमे भेद मानैत छथि से मानव मोहसँ ग्रसित भ' नरक जाइत छथि।

कवि विद्यापतिक अन्य अन्य रचना यथा विभागसार, गंगावाक्यावली आ पदावलीसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे शिव आ विष्णु एक छथि। उदाहरण स्वरूप एहि सम्बन्धक दू गोट पद द्रष्टव्य अछि:—

भल हर भल हरि भल, तुअ कला।
खन पितवसन खनहि बघछला॥
खन पंचानन खन भुज चारि।
खन संकर खन देव मुरारि॥

---

३५ शैवसर्वस्वसार, हस्तलेख, पात सं० २।

पुराणकाल धरि लिंग शिवक सर्वमान्य आ' सम्मानित प्रतीक बनि गेल ल तथा ओकर उपासना दीर्घकालसँ स्थापित भ' गेल छल। एहि युगमे एहि गकें देखि ककरो मनमे ई विचार नहि अबैत अछि जे 'लिंगमूर्त्ति' प्रारम्भमे ननेन्द्रियक प्रतीक छल। एकर पूजा लोक ओहिना करैत छल जेना शिवक ानवाकार मूर्त्तिक।

शिवलिंगक उत्पत्तिक सम्बन्धमें एक गोट कथा प्रचलित अछि, जकर मूल ंप सभ पुराणमे एके रंग अछि। मुदा विस्तृत रूपमे किछु विभिन्नता अवश्य अछि। एकर कथानक एहिं रूपक अछि :—

एक खेप ब्रह्मा आ' विष्णुमे ई विवाद भ' गेलनि जे के श्रेष्ठ छथि। ओहि समयमें भगवान शिव एक लिंगाकार अग्निस्तम्भक रूपमे ओहि दुनूक समक्ष प्रकट भलाह आ' हुनका लोकनिकें ओहि स्तम्भक ओर-छोरक पता लगयबाक हेतु कहलथिन। विष्णु नीचा दिस आ' ब्रह्मा उपर दिस बढ़लाह। मुदा केओ ओहि स्तम्भक पता नहि लगा सकलाह। अन्तमे हारि क' दुनू गोटा लौटि गेलाह। तखन ओ सभ भगवान शिवेकें सर्वश्रेष्ठ मानलनि आ' लिंगरूपक यथोचित सम्मान कयलनि। एहि कथाक जे रूप लिंगपुराणमे देल गेल अछि, ओहिमे शिवलिंगक उत्कर्ष अपन चरम सीमापर पहुँचैत अछि।

अतएव निबन्धकार विद्यापति सेहो शवैसर्वस्वसारमे लिंगपुराणेक वचन उद्धृत करैत छथि। एतय स्वयं कृष्ण कहैत छथिन जे जे महादेवक प्रारम्भिक तेज अछि, सैह प्रथम लिंग कहल गेल अछि। कल्पान्तमे सभ देवता ओहिमे लीन भय जाइत छथि। हुनकेसँ ब्रह्मसँ लय चराचर सहित सभ उत्पन्न होइत छनि।[३९] एहि मतक समर्थनमे विद्यापति भविष्यपुराणक वचनकें उद्धृत करैत कहैत छथि जे आकाश ओकर लिंग अछि, पृथ्वी ओकर पीठिका। ओ सभ भूतक निवास स्थान अछि। ओहिमे सभकें लीन होयबाक कारणें ओ लिंग कहल जाइत अछि।

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवानां लयनाल्लिगमुच्यते ॥[४०]

स्कन्दपुराणमे सेहो 'लयनाल्लिङ्गमुच्यते' कहल गेल अछि। एही लिंग मे सम्पूर्ण विश्वक लय भ' जाइत अछि आ' पुनः सृष्टिक आदिमे सम्पूर्ण संसार लिंगेसँ उत्पन्न होइत अछि। लय होयब आ प्रलय होयब एके बात होइत अछि।

---

३९ शैवसर्वस्वसार, पात न० २६९।
४० शैवसर्वस्वसार, पात न० २।

विद्यापति विभिन्न पुराणादिक आधार पर विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिंग सभक उल्लेख शैवसर्वस्वसारमे कयने छथि। एहि लिंगमेसँ बेसी लिंगक पूजा विभिन्न देवता सभक द्वारा कयल गेल छनि। यथा :

इन्द्रनीलमयलिंग—भगवान विष्णु प्रत्येक दिन इन्द्रनीलमय लिंगक पूजा करैत छथि। एहि हेतु ओ अद्भुत तथा सनातन विष्णुत्वकें प्राप्त कयलनि अछि।

मणिमयलिंग—देवदेवेन्द्र इन्द्र प्रतिदिन उत्तम मणिमय लिंगक भक्तिपूर्वक पूजन करैत छथि। एहि कारणसँ ओ शक्रत्वकें प्राप्त कयलनि।

हेमलिंग—स्वर्णमय सुन्दर लिंगक पूजा नित्यहि कुवेर करैत छथि। एहिसँ ओ कुवेरत्व प्राप्त कयलनि।

चाँदीक लिंग—महात्मा विश्वेदेव विधिवत् भक्तिपूर्वक सुन्दर चानीक लिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ विश्वत्वकें प्राप्त कयलनि।

प्रवाललिंग - पन्नगराज प्रवालनिर्मित शिवलिंगक पूजा करैत छथि, जाहिसँ ओ साँपक मध्य भोगसँ समृद्ध परम पदकें प्राप्त कयलनि।

वज्रलौहमयलिंग—मायसभ सदिखन वज्रलौहमय लिङ्गकें पुजैत छथि, जाहिसँ ओ सभ मातृत्व पदकें प्राप्त कय परम पदकें प्राप्त करैत छथि।

एहि रूपसँ आनो आन लिङ्गक पूजाक उल्लेख कयल गेल अछि।

विभिन्न पदार्थसँ निर्मित लिङ्गक पूजा कयनिहारकें विभिन्न प्रकारक फल होइत छनि। यथा—एकदिस गुड़सँ निर्मित लिङ्गक पूजनसँ पुरुष श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त कय अनेक राज्यक अधिकारी होइत अछि तँ दोसर दिस स्त्री हजारो सौतिन सभक मध्य अतुलनीय सौभाग्य प्राप्त कय सर्वश्रेष्ठ (स्त्री) बनि रहैत छथि आ पुत्र-पौत्रक संग मात्र सुख प्राप्त करैत छथि।

मक्खनसँ निर्मित लिंगक पूजा कयनिहार छओ मासमे अपन अभीष्ट फल प्राप्त करैत अछि आ शिवलोकमे वास करैत अछि। ठीक ओहिना जे नोनसँ निर्मित लिंगकें पुजैत अछि, से श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त करैत अछि।

निबन्धकार विद्यापतिक पुराणादिक आधार पर देल गेल प्रमाणसँ ज्ञात होइत अछि जे लिंगक संख्यापर, पूजाक समयपर आ' पूजाक अवधिपर फलक मात्रा आ' विशेषता निर्भर करैत अछि।

शिवधर्मक अनुसार एकदिस प्रातःकालमे भक्तिपूर्वक जे एको खेप लिंग कें पूजैत अछि, से एक सय कपिला गाय-दानक फल प्राप्त करैत अछि। दोसर दिस मध्याह्नमे जे शिवलिंगक पूजा करैत अछि, से सम्पूर्ण पृथ्वी-दानक

प्रस्तुत शैवसर्वस्वसार नामक ग्रन्थक रचना निवन्धकार विद्यापति ओइनवारवंशीय राजा पद्मसिंहक पत्नी विश्वासदेवीक आदेशसँ कयने छलाह। एहि ग्रन्थक प्रारम्भमे ओइनवारवंशीय राजा भवसिंह, देवसिंह, शिवसिंह, पद्मसिंह आ रानी विश्वासदेवीक यशोगान कयल गेल छनि।

ई ग्रन्थ पौराणिक आधारपर लिखल गेल शिवमाहात्म्यसम्बन्धी निवन्ध अछि। कारण, एहिमे विभिन्न पुराण, यथा लिंगपुराण, कूर्मपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, कालिकापुराण, हरिवंशपुराण आदिक प्रधानता अछि। ओना, मध्य-मध्यमे शिवमाहात्म्य, शिवधर्मोत्तर, शिवमाहात्म्य, दानधर्म, शिवधर्म, आदिक वचन सेहो उद्धृत कयल गेल अछि।

एहि ग्रन्थमे विभिन्न पुराणक आधार पर शिवक माहात्म्य, पूजा, अर्चा, व्रत, दानधर्म आ विभिन्न प्रकारक पूजा-अर्चाक फलक वर्णनक संगहि संग प्रत्येकक हेतु निवन्धकार विद्यापति द्वारा संकलपवाक्य सेहो देल गेल अछि। एकर अतिरिक्त किछु कठिन शब्दसभक अर्थ सेहो देल गेल अछि।

प्रस्तुत हस्तलेख हमरा संस्कृत विश्वविद्यालयक उप पुस्तकालयाध्यक्ष पं० जीवानन्द ठाकुर जीक सौजन्यसँ प्राप्त भेल छल। ओतय एक गोट मिथिलाक्षरमे लिखल तालपत्र सेहो अछि। ओ तालपत्र खंडित अछि।

प्रस्तुत हस्तलेख देवनागरी लिपिमे लिखल अछि। एकरो अन्तिम अंश खंडित अछि। मुदा ओकर पूर्ति भय गेल अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थक सम्पादनक प्रसंगमे हमरा पता लागल जे एकर एक हस्तलेख नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सेहो अछि। अतएव हम ओकरो छान-बीनमे लागि गेलहुँ। अन्ततोगत्वा पता लागल जे ओहि हस्तलेखक प्रतिलिपि डॉ॰ जयमन्त मिश्र (प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) क ओतय छनि। अतएव हम ओतय जाय नेपालक हस्तलेख सँ प्रस्तुत हस्तलेखकेँ मिला कय देखलहुँ तँ ओ हस्तलेख अधिक अशुद्ध बुझि पड़ल। तथापि दुनूक मध्य जे साधारण अन्तर देखल गेल से सभ हम प्रस्तुत हस्तलेखमे अंकित कयलहुँ।

हम ऋणी छियनि श्रद्धेय प्रो० डॉ० जयमन्त मिश्र आ पं० जीवानन्द ठाकुरक जनिका लोकनिक सहायतासँ दुनू अप्रकाशित हस्तलेख प्राप्त भेल।

हम मैथिली अकादमीक अध्यक्ष पं० श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छियनि; किएक तँ हिनके प्रयासक फलस्वरूप अकादमीक स्थापना-वर्षहिक स्वीकृत प्रतिलिपि आइ छपि गेल अछि। हम आभारी

शैवसर्वस्वसारः

ओं नमः शिवाय[1] ॥

सूर्य्याचन्द्रमसौ दृशौ तदुपरि ज्योतिर्मयं दर्शनं
बिभ्राणो गणयन्निव स्व[2]मनघं विश्वैकबीजं वपुः ।
धत्ते यः शिरसा सुधाकरकलामेणाङ्कमुद्रामयीं
देयादभ्युदयं त्रिकालविदयं देवो भवानीपतिः ॥१॥

गङ्गोत्तुङ्गतर[3]ङ्गसङ्गिमलसत्कीर्तिच्छटाक्षालित-
क्षोणिः क्ष्मातलशर्वपर्वतवरो वीरव्रता[4]लङ्कृतः ।
भूपालावलिमौलिमण्ड[5]नमणिप्रत्यर्चिताङ्घ्रिद्वयाऽ-
म्भोजः श्रीभवसिंहभूपतिरभूत् सर्वार्थिकल्पद्रुमः ॥२॥

दृप्यद्दुर्वारवैरिद्विपकुलदलनाकुण्ठकण्ठीरवश्री-
रासीमाशेषभूभृन्मणिमुकुटतटज्योतिरुद्द्योतिताङ्घ्रिः ।
तत्सूनुः पुण्यकीर्तिर्नयविनयदयादानदाक्षिण्यदक्षो
वृक्षः सर्वाश्रितानां मिथिलभुवि नृपो देवसिंहो बभूव ॥३॥

---

१ विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक हस्तलेख, नेपालसँ प्राप्त पांडुलिपिक प्रतिलिपि डॉ० जयमन्त मिश्र (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) सँ प्राप्त नेपाल पांडुलिपि, श्री शिवाय नमः ।

२ मूले, समनघं, विद्यापति-वाङ्मय, सम्पादक, डॉ० मुनीश्वर झा, निबन्धकार, पं० जीवानन्द ठाकुर, पृ० १२६, स्वमनघं ।

३ पुरुषपरीक्षा, सम्पादक प्रो० रमानाथ झा, पृ० ३७६, पाद-टिप्पणी, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गितामललसत्कीर्त्तिः; विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२६, गंगोत्तुङ्गतरङ्गिसङ्गिविलसत्, पाठान्तरम्, गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गसङ्गिमलसत्; नेपाल पांडुलिपि, सङ्गम-लसत् ।

४ नेपाल पांडुलिपि, वीरप्रभालङ्कृतः ।

५ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७६, मण्डल ।

दत्तं येन द्विजेभ्यो द्विरदरथमहादानमन्यैरशक्यं
का वार्ता त्वन्यदाने कनकमयतुलापूरुषो येन दत्तः ।
यस्य क्रीडातडागस्तुलयति सकुरी[1]शासने वारिराशिं
देवोऽसौ देवसिंहः क्षितिपतितिलकः कस्य नाऽऽसीन्नमस्यः ॥४॥

क्षोणीभर्त्तुरमुष्य वैरिवनितावैध[2]व्यदीक्षागुरो-
रुद्भूतः शिवसिंहदेवनृपतिर्वंशावतंसः सुतः ।
शौर्य्यावर्ज्जितगौडगज्ज[3]नमहीपालोपनम्रीकृताऽ-
नेकोत्तुङ्गमतङ्गजाश्वकनकच्छत्राभिरामो[4]दयः ॥५॥

सङ्ग्रामाङ्गणसीमभीमसदृशस्तस्यानुजन्माऽभवद्
दानस्वलिपतकल्पवृक्षमहिमाऽसौ पद्मसिंहो नृपः ।
कैलासोदरसोदरीयति शरद्राकाशशाङ्कीयति
प्रालेयाचलशेखरीयति यशो यस्यारविन्दीयति ॥६॥

विद्यामङ्गिरसः सुतस्य विनयं रामस्य वृत्तं मुनेः
शौर्य्यं सूर्य्यसुतस्य धैर्य्यमवनेर्गाम्भीर्य्यमम्भोनिधेः ।
दानं दानवनन्दनस्य सकलं सारं समुच्चिन्वता
धात्रा यः शरदिन्दुसुन्दरयशाः क्षोणीपतिर्निर्मितः ॥७॥

---

१ मूले, सततं शासने; पुरुषपरीक्षा+नेपाल पांडुलिपि, सततं शासने; विद्यापति वाङ्मय, पृ० १२७, सकुरीशासने, पाठान्तर, सततमिति ।

२ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७+विद्यापयि-वाङ्मय, पृ० १२७ एवं मूले, वैदग्ध्य; पुरुषपरीक्षा, पाठान्तर, वैधव्य ।

३ मूले, गर्जन, नेपाल पांडुलिपि, तर्जन ।

४ नेपाल पांडुलिपि, भिमानोदयः ।

दुग्धाम्भोधाविव[1] श्रीर्गुणगणसदन[2] विश्वविख्यातवंशे
सम्भूता पद्मसिंहक्षितिपतिदयिता धर्म्मकर्म्मैकसीमा ।
पत्युः सिंहासनस्था पृथुमिथिलमहीमण्डलं[3] पालयन्ती
श्रीमद्विश्वासदेवी जगति विजयते चर्य्ययाऽ[4]रुन्धतीव ॥८॥

इन्द्रस्येव शची समुज्ज्वलगुणा गौरीव गौरीपतेः
कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या ।
विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी
विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्त्ति भूमण्डले ॥९॥

दातारः कति नाऽभवन् कति न वा सन्तीह भूमण्डले
नैकोऽपि प्रथितप्रदानयशसो विश्वासदेव्याः समः[5] ।
यस्याः स्वर्णतुलामुखाखिलमहादानप्रदानोत्सव-
स्वर्णैरर्थि[6]मृगीदृशामपि तुलाकोटिध्वनिः श्रूयते॥१०॥

---

१ विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२७ + पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७ मूले + म० म० उमेश मिश्र, विद्यापति ठाकुर, पृ० २५, पादटिप्पणी ३, एवं + मूले दुग्धाम्भोधेरिव; विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, सं० डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पृ० ४८ + विद्यापतिपदावली, प्रथम भाग, (बिहार राष्ट्रभाषापरिषद, पटना) पृ० ८५, दुग्धाम्भोधांविव ।

२ विद्यापति, सम्पादक, खगेन्द्रनाथ मित्र एवं विमानबिहारी, मजुमदार, हिन्दी रूपान्तरकर्त्ता हरेश्वरी प्रसाद, पादटिप्पणी ३७ + नेपाल पांडुलिपि + पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७ + विद्यापतिपदावली (बिहार राष्ट्रभाषापरिषद, पटना) भाग १, पृ० ८५ + विद्यापति वाङ्मय, पृ० १२७ + विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, पृ० ४८ एवं मूले सदृशे ।

३ नेपाल पांडुलिपि, पृथुमखिल ।

४ तत्रैव + पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, विद्यापति-वाङ्मय पृ० १२७ + विद्यापति अनुशीलन एव मूल्यांकन, प्रथम भाग, पृ० ४८ + विद्यापति, सम्पादक, खगेन्द्रनाथ मित्र एवं विमानबिहारी- मजुमदार, पृ० ३८ चर्य्यया; मूले, धर्म्य ।

५ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, समो, मूले समाः ।

६ पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७ + विद्यापति, पृ० १४ + विद्यापति ठाकुर, पृ० ३० स्वर्गग्राम ।

लीलालोलावनालीद्विज[1]निचयचलद्वीचिविस्तारभार-
प्रव्यक्तोन्मुक्तमुक्ताफलतरलतरद् विन्दुसन्दोहवाहः ।
पुष्यत्पुष्पौधमालाकुललितलसद्भृङ्गसङ्गीतसङ्गी
श्रीमद्विश्वासदेव्याः समरुचिरुचिरो विश्वभागस्तडागः ॥११॥

नित्यं देवद्विजार्च्चाद्रविणवितरणारम्भसम्भावितश्री-
र्द्धर्म्मज्ञा चन्द्रचूड़प्रतिदिवससमाराधनैकाग्रचित्ता ।
विद्याऽनुज्ञाप्य विद्यापतिकृतिनमसौ विश्वविख्यातकीर्त्तिः
श्रीमद्विश्वासदेवी विरचयति शिवं शैवसर्वस्वसारम् ॥१२॥

प्रमाणमूला[2] नवपल्लवाढ्या सपुष्पिका रम्यफलोपपन्ना ।
अभीष्टसिद्ध्यै विबुधैरुपेया वाक्यावली कल्पलतेव शम्भोः ॥१३॥

(तत्रादौ शिवमाहात्यम्)

स्कन्दपुराणे—

उत्कृष्टतुल्यजातीनां महच्छब्दः प्रयुज्यते ।
तस्मात् समस्तदेवानां महादेवोऽयमुत्तमः ॥१४॥

लिंगपुराणे कृष्णाउवाच—

यदाद्यमैश्वरं तेजस्तल्लिङ्गं प्रथमं स्मृतम् ।
कल्पान्ते तस्य लिङ्गस्य लीयन्ते सर्वदेवताः ॥१५॥
दक्षिणे लीयते ब्रह्मा वामतश्चाप्यहं प्रभोः ।
हृदये चैव गायत्री सर्ववेदोत्तमोत्तमा ॥१६॥

---

१ विद्यापतिपदावली, प्रथम भाग पृ० ८५ + विद्यापति-वाङ्मय, पृ० १२८ + नेपाल पांडुलिपि एवं मूले, कुच; पुरुषपरीक्षा, पृ० ३७७, द्विज ।

२ नेपाल पांडुलिपि, प्रणाममूला ।

लीयन्ते मूर्द्धिन वै वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः ।
जठरे लीयते सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
पुनरुत्पद्यते तस्माद् ब्रह्माद्यं सचराचरम् ॥१७॥

भविष्यपुराणे—

आकाशं लिङ्गमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका ।
आलयः सर्वभूतानां लयनाल्लिङ्गमुच्यते ॥१८॥

कूर्म्मपुराणे कृष्णवाक्यम्—

भूतानां ब्राह्मणा देवा ब्राह्मणानान्तु देवताः ।
देवानामप्यहं देवो मम देवो महेश्वरः ॥१९॥

लिङ्गपुराणे—

सत्यं सत्यञ्च सत्यञ्च न देवः शङ्करात्परः ।
नान्ये मुक्तिप्रदादेवाः कल्पकोटिशतैरपि ॥२०॥

शिवधर्म्मे—

नास्ति रुद्रसमो देवो नास्ति रुद्रसमो गुरुः ।
नास्ति रुद्रसमं ज्ञानं नास्ति रुद्रसमं तपः ॥२१॥

दानधर्म्मे—

ये सर्वभावानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम् ।
प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात्तान् समुद्धरेत् ॥२२॥

अथ हरिहराद्वैतम्

हरिवंशे—

रुद्रस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः ।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः ॥२३॥
न विना शङ्करं विष्णुर्न विना केशवं[1] शिवः ।
तस्मादेकत्वमायातौ रुद्रोपेन्द्रौ ततौ पुनः ॥२४॥

कूर्म्मपुराणे श्रीरुद्र-वाक्यम्—

योऽहं सुनिष्कलो देवः सोऽपि नारायणः परः ।
एकीभावेन पश्यन्ति न तेषां पुनरुद्भवः ॥२५॥

---

१ ने० पा०, विष्णुना ।

हयशीर्षपञ्चरात्रे —
यस्तु भेदेन नो[१] पश्येत्तस्य मुक्तिर्न संशयः ॥२६॥

लैङ्गे —
यो विष्णुः स स्वयं रुद्रो यो रुद्रः स जनार्द्दनः ।
इति मत्वा यजेद्देवं स याति परमाङ्गतिम् ॥२७॥

कौर्म्मे—
मन्यन्ते ये जगद्योनिं विभिन्नं विष्णुमीश्वरात् ।
मोहादवेदनिष्ठत्वात्ते यान्ति नरकं नराः ॥२८॥

भविष्यपुराणे—
शिवस्य विष्णोर्यो भेदं न करोति महामतिः ।
शिवभक्तः स विज्ञेयो महापाशुपतश्च सः ॥२९॥

अथ शिवभक्त-लक्षणम्

शिवरहस्ये-

क इह भवति भक्तः शाश्वतश्चाष्टमूर्त्ते-
रितिमुनिरभिपृष्टो गो[२]तमेनोपमन्युः ।
प्रथितगुणगणौघः प्राह यद्विप्रवर्य्यः
श्रृणु तदनघ भूयो मोहपापापहारि ॥३०॥

न चलति निजवर्णधर्म्मतो यः ।
सममतिरात्मसुहृद्विपक्षवर्गे ॥
न हरति न च हन्ति किञ्चदुच्चैः ।
स्थिरमनसं तमवेहि देवभक्तम् ॥३१॥

स्फटिकमणि शिलानिभः क्व शम्भु-
र्म्मनसि नृणां क्वच मत्सरादिदोषः ॥
नहि तुहिनमयूषरश्मिपुञ्जे ।
भवति हुताशनदीप्तिजः प्रतापः ॥३२॥

---

१ ने० पा०, तौ०
२ तत्रैव, गौतम ।

विमलमतिरमत्सरः प्रशान्तः
शुचिचरितोऽखिलसर्वभूतरक्षी ।
मितहितवचनः सुवागमायो
भवति शिवो हृदि यस्य शुद्धकीर्त्तेः ॥३३॥

वसति हृदि सनातने च तस्मिन्
भवति पुमान् जगतोऽस्य[1] सौम्यरूपः ।
क्षितिरसमभिर[2]स्य चात्मनोऽन्तः
कथयति चारुतयैव शालपोतः[3] ॥३४॥

यमनियमविधूतकल्मषाणा–
मनुदिनमीश्वरसक्तमानसानाम् ।
अपगतमदरागमानमत्सराणां–
जगति न दुर्लभमस्ति किञ्चिदेव ॥३५॥

अथभक्तिः

महाभारते

जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु ।
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजा[4]यते ॥३६॥
दिवसं दिवसार्द्धं वा मुहूर्त्तं वा क्षणं लवम् ।
नह्यलब्धप्रसादस्य भक्तिर्भवति शङ्करे ॥३७॥

बाणं प्रति शिववाक्यम् —

भविता सर्वमेतत्ते यथेच्छसि महासुर ।
भक्तस्त्वं मे नचादेयं भक्तानां विद्यते मम[5] ॥३८॥

---

१ ने० पा०, येन तत्रस्य ।
२ तत्रैव, क्षितिरसमतिरस्य ।
३ तत्रैव, सारपोतः
४ तत्रैव, रजायत ।
५ तत्रैव, मम विद्यते ।

भविष्यपुराणे—
श्रुतिमात्रेण यो[1] देवि मम भक्तिपरायणः[2] ।
गाणपत्यं ध्रुवं तस्य[3] ददामि कमलानने ॥३९॥
अनिष्टैव महायज्ञैरकृत्वैव महत्तपः ।
मद्भक्ता मद्गतात्मानो लभन्ते पदमव्ययम् ॥४०॥
भविष्यपुराणे—
एकः पूजयते भक्त्या भक्त्या चान्यः प्रपश्यति ।
तुल्यमेव फलं ताभ्यां भक्तिरेवात्र कारणम् ॥४१॥
भक्तिरुपास्यतया निश्चयः क्वचिदुपासनाप्युच्यते ।

देवीं प्रति शिववाक्यम्

शिवपुराणे —
मद्भक्तजनवात्सल्यं पूजायाश्चानुमोदनम् ।
स्वयमभ्यर्चनं भक्त्या ममार्थे चाङ्गचेष्टितम् ॥४२॥
मत्कथाश्रवणे सक्तिः स्व[4]रनेत्राङ्गविक्रिया ।
ममा[5]र्थे स्मरणं नित्यं य[6]च्च मां नोपजीवति ॥४३॥
भक्तिरष्टविधाह्येषा यस्मिन् म्लेच्छेऽ[7]पि वर्तते ।
स विप्रेन्द्रो मुनिः श्रीमान् स यतिः स च पण्डितः ॥
सुदुर्लभमिदं ज्ञात्वा शिवे भक्तिं समाश्रयेत् ॥४५॥

अथाविका[8]रिणः

भविष्यपुराणे—
यस्तु पूजयते लिङ्गे देवादिं मां जगत्पतिम् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा मत्परायणः ॥
तेषां प्रीतः प्रदास्यामि शुभाँल्लोकाननुत्तमान् ।४६॥

---

१ तत्रैव, ये ।
२ तत्रैव, परायणाः ।
३ तत्रैव, तेषां ।
४ तत्रैव, सूत इति ।
५ तत्रैव, ममानुस्मरणं ।
६ तत्रैव, यश्च ।
७ तत्रैव, म्लेच्छापि ।
८ तत्रैव, अथाधिकारणः ।

स्कन्दपुराणे—

विप्रस्य तु सदैवाहं शुचेरप्यशुचेरपि ।
गृह्णन् बलिं प्रहृष्यामि प्रियाणामिव दर्शनात्[1] ॥४७॥

बलिः-पूजा ।

शूद्रः[2] कर्म्माणि यो नित्यं स्वीयानि कुरुते प्रिये ।
तस्याहमर्च्चां गृह्णामि चन्द्रखण्डविभूषिते[3] ॥४८॥

स्कन्दपुराणे शिवपूजाधिकारे—

रत्नावलीन्तु यो दद्याद् ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
शूद्रः स्त्री वा महत् सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥४९॥

स्कन्दपुराणे एवं यज्ञवैभवे—

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थश्च सुव्रतः[4] ॥
एवं दिने दिने देवं पूजयेदम्बिकापतिम् ॥५०॥
संन्यासी देवदेवेशं प्रणवेनैव पूजयेत् ।
नमोऽन्तेन शिवेनैव स्त्रीणां पूजा विधीयते ॥५१॥

तदेतद्वा[5]क्यजातपर्य्यालोचनया सर्ववर्णानां सर्ववर्णस्त्रीणां सर्वाश्रमिणाञ्च शिवपूजायामधिकारोऽवसीयते ।

स्कन्दपुराणे—

नह्यहं[6] स्मयदत्तानि अहङ्कारकृतानि च ।
उपभुञ्जामि भोज्यानि पेयानि च विभावरि ॥५२॥

विभावरीति पार्वत्याः सम्बोधनम् ।

---

१ ने० पा० दर्शनाः ।
२ तत्रैव शूद्रं ।
३ तत्रैव विभूषितः ।
४ तत्रैव, सव्रतः ।
५ तत्रैव, तदेतद्वाह्यतोऽप्यर्थालोचनया ।
६ तत्रैव, नित्यहं ।

अथ स्मरणफलकथनम्

स्कन्दपुराणे शिवस्मरणस्य—

कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते ।
प्रायश्चित्तन्तु तस्यैकं शिवसंस्मरणं परम् ॥५३॥

अद्यकृतपापनिवृत्तिकामः शिवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुरणे रुद्रस्मरणस्य—

स्मरणादेव रुद्रस्य पापसंघातपञ्जरम् ।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा ॥५४॥

अद्य पापसंघातपञ्जरभेदकामनया रुद्रस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये सततरुद्रस्मरणस्य—

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोपि वा ।
यः स्मरेत् सततं रुद्रं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥५५॥

अद्य बाह्याभ्यन्तरशुचित्वभवनकामनया सततं भगवतो रुद्रस्य स्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये शिवस्मरणस्य—

ये स्मरन्ति च मां देवि शाठ्येनापि यशस्विनि ।
राजानस्ते नरा मर्त्ये चित्तसाध्यानुरूपतः[1] ॥५६॥

अद्य मर्त्यलोकाधिकरणकराजत्वभवनकामनया शिवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्मे महादेवस्मरणस्य—

महादेवेति यो नाम कीर्त्तयेत् संस्मरेदपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥५७॥

अद्य सर्वपापविमुक्तिरुद्रलोकप्राप्तिकामनया महादेवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये चंद्रशेखरपादाब्जस्मरणस्य—

संसारोरगदष्टानां जन्तूनामविवेकिनाम् ।
चन्द्रशेखरपादाब्जस्मरणं परमौषधम् ॥५८॥

---

१ ने० पा०, चित्त-शब्दानुरूपतः ॥

अद्यसांसारिकदुःखाभावकामो भगवतश्चन्द्रशेखरस्य पादाब्जस्मरणमहङ्करिष्ये।

अथ स्कन्दपुराणे नित्यं महेश्वरस्मरणस्य—

शाठ्येना[1]पि नरा नित्यं ये स्मरन्ति महेश्वरम्।
तेपि यान्ति तनुं त्यक्त्वा शिवलोकमनामयम् ॥५६॥

नित्यं सङ्कल्पप्रभृतियावज्जीवम्[2]।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं तनुत्यागानन्तरानामयशिवलोकगमनकामो महेश्वरस्मरणमहङ्करिष्ये।

तत्रैव[3] नित्यमित्युपक्रम्य विरूपाक्षस्मरणस्य—

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा द्विजोत्तमाः।
ये स्मरन्ति विरूपाक्षं विज्ञेयास्ते महेश्वराः[4] ॥६०॥

एककालमित्यादि विकल्पः शक्त्यपेक्षया फलभूतापेक्षया वा व्यवस्थितः

अद्यादि महेश्वरत्वभ[5]वनकाम एककालं द्विकालं त्रिकालं वा नित्यशो विरूपाक्षस्मरणमहङ्करिष्ये।

नन्दिकेश्वरे सदा रुद्रस्य स्मरणस्य—

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः।
ये स्मरन्ति सदा रुद्रं पापं तेषां न विद्यते ॥६१॥

सदेति पदस्मरणात् सङ्कल्पप्रभृति यावज्जीवं प्रतिदिनकर्त्तव्यताव गम्यते।

अद्य लाभजयपरकर्तृकपराभवाभावपापशून्यत्वकामोभगवतो रुद्रस्य यावज्जीवं प्रत्यह स्मरणमहङ्करिष्ये।

---

१ ने० पा० शब्देनापि।

२ तत्रैव, 'प्रत्यहम्' अधिक पाठ अछि।

३ तत्रैव, अत्रैव।

४ तत्रैव, गणेश्वराः।

५ तत्रैव, गणेश्वरत्व।

शिवमाहाम्ये प्रात्यहिक[1] शिवस्मरणस्य—

सर्वथा वर्त्तमानोपि यो मां देवि सदा स्मरेत् ।
रुद्रलोकमवाप्नोति पश्यते वृषभध्वजम् ॥६२॥

अद्यादि रुद्रलोकावाप्तिवृषभध्वजदर्शनकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शिवस्मरणमहङ्करिष्ये ।

अथकीर्त्तनफलम्

स्कन्दपुराणे महादेवेतिकीर्त्तनस्य—

अश्वमेधसहस्रस्य सहस्रगुणितस्य च ।
फलमाप्नोतिवचनान्मे महादेवेति नामतः ॥६३॥

अद्य सहस्रगुणिताश्वमेधसहस्रजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य—

कोटिष्वष्टादशसु यत्तीर्थानां लभते[2] फलम् ।
एकस्थं लभते तत्तु महादेवेतिकीर्त्तनात् ॥६४॥

अद्याष्टादशतीर्थकोटिसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

नारदीये महादेवेति कीर्त्तनस्य

धेनूनामष्टकोटीनां सम्यग्दानेन यत्फलम् ।
तत्तुल्यं तद्विशिष्टं वा महादेवेति कीर्त्तनात् ॥६५॥

अद्याष्टकोटिसंख्यकधेनुसम्यग्दानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामोमहादेवेतिकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति नामकीर्त्तनस्य—

महादेवेति यैर्नाम सकृदुच्चरितं नरैः ।
अलं भयं यमात्तेषां सुघोरान्नरकादपि[3] ॥६६॥

---

१ ने० पा० प्रात्याहिक ।
२ तत्रैव, समता ।
३ तत्रैव, सुघारनरकादपि ।

अद्य यमभयघोरनरकभयाभावकामो महादेवेति नामोच्चारणमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये शङ्करकीर्त्तनस्य—

ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्च्चयन् ।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ सङ्कीर्त्य शङ्करम् ॥६७॥

अद्य सत्ययुगाधिकरणकशिवध्यानत्रेतायुगाधिकरणकबहुशिवयज्ञद्वापरयुगाधिकरणकशिवार्च्चनजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शङ्करमहं कीर्त्तयिष्ये ।

भविष्ये रुद्रकीर्त्तनस्य—

कीर्त्तयन्ति च ये रुद्रं सकृदप्येव मानवाः ।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते सप्तजन्मकृतैरपि ॥६८॥

अद्य सप्तजन्मकृतसर्वपापविमुक्तिकामो भगवन्तं शङ्करमहं कीर्त्तयिष्ये

नन्दिकेश्वरे महेश्वरसततकीर्त्तनस्य—

ये कीर्त्तयन्ति सततं देवदेवं महेश्वरम् ।
न मोहमधि[1]गच्छन्ति येऽपि स्युः पापयोनयः ॥६९॥

अद्य मोहविरहकामो भगवन्तं महेश्वरमहं कीर्त्तयिष्ये ।

तत्रैव ब्राह्मणकर्त्तृककीर्त्तनस्य—

कीर्त्तनाद्देवदेवस्य तेजस्वी ब्राह्मणो भवेत् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकमवाप्नुयात् ॥७०॥

अद्य तेजस्वित्वसर्वपापविमुक्तत्वरुद्रलोकावाप्तिकामो भगवतो महेश्वरस्य कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव रुद्रेति त्रिःकीर्त्तस्य

रुद्र रुद्रेति रुद्रेति यश्च ब्रूयाद्विचक्षणः ।
कीर्त्तनान्नीलकण्ठस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७१॥

अद्य सर्वपापविमुक्तत्वकामो नीलकण्ठकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

१, ने० पा०, मवगच्छन्ति ।

तत्रैव महादेवेति नामकीर्त्तनस्य—

महादेवेति यो नाम कीर्त्तयेत् संस्मरेदपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥७२॥

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तत्वरुद्रलोकगमनकामो महादेवेति नामकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवइत्यक्षरद्वयसततकीर्त्तने—

यः शिवः शिव इत्येतद् [1]द्व्यक्षरं मन्त्रमभ्यसेत् ।
एकाक्षरं वा सततं स याति परमाङ्गतिम् ॥७३॥

ओम् इत्येकाक्षरम् ।

अद्य परमगतिप्राप्तिकामः सततं शिव इत्यक्षरद्वयकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

ओम् इत्येकाक्षरसततकीर्त्तनेप्येतदेव फलम् ।

तत्रैव शिव इत्यक्षरद्वयसकृदुच्चारणे—

सकृदुच्चरितं येन शिवइत्यक्षरद्वयम् ।
बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥७४॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामः शिव इत्यक्षरद्वयोच्चारणमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य

महादेवेति शब्दोऽस्ति वागस्ति वशवर्त्तिनी ।
तथापि नरके घोरे पतन्तीह किमद्भुतम् ॥७५॥

अद्य घोरनरकपतनाभावकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेतिकीर्त्तनस्य

कोटयो ब्रह्महत्याया अगम्यागमनस्य च ।
सद्यः प्रलयमायान्ति महादेवेति कीर्त्तनात् ॥७६॥

अद्य तात्कालिककोटिसंख्यकब्रह्महननागम्यागमनजन्यपापक्षयकामो महादेवेतिकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति त्रिर्ज्जपे

महादेव महादेव महादेवेति यो जपेत् ।
नित्यं जयो विभूतिश्च मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ॥७७॥

१. ने० पा०, इत्येव ।

अद्य सदातनजयविभूतिमत्वमुक्तिप्राप्तिकामो महादेवेति त्रिर्जपमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव महादेवेति कीर्त्तनस्य—

महादेवेति वाग्वल्ली चतुरक्षरपल्लवा ।
भक्तिसिक्ताफलत्येषा चतुर्वर्गफलान्यहो ॥७८॥

अद्य चतुर्वर्गफलप्राप्तिकामो भक्त्या महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव पुनर्महादेवेति कीर्त्तनस्य—

महादेवेति यस्यास्ते वक्त्रे वर्णचतुष्टयम् ।
चतुर्भिराश्रमैर्वेदैः पुरुषार्थैः स युज्यते ॥७९॥

अद्य चतुराश्रमचतुर्वेदचतुःपुरुषार्थयोगित्वकामो महादेवेति कीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अथ देवीपुराणे महादेवेतिनित्यकीर्त्तनस्य—

वेदैरधीतैः किन्तस्य किं तीर्थैः सेवितैरपि ।
यो मर्त्यश्च पुनर्ब्रूते महादेवेति नित्यशः ॥८०॥

अद्यादि वहुवेदाध्ययनबहुतीर्थसेवनजन्यफलसमफल प्राप्तिकामो नित्यशः महादेवेति कीर्त्तनमहं करिष्ये ।

अथ यात्रा

भविष्यपुराणे—

सुदूरमपि गन्तव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥८१॥
विश्वजिन्न्यायात् स्वर्गः फलम्—

अद्य स्वर्गप्राप्तिकामया शिवक्षेत्रं प्रति यात्रामहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मोत्तरे-शिवाश्रमतीर्थगमने—

ये शिवाश्रमतीर्थानि श्रद्धया यान्ति मानवाः ।
ते क्रीडन्ति महाभोगैर्दिव्यैः शिवपुरे नराः[1] ॥८२॥

---

१ ने० पा०, तथा ।

अद्य शिवपुराधिकरणकवहुदिव्यमहाभोगसहितात्मक्रीडनकामः शिवक्षेत्र तीर्थानि प्रति यात्रामहङ्करिष्ये ।

अथदर्शनफलम्

नन्दिपुराणे—

गङ्गापुष्करकेदारनैमिषादिष्वनेकशः ।
तीर्थस्नानस्य यत्पुण्यं शिवं दृष्ट्वैव तल्लभेत् ॥८३॥

अद्य गङ्गापुष्करकेदारनैमिषाद्यनेकतीर्थनिकस्नानजन्यपुण्यसमतात्कालिकपुण्य-प्राप्तिकामो भगवनः शिवदर्शमहङ्करिष्मे ।

लिङ्गपुराणे पूजित महादेवदर्शनस्य

पूजितं वा महादेवं पूज्यमानमथापि वा ।
दृष्ट्वा प्रयाति वै मर्त्यो ब्रह्मलोकमसंशयम् ॥८४॥

अद्य ब्रह्मलोकप्राप्तिकामः पूजितमहादेवदर्शनमहङ्करिष्ये ।

पूज्यमानदर्शनेनेपीयमेव कामना ।

नन्दिपुराणे लिङ्गदर्शनस्य—

शिवलिङ्गं महापुण्यं यः प्रपश्यति मानवः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥८५॥

अद्य सर्वपापविमुक्तिरुद्रलोकगमनकामः शिवलिङ्गदर्शनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मोत्तरे सम्पूज्यमानशिवदर्शनस्य

सम्पूज्यमानं विधिना यः पश्येच्छ्रद्धया शिवम् ।
सोऽपि योगफलं कृत्स्नं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥८६॥

अद्याशेषयोगफलसमफलप्राप्तिकामः सम्पूज्यमानशिवदर्शनमहङ्करिष्ये ।

तत्र वार्च्चितशिवदर्शनस्य

अर्च्चितं शङ्करं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥८७॥

अद्य सर्वपापविमुक्तिकामनयाऽच्चितशङ्करदर्शनमहङ् करिष्ये ।

अथस्पर्शनफलम्

शिवधर्म्मे—

शिवलिङ्गं महापुण्यं सर्वदेवैर्नमस्कृतम् ।
यः स्पृशेदपि पाणिभ्यां न स पापैः प्रलिप्यते ॥८८॥

अद्य सर्वपापाऽप्रलिप्तत्वकामः पाणिभ्यां शिवलिङ्ग स्पर्शनमहं करिष्ये ।

अथालयसम्मार्जनफलम्

नन्दिकेश्वरे—

दृष्ट्वा परिहरन् जन्तून् मार्जन्या मृदुसूक्ष्मया ।
शनैः सम्मार्ज्जनं कुर्य्याच्चान्द्रायणफलं लभेत् ॥८९॥

अद्य चान्द्रायणफलसमफलप्राप्तिकामनया दृग्गोचरजन्तून् परिहरन् मृदुसूक्ष्ममार्ज्जन्या भगवतः शिवस्यालयसम्मार्ज्जनमहङ् करिष्ये ।

अथ रोगार्त्तसद्यःप्रसूतजीर्णवन्ध्येतरगवी शुभस्थानाकाशान्यतरस्थानपतितजन्तुवर्जितोपर्यधःपतितव्यतिरिक्तगोमयवस्त्रपूततोयकरणकलेपनस्य ।

भविष्यपुराणे —

नाहार[1][2]रसजीर्णाया वन्ध्याया न च भारत ।
रोगार्त्तनवसूताया न गोर्गोमयमाहरेत् ॥९०॥

खसंस्थं गोमयं गृह्यस्थाने वा पतितं शुभे[3] ।
उपर्य्यधश्च सन्त्यज्य प्रत्यग्रं जन्तुवर्ज्जितम् ॥९१॥

वस्त्रपूतेन तोयेन यः कुर्य्यादुपलेपनम् ।
पश्यन् परिहरन् जन्तून् चान्द्रायणफलं लभेत् ॥९२॥

---

१ ने० पा० नारीति ।
२ तत्रैव, आहार ।
३ तत्रैव, शुभम् ।

आहाररसजीर्णाया अजीर्ण[1]क्षुधाया: प्रत्यग्रमपर्य्युषितम् ।

अद्य चान्द्रायणफलसमफलप्राप्तिकामो दृग्गोचरजन्तून् परिहरन् भगवतः शिवस्यायतने गोमयोदकाभ्यामुपलेपनमहं करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सम्मार्जनादौ--

सम्मार्ज्जनादि यः कुर्यान्नरः कर्म्म शिवालये ।
सोऽपि मोहा[2]त्यजेत् ज्ञानं प्राप्यान्ते शान्तिमाप्नुयात् ।।९३।।

आदिपदादुपलेपनम् ।

अद्य देहत्यागानन्तरज्ञानहेतुकशान्तिप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनादिकर्म्माहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे पक्षव्यापकसम्मार्जनाञ्जनयो:—

नैरन्तर्य्येण यः कुर्य्यात् पक्षं सम्मार्जनाञ्जनम् ।
युगकोटिशतं साग्रं शिवलोके महीयते ।।९४।।

अञ्जनमुपलेनम् ।

अद्यादि पक्षं व्याप्य प्रत्यहं साग्रयुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनाञ्जनकर्म्माहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे पक्षव्यापकसम्मार्जनस्य

नैरन्तर्य्येण यः कुर्य्यात् पक्षं सम्मार्ज्जनं[3] जनः ।
युगकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ।।९५।।
तस्यान्ते स चतुर्वेदः स्वरूपः प्रियदर्शनः ।
आढ्यः सर्वगुणोपेतो राजा भवति धार्म्मिकः ।।९६।।

अद्यादि पक्षं व्याप्य प्रत्यहं दिव्ययुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वानन्तरं चतुर्वेदित्व-स्वरूपत्व-प्रियदर्शनत्वाढ्यत्व-सर्वगुणोपेतत्व-धार्म्मिक-राजत्वकामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनमहङ्करिष्ये ।

---

१ मूले अजिर्न्नं ।
२ ने० पा०, देहात्यमे ।
३ तत्रैव, सम्मार्ज्जनाञ्जनम् ।

अथ स्कन्दपुराणे संवत्सरसम्मार्जनस्य ।

सम्मार्ज्जनन्तु यः कुर्य्यात् संवत्सरमनुव्रतः ।
विदधाति शुभाँल्लोकान् नित्यं तस्य ध्रुवं जयः ॥९७॥

संवत्सरमिति अत्यन्तसंयोगे द्वितीया अनुव्रतः कृतसंङ्कल्पःजयः प्रतियोग्य-पेक्षयोत्कर्षलाभः। नित्यं सर्वदा। विदधाति शिव एव ॥

अद्यादि संवत्सरं व्याप्य प्रत्यहं बहुशुभलोकावाप्तिसार्वकालिकजय-प्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यायतने सम्मार्ज्जनमहङ्करिष्ये ॥

अथ निर्म्माल्यापनयनम्

भविष्यपुराणे—

शिवमाल्यापनयनं पूजान्ते भूप्रमार्जनम् ।
एकैकन्तु भवेत्पुण्यं चान्द्रायणफलेन तु ॥९८॥

पूजान्ते पूजोपक्रमे[1] अन्तशब्दस्य समीपवचनत्वात्। माल्यं निर्म्माल्यम्। अद्य चान्द्रायणफल समफलप्राप्तिकामः शिवनिर्माल्यापनयनमहङ्करिष्ये।

नन्दिकेश्वरे चिरपर्य्युषित शिवमाल्यापनयनस्य—

चिरपर्य्युषितं माल्यं शिवस्यापनयेत्तु यः ।
गोसहस्रफलं तस्य भवतीति न संशयः ॥९९॥

अद्य गोसहस्रदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया चिरपर्य्युषितशिवमाल्याप-नयनमहङ्करिष्ये।

अथाभ्यङ्गादौ द्रव्यमात्रा[2]दिपरिभाषा

तत्र लिङ्गं प्रकृत्य भविष्यपुराणे—

स्नाने पलशतं ज्ञेय[3]मभ्यङ्गे पञ्चविंशतिम् ।
पलानान्तु सहस्रे द्वे महास्नानं प्रकीर्त्तितम् ॥१००॥

---

१. ने० पा०, पूजोपक्रमः।
२. तत्रैव, मानादि।
३. तत्रैव, देय।

लिङ्गपुराणे—

पञ्चकृष्णलकोमाषस्तैश्चतुःषष्टिभिः पलम् ।
पञ्चविंशतिभिस्तैस्तु पलैरभ्यङ्ग इष्यते ॥१०१॥

स्नानं पलशतेनैव सर्वेषां परिकीर्त्तितम् ।
पलानान्तु सहस्रे द्वे महास्नानं प्रकीर्त्तितम् ॥१०२॥

घृततैलदधिक्षीरैरिक्षोश्चैव रसेन तु ।
नीरेण मधुना स्नानं तस्य मानमिदं कृतम् ॥१०३॥

वैदिकं पञ्चगव्यन्तु मानितं वेदमानितः[1] ।
गोमूत्रैकपलं दद्यात् द्विपलं गोमयं स्मृतम् ॥१०४॥

क्षीरं सप्तपलं दद्याद् दधि त्रिपलमेव च ।
घृतमेकपलं दद्यात् पंञ्चगव्यमिदं विदुः ॥१०५॥

पञ्चामृतं तदा ज्ञेयं प्रत्येकन्तु पलं पलम् ॥१०६॥

कालिकापुराणे—

पञ्चविंशपलं लिङ्गे[2] अभ्यङ्गं कारयेदथ ।
शिवस्य सर्पिषा स्नानं प्रोक्तं पलशतेन तु ॥१०७॥

तावता मधुना चैव दध्ना चैव पुनस्ततः ।
तावतैव हि क्षीरेण पञ्चगव्येन वा पुनः ॥१०८॥

शिवस्य शिवलिङ्गस्य, तावता पलशतेन च[3] ।
तदेवं लिङ्गस्नपने पलशतं व्यवस्थितम् ॥१०९॥

बहुपुराणसंवादात्, ब्रह्मपुराणीयमष्टोत्तरपलशतं सकलदेवप्रतिमाविषयं प्रतिमामधिकृत्य कथनात् ।

१. ने० पा०, वेदमानतः ।
२ तत्रैव, लिङ्ग ।
३. मूलमे 'च' पा० नहि अछि, ने० पा० मे पाठ अछि ।

तथा च ब्रह्मपुराणे—

देवानां प्रतिमा यत्र घृताभ्यङ्गक्षमा भवेत् ।
पलानि तत्र देयानि श्रद्धया पञ्चविंशतिः ॥११०॥
अष्टोतरं पलशतं स्नाने देयन्तु सर्वदा
द्वे सहस्रे पलानान्तु महास्नाने तु संख्यया ।
दातव्यं येन सर्वासु दिक्षु निर्याति तद्घृतम् ॥१११॥

देवाङ्गलग्नघृतादेः प्रतिपत्तिमाह—

ब्रह्माङ्गलग्नं विप्रेभ्यो वैष्णवञ्च प्रदीयते ।
रुद्राङ्गलग्नमग्नौ च दहेत् सर्वन्तु तत्क्षणात् ॥११२॥

शिष्टेभ्यस्त्वथ देवेभ्यो यत्तद्धीनेषु निक्षिपेत् ।
अ[1]सञ्चरे च नैर्ऋत्यां निर्म्माल्यं निक्षिपेद्बुधः ॥११३॥

अथ घृताभ्यङ्गफलं भविष्यपुराणे—

वर्षकोटिसहस्रेण यत्पापं समुपार्ज्जितम् ।
घृताभ्यङ्गेन लिङ्गस्य दहेत्सर्वं न संशयः ॥११४॥

अद्य वर्षकोटिसहस्रमुपार्ज्जितपापक्षयकामो घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमभ्यञ्जयिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये घृताभ्यङ्गस्य—

घृतस्नानं घृताभ्यङ्गः सघृतो गुग्गुलुस्तथा ।
एतच्छिवाय दातव्यं सदैव वरमिच्छता ॥११५॥

वरो देवतादेरभीप्सितोऽर्थः

अद्य वरप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य घृतेनाभ्यञ्जनमहङ्करिष्ये ।
घृताभ्यङ्गे शास्त्रीयपलम् २५ ।

१. ने० पा०, सञ्चरे च ।

अथोद्वर्त्तनम्

भविष्यपुराणे

घृताभ्यङ्गे घृतस्नाने यत्नाल्लिङ्गं विरुक्षयेत् ।
यवगोधूमजैश्चूर्णैः कषायैर्गन्धयोजितैः ॥११६॥

कषायैर्लोध्रादीनां गन्धः सुरभिद्रव्यम् —

सुखोष्णेनाम्भसा चा[1]पि स्नापयेत्तदनन्तरम् ।
घर्षयेद्बिल्वपत्रेण तद्वत्पीठ[2]ञ्च शोधयेत् ॥११७॥

दशधेनुसहस्राणि यद्दत्वा लभते फलम् ।
तत्फलं लभते सर्वं लिङ्गस्योद्वर्त्तने कृते ॥११८॥

अद्य दशधेनुसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामो यवगोधूमचूर्णैः सुरभिद्रव्य-संयुक्त[3]लोध्रादिकषायैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गोद्वर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अनन्तरं सुखोष्णेन वारिणा स्नापयित्वा बिल्वपत्रैर्निघृष्य पीठं विशोधयेत् ।

अथस्नपनम्

नन्दिकेश्वरे—

लिङ्गमूर्त्तेर्महेशस्य शिवस्य परमेष्ठिनः ।
स्नानकाले प्रकुर्वीत जयशब्दादिमङ्गलम् ॥११९॥

अथ स्कन्दपुराणे जलस्नपनस्य

स्नापयित्वाम्भसा लिङ्गं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।१२०।

अद्य सर्वपापविमुक्तिकामोऽम्भसा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणे[4] दुग्धस्नपनस्य

अयुतं यो गवां दद्याद्दोग्ध्रीणां वेदपारगे ।
हेमवस्त्रादियुक्तानां क्षीरस्नानस्य यत्फलम् ॥१२१॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकहेमवस्त्रादियुतायुतादोग्ध्रीगवीदानजन्य-फलसमफलप्राप्तिकामः क्षीरेण भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

---

१. ने० पा०, वापि ।
२. तत्रैव, तत्पीठञ्चैव ।
३. तत्रैव संसक्तं ।
४. तत्रैव, भविष्यपुराणे ।

शिवपुराणे धारोष्णपयःस्नपने—

सकृद्धारोष्णपयसा यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
राजतेन विमानेन शिवलोकं स गच्छति ॥१२२॥

अद्य राजतविमानकरणकशिवलोकप्राप्तिकामो धारोष्णपयसा भगवत शिवस्य लिंगमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव दुग्धस्नपनस्य ।

क्षीरस्नानं तु यः कुर्य्यान्मम भक्तश्च मानवः ।
वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयः ॥१२३॥

अद्य वाजपेययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया दुग्धेन भगवतः शिवस्य लिंगम स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणीयाढकपरिमितदुग्धस्नपनस्य—

सकृदाढकेन पयसा यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
राजतेन विमानेन सोमलोकं स गच्छति ॥१२४॥

'आढकश्चतुःषष्टिपलानि' ।

अद्य राजतविमानकरणकसोमलोकगमनकामः आढकपरिमितेन पय भगवतः शिवस्य लिंगमहं स्नपयिष्ये—

लिङ्गपुराणीयक्षीरस्नपनस्य—

दशापराधांस्तोयेन क्षीरेण च शतं क्षमेत् ॥१२५॥

अद्य शिवविषयक-स्वीयापराधशतक्षान्तिकामनया क्षीरेण भगवन्तं शिवम स्नपयिष्ये ।

स्कन्दपुराणे त्रिदुग्धस्नपनस्य—

क्षीरेण यो मां सततं स्नापयेच्च त्रिरुद्यतः ।
अपराधसहस्रन्तु क्षमे तस्याहमागसः ॥१२६॥

अद्य शिवविषयकस्वीयापराधसहस्रक्षान्तिकामनया दुग्धेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं त्रिःस्नपयिष्ये ॥

संवत्सरं दुग्धस्नपनस्य—

संवत्सरन्तु यः कुर्यात् क्षीरेण स्नपनं शुचिः ।
गाणपत्यञ्च लभते वल्लभत्वञ्च नित्यशः ॥१२७॥

वल्लभत्वञ्चेत्यत्र समे[1] इति सिंहावलोकितन्यायेनानुषज्यते संवत्सरं वर्षं प्रतिदिनमित्यर्थः ।

अद्यादि संवत्सरं व्याप्य प्रत्यहं गाणपत्यप्राप्तिसार्वकालिकशिववल्लभत्व-कामनया दुग्धेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ॥

अथ शिवपुराणीयदधि स्नपनस्य—

दध्ना तु स्नापयेलिङ्गं सकृद्भक्त्या तु यो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥१२८॥

अद्य सर्वपापविमुक्ति[2] विष्णुलोकमहितत्वकामनया दध्ना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्यपुराणीय दधिस्नपनस्य—

स्नाप्य दध्ना सकृल्लिङ्गं शिवलोके महीयते ॥१२९॥

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो[3] दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गस्नपन-महङ्करिष्ये ॥

शिवपुराणे दधिस्नपनस्य—

स्नाप्य दध्ना सकृल्लिङ्गं विष्णुलोके महीयते ॥१३०॥

अद्य विष्णुलोकमहितत्वकामो दध्ना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ॥

---

१. ममेति शुद्धपाठः ।
२. ने० पा०, पृ० ९ विमुक्तिक ।
३. तत्रैव, कामनय ।

तत्रैव दधिस्नपनस्य—

स्नपन यस्तु दध्ना मे करोत्यविमना नरः ।
सौत्रामणेस्तु यज्ञस्य फलं तस्मै वदाम्यहम्[१] ॥१३१॥

अद्य सौत्रामणियज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गम् स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे दधिस्नपनस्य—

सहस्रं क्षमते दध्ना ॥१३२॥

अद्य शिवविषयकस्वीयापराधसहस्र-क्षान्तिकामनया दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्यपुराणीयघृतस्नपनस्य—

कल्पकोटिसहस्रैस्तु यत्पापं समुपार्ज्जितम् ।
घृतस्नानेन तत्पुण्यं दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥१३३॥

अद्य कल्पकोटिसहस्रसमुपार्ज्जितपापक्षयकामो घृतेन शिवलिङ्गम् स्नपयिष्ये ।

शिवपुराणे कपिलाघृतस्नपनस्य—

कापिलेन घृतेनेह स्नपनं यः करोति मे ।
सोऽश्वमेधफलं प्राप्य गवां लोके महीयते ॥१३४॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिपूर्वकगोलोकमहितत्वकामः कपिलाघृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे घृतस्नपनस्य—

इहामुत्रकृतं पापं घृतस्नानेन देहिनाम् ।
क्षमते शङ्करो यस्मात्तस्मात् स्नपनं समाचरेत् ॥१३५॥

अद्य ऐहिकामुष्मिकपापशान्तिकामनया घृतेन भगवन्तं शङ्करमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव घृतस्नपयिष्ये—

घृतेनाप्ययुतं क्षमम् ॥१३६॥

१. ने० पा०, ददाम्यहम्

शिवधर्म्मीयमासव्यापकघृतस्नपनस्य—

नैरन्तर्य्येण यो मासं घृतस्नपनं समाचरेत् ।
एकविंशतिकुलोपेतो न च्यवेदैश्वरात् पदात् ॥१३७

अद्यादि मासं व्याप्य प्रत्यहमेकविंशतिकुलोपेत स्वीयैश्वरपदाप्रच्यवनकामन घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ शिवधर्म्मे मधुस्नपनस्य

मधुना स्नापयेल्लिङ्गं सकृद्भक्त्या तु यो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो वह्निलोके महीयते ॥१३८

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तिवह्निलोकमहितत्वकामनया मधुना भग शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये मधुस्नपनस्य—

मधुना स्नापयित्वा तु शिवलोके महीयते ॥१३९

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो मधुना शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्यपुराणीयेक्षुरसस्नपनस्य

स्नानमिक्षुरसेनेह यो लिङ्गे सकृदाचरेत् ।
लभेद्विद्याधरं लोकं सर्वकामसमन्वितः ॥१४०

अद्य सर्वकामसमन्वितात्मविद्याधरलोकप्राप्तिकाम इक्षुरसेन भग शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ भविष्ये सर्वौषधिस्नपनस्य

सर्वौषधीभिर्यो लिङ्गं सकृत्स्नापयते नरः ।
काञ्चनेन विमानेन ब्रह्मलोके महीयते ॥१४१

अद्य काञ्चनविमानकरणकब्रह्मलोकमहितत्वकामः सर्वौषधीभिर्भग शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

सर्वौषध्यः परिभाषिताः--

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ।
शठीचम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः, इति ॥१४

[विद्यापति]

मुरा–मोटस्वर इति प्रसिद्धम् । मांसी—जटांमसी । शैलेयं—मूल
प्रसिद्धम् । रजनीद्वयम्—हरिद्रा-दारुहरिद्रे । शठी[1]-कञ्चोर इति प्रसिद्धा ।
अथ लैङ्गे ।

समन्त्रककुशवारियुतकपिलापञ्चगव्यकरणकब्राह्मनामकस्नपनस्य—

कपिला पञ्चगव्येन कुशवारियुतेन च ।
स्नापयेन्मन्त्रपूतेन ब्राह्मं स्नानं हि तत्स्मृतम् ॥१४

एकाहमपि यो लिङ्गे ब्राह्मस्नानं समाचरेत् ।
विधूय सर्वपापानि रुद्रलोके महीयते ॥१४

[विद्यापति]

मन्त्रपूतेन पञ्चगव्यकरणमन्त्राभिमन्त्रितेन ।

पञ्चगव्यकरणं—मत्स्यपुराणे

सावित्र्यादाय गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम् ।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधि[2]क्रावुधृच्चा दधि ॥१४

तेजोऽसीति घृतं तद्वद्देवस्यत्वा कुशोदकम् ।
कुशमिश्रं जपेद्विद्वान् पञ्चगव्यं भवेत्ततः ॥१४

[विद्यापति]

मन्त्र आपोहिष्ठा मन्त्रः । शिवप्रकाशकमन्त्रो वा स्नपने योज्य इत्येके ।
अद्य सर्वपापविमुक्तिपूर्वकरुद्रलोकमहितत्वकामो भगवतः शिवस्य लि
ब्राह्मस्नपनमहङ्करिष्ये ।

---

१ मूले शची ।
२ ने० पा०, दधिक्राण्ण ।; दधिक्रे ति समीचीन पाठ अछि ।

तत्रैव दधिक्षीरयुतकपिलापञ्चगव्यकरणकस्नाने—

कपिलापञ्चगव्येन दधिक्षीरयुतेन च ।
स्नानं शतगुणं प्रोक्तमितरस्मान्न संशयः ॥१४७॥

अद्य इतरस्नानशतजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामनया दधिक्षीरयुक्तकपिलापञ्चगव्येन भगवतः शिवस्य स्नपनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव पञ्चगव्यस्नपनस्य—

यः कुर्यात् पञ्चगव्येन शिवे स्नानं समाहितः ।
इन्द्रलोके वसेद्देवि यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥१४८॥

अद्य चतुर्दशेन्द्रसमयावच्छिन्नेन्द्रलोकाधिकरणकवासकामः पञ्चगव्येन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

अथ स्कन्दपुराणे सुगन्धितैलस्नपनस्य

सुगन्धेन च तैलेन स्नपनं यः करोति मे ।
अतिरात्रफलं तस्मै ससौगन्ध्यं ददाम्यहम् ॥१४९॥

[विद्यापति]

'ससौगन्ध्यं शोभनगन्धशरीरसहितम्' ।

अद्य ससौगन्ध्यातिरात्रयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः सुगन्धितैलेन भगवतः शिवस्य स्नपनमहङ्करिष्ये ।

भविष्ये हस्तयन्त्रोद्भवतिलतैलस्नपनस्य—

स्नापयेत्तिलतैलेन हस्तयन्त्रोद्भवेन च ।
श्वेतपीतकपिष्टैर्वा वायुलोके महीयते ॥१५०॥

[विद्यापति]

'पिष्टैर्वेत्यत्र स्नापयेदित्यनुषज्यते' ।

अद्य वायुलोकमहितत्वकामो हस्तयन्त्रोद्भवतिलतैलेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

'श्वेतपीतकपिष्ट[1]योरन्यतरस्नपनेऽप्येतदेव फलम्'

---

१. ने० पा० पिष्ट ।

तत्रैव सितभस्मस्नपनस्य

सितेन भस्मना स्नाप्य सकृल्लिङ्गं प्रमोदते ।
चन्द्रांशुनिर्म्मलः श्रीमान् शिववत् सोममण्डले ॥१५१॥

अद्य सोममण्डलाधिकरणकचन्द्रांशुनिर्मलश्रीमदात्मशिवहर्षतुल्यहर्षका सितभस्मना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

अथ तोयस्नपनस्य

भविष्ये चन्दनतोयस्नपनस्य—

यस्तु चन्दनतोयेन स्नपयेत् सकृदीश्वरम् ।
गन्धर्वलोकमाप्नोति गन्धर्वैश्चापि पूज्यते ॥१५२॥

अद्य गन्धर्वलोकप्राप्तिबहुगन्धर्वपूज्यत्वकामश्चन्दनोदकेन भगवन्तमीश्वरम स्नपयिष्ये ।

तत्रैव फलोदकस्नपनस्य—

फलोदकेन यो लिङ्गं सकृत् स्नपयते नरः ।
उत्सृज्य पापकलिलं पितृलोके महीयते ॥१५३॥

अद्य पापकलिलोत्सर्गपूर्वकपितृलोकमहितत्वकामः फलोदकेन शिवलिङ्गमह स्नपयिष्ये ।

तत्रैव पुष्पोदक[1]स्नपनस्य—

पुष्पोदकेन गायत्रं कौवेरं हेमवारिणा ।
रत्नोदकेन[2] वै रौद्रं लोकं प्राप्य स मोदते ॥१५४॥

अद्य गायत्रलोकप्राप्तिकामः पुष्पोदकेन शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

---

१. ने० पा० पुष्पोदकेन ।

२. तत्रैव, रत्नोदकेन ।

हेमवारिस्नपनस्य ।

अद्य कौबेरलोकप्राप्तिकामो हेमवारिणा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

रत्नोदकस्नपनस्य ।

अद्य रुद्रलोकप्राप्तिपूर्वकतल्लोकाधिकरणकहर्षकामनया रत्नोदकेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव कर्पूरागुरुतोयस्नपनस्य—

कर्पूरागुरुतोयेन यो लिङ्गं स्नापयेत् सकृत् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा शिवलोके महीयते ॥१५५॥

अद्य सर्वपापविशुद्धात्मकत्वशिवलोकमहितत्वकामः कर्पूरागुरुतोयेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्मे शीतवारिस्नपनस्य ।

पितॄनुद्दिश्य यो लिङ्गं स्नापयेच्छीतवारिणा ।
तृप्ताः स्वर्गं गमिष्यन्ति पितरो नरकादपि ॥१५६॥

अद्य बहुपितृतृप्तिबहुपितृस्वर्गप्राप्तिकामः शीतेन वारिणा भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव वस्त्रपूततोयेन स्नपनस्य—

वस्त्रपूतेन तोयेन यो लिङ्गं स्नापयेन्नरः ।
सर्वकामसुतृप्तात्मा वारुणं लोकमाप्नुयात् ॥१५७॥

अद्य सर्वकामसुतृप्तात्मकत्ववरुणलोकप्राप्तिकामो वस्त्रपूततोयेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये वस्त्रपूततोयस्नपनस्य—

वस्त्रपूतेन तोयेन स्नापयेत् सकृदीश्वरम् ।
शर्वलोकमवाप्नोति गन्धर्वैश्चापि पूज्यते ॥१५८॥

[विद्यापति]

शर्वः = शिवः

अद्य शर्वलोकावाप्तिबहुगन्धर्वपूज्यत्वकामनया वस्त्रपूततोयेन भगवन्तमीश्वरमहं स्नपयिष्ये ।

शिवपुराणे धूपितजलस्नपनस्य—

जलेन साधिवासेन स्नापयेद्यो हि मां नरः ।
अग्निष्टोमफलं तस्मै ददामि कमलानने ॥१५९॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो धूपितजलेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

शिवधर्म्मे कुशोदकस्नपनस्य —

कुशोकदकेन यो लिङ्गं सकृत्स्नापयते नरः ।
काञ्चनेन विमानेन ब्रह्मलोके महीयते ॥१६०॥

अद्य काञ्चनविमानकरणकब्रह्मलोकमहितत्वकामः कुशोदकेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव पाटलोदकस्नपनस्य —

पाटलोत्पलपद्मानि करवीराणि सर्वदा ।
स्नानतोयेषु योज्यानि स्थिराणि सुरभीणि च ॥१६१॥

एषामेकतमं स्नानं यः कुर्याद्भक्तितः शिवे ।
विधूय पापकलिलं शिवलोके महीयते ॥१६२॥

[विद्यापति]

'अन्यान्यपि स्थिरसौरभाणि' ।

अद्य पापकलिलविधूननपूर्वक शिवलोकमहितत्वकामः पाटलोदकेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

उत्पलपद्मकरवीरतोयान्यतमस्नपनेप्येतदेवफलम् ।

नन्दिकेश्वरे शिवमन्त्राष्ट[1]शतजप्तविमलाम्भः स्नपनस्य—

मन्त्राष्टशतजप्तेन विमलेनाम्भसा शिवम् ।
स्नापयित्वा सकृद्भक्त्या शिवलोके महीयते ॥१६३॥

[विद्यापति]

मन्त्राष्टशतजप्तेन—अष्टोत्तरशतवारजप्तमन्त्राभिमन्त्रितेन ।

मन्त्रः शिवप्रकाशकः स च नमःशिवायेत्यादिकः ।

अद्य शिवलोकमहितत्वकामो मन्त्राष्टशतजप्तेन विमलाम्भसा शक्तं शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

तत्रैव तोयस्नपनस्य—

दशापराधांस्तोयेन ॥१६४॥

अद्य शिवविषयकस्वीयदशापराधक्षान्तिकामस्तोयेन भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

अथ स्नानभाजनफलम्

स्कन्दपुराणे—

मृत्कुम्भात्ताम्रजैः कुम्भैः स्नानं शतगुणोत्तरम् ।
रौप्यैर्लक्षतरं प्रोक्तं हेमैः कोटिगुणोत्तरम् ॥१६५॥

---

१. ने० पा० शिवमन्त्रशतजप्त ।

तत्र ताम्रघटस्य—

अद्य मृत्कुम्भकरणकस्नानशतगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनया ताम्रकुम्भेन शिवस्य पयसा स्नपनमहं करिष्ये ।

रौप्यघटस्य—

अद्य मृत्कुम्भकरणकलक्षस्नानफलोत्तरफलप्राप्तिकामो रौप्यघटेन भगवतः शिवस्य पयसा स्नपनमहङ्करिष्ये ।

हेमघटस्य[1]—

अद्य मृत्कुम्भकरणककोटिस्नानफलोत्तरफलप्राप्तिकामो हेमघटेन भगवतः शिवस्य स्नपनमहङ्करिष्ये ।

वृहन्नन्दिकेश्वरे गडुकस्नपनस्य—

सामान्यवारिणा दत्ते गडुके शिवमूर्द्धनि ।
फलं शतगुणं प्रोक्तं सहस्रं जाह्नवीजलैः ॥१६६॥

अद्य तोयकरणकशिवस्नानशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो गडुकेनाम्भसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

गडुककरणकगङ्गाम्भसा स्नपनस्य—

अद्य तोयकरणकशिवस्नानसहस्रजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो गडुकेन गङ्गाम्भसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

लिङ्गपुराणे ग्रीष्मकालिकपयोधारापातने—

विचित्रदारुयन्त्रस्थैः कुम्भैर्ग्रीष्मे शिवोपरि ।
पातयेद्यः पयोधारां स ब्राह्मं पदमश्नुते ॥१६७॥

अद्यादि ब्रह्मपदप्राप्तिकामोऽस्मिन् ग्रीष्मे भगवतः शिवस्योपरि विचित्रदारुयन्त्रस्थबहुकुम्भकरणकपयोधारामहं पातयिष्ये—

नन्दिकेश्वरे स्नानकालीनत्रिसन्ध्या[2]गाननृत्यमुखवाद्यानामन्यतमकरणे—

स्नानकाले त्रिसन्ध्यन्तु यः कुर्याद्गेयवादनम् ।
नृत्यं वा मुखवाद्यं वा तस्य पुण्यफलं श्रृणु ॥१६८॥

---

१. तत्रैव, सुवर्णघटस्य ।
२. ने० पा०, त्रिसन्ध्य ।

यावदेतानि कुरुते गेयनृत्यादिवादनम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥१६९॥

अद्य युगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया भगवतः शिवस्याग्रे नृत्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

एवं गानमुखवाद्ययोरप्येतदेव फलम् ।

अथ पूजाकाले त्रिसन्ध्यनृत्यादिफलम्

स्कन्दपुराणे—

पूजाकाले त्रिसन्ध्यञ्च कुर्य्याद्दिवस्य वादनम् ।
नृत्यं वा मुखवाद्यं वा सोऽपीश्वरपदं लभेत् ॥१७०॥

अद्य ईश्वरपदप्राप्तिकामस्त्रिसन्ध्यं भगवतः शिवस्य पूजाकाले नृत्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

वाद्यवादनमुखवाद्ययोरप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्म्मे मुखवाद्यस्य—

भूमिदानेन यत्पुण्यं कन्यादानेन यत्फलम् ।
मुखवाद्येन तत्पुण्यमुभयं लभते नरः ॥१७१॥
तदेव पुण्यं गीतस्य नृत्यस्य च विशेषतः ।
तदेव जयशब्दस्य तदेव तालकध्वनेः ॥१७२॥

अद्य भूमिदान-कन्यादानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्याग्रे मुखवाद्यमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

नृत्यगीत-जयशब्द-तालकध्वनीनामन्यतमकरणेऽप्येतदेव फलम् ।

लिङ्ग[1]पुराणे गीतस्य—

सर्वेषामेवपुण्यानामस्ति संख्या यशस्विनि ।
ममाग्रे गीयते येन तस्य संख्या न विद्यते ॥१७३॥

अद्यासंख्येयपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्याग्रे गानमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव गानस्य—

न घृते तादृशी प्रीतिर्न क्षीरे न च गुग्गुलौ ।
यादृशी चैत्र गान्धर्वे मम प्रीतिर्वरानने ॥१७४॥

अद्य घृतक्षीरगुग्गुलुदानजन्यशिवप्रीत्यधिकशिवप्रीतिकामो भगवतः शिवस्याग्रे गानमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पाठ, शिवपुराणे ।

[विद्यापति]

वीणादिवादनेप्येतदेव फलम् ।

याज्ञवल्क्ये गानस्य—

गीतज्ञो यदि गीतेन[1] नाप्नोति परमं पदम् ।
रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते[2] ॥१७५॥

अद्य परमपदप्राप्तिकामः रुद्रानुचरभवनपूर्वकरुद्रसहहर्षकामो भगवतः शिवस्य गानमहङ्करिष्ये

अथ पूजाफलम्

भविष्ये महेशार्च्चनस्य ।

अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ।
महेशार्च्चनपुण्यस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥१७६॥

अद्य षोडशगुणाश्वमेधबहुसहस्रराजसूयबहुशतपुण्याधिकपुण्यप्राप्तिकामः महेशार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

कौर्म्मे महादेवार्चनस्य ।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं नित्यमेव वा ।
येऽर्चयन्ति महादेवं ते रुद्रा नात्र संशयः ॥१७७॥

[विद्यापति]

शक्त्यपेक्षया फलभूमापेक्षया वा विकल्पः ।

अद्य रुद्रत्वभवनकामनया एककालं द्विकालं त्रिकालं वा महादेवान् महङ्करिष्ये ।

नित्यपूजाफलम्[3]

अद्यादिरुद्रभवनकामो यावज्जीवं प्रत्यहं महादेवपूजामहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

अग्निहोत्रं त्रिवेदाश्च यज्ञाश्च बहुदक्षिणाः ।
शिवलिङ्गार्चनस्यैते कोट्यंशेनापि नो समाः ॥१७८॥

अद्य अग्निहोत्रित्व-त्रिवेदित्व-बहुदक्षिण-बहुयज्ञयायित्वफलकोटिगुणाधिक प्राप्तिकामः शिवलिङ्गमर्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा० याज्ञवल्क्यस्मृति, श्लोक सं० ११६, योगेन पाठ अछि ।

२ तत्रैव टीका—गीतज्ञो यदि कथंचिद्योगेन परमं पदं नाप्नोति रुद्रस्य सचिवो भूत्वा तेनैव सह मोदते-क्रीडति ।

३ तत्रैव नित्य पूजायाम् ।

महाभारते विरूपाक्षपूजनस्य—

छित्वा भित्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् ।
यजेद्देवं विरूपाक्षं न स पापेन लिप्यते ॥१७९॥

अद्य बहुप्राणिकर्म्मक-छेदन-भेदन-जगद्धननजन्यपापालिप्तत्वकामो भग विरूपाक्षमहं पूजयिष्ये ।

लिङ्गपुराणे शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

अनेकजन्मसाहस्रं भ्राम्यमाणस्तु योनिषु ।
कः समाप्नोति वै मुक्तिं लिङ्गार्च्चनमृते नरः ॥१८०॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामः शिवलिङ्गार्चनमहं करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य

भवनानि मनोज्ञानि विचित्राभरणाः स्त्रियः ।
धनं वा तुष्टिपर्य्यन्तं शिवस्यार्च्चनतो लभेत् ॥१८१॥

अद्य मनोज्ञबहुभवनविचित्राभरणबहुस्त्रीलाभकामः सन्तोषहेतुधनावा कामो भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे प्रातः शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

प्रातरुत्थाय यो लिङ्गं भक्त्या पूजयते सकृत् ।
कपिलाशतदानस्य यत्फलं समवाप्नुयात् ॥१८२॥

अद्यः प्रातः कपिलगवीशतदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भक्त्या शिवलि महं पूजयिष्ये

मध्याह्ने शिवलिङ्गार्च्चनस्य ।

मध्यन्दिनकरे प्राप्ते यो लिङ्गं प्रतिपूजयेत् ।
सम्पूर्णां पृथिवीं दत्वा यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥१८३॥

अद्य मध्याह्ने सम्पूर्णपृथिवीदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिव लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

अपराह्णे शिवलिङ्गपूजनस्य ।

वारुणीमाश्रिते सर्य्ये यः शिवं सम्यगर्च्चयेत् ।
गवां शतसहस्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात् ॥१८४॥

अद्यापराह्णे गोशतसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं सम्भ्
र्च्चयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मासि मासि च योऽश्नीऽयाद्यावज्जीवं सकृन्नरः ।
यश्चार्च्चयेत् सकृल्लिङ्गं सममेव न संशयः ॥१८५॥

अद्य यावज्जीवं मासान्तरितैकभोजनजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवत्
शिवस्य लिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

स स्नातः सर्वतीर्थेषु स सर्वोपरि संस्थितः ।
यः पूजयेन्महापुण्यं लिङ्गं सर्वार्थसाधकम् ॥१८६॥

अद्य सर्वतीर्थस्नानजन्यफलसमफलसर्वोपरिसंस्थितत्वकामः शिवलिङ्गम
पूजयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यः प्रदद्याद् गवां लक्षं दोग्ध्रीणां वेदपारगे ।
एकाहमर्च्चयेल्लिङ्गं तस्य पुण्यं ततोऽधिकम् ॥१८७॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदोग्ध्रीगवीलक्षदानजन्यपुण्याधिकपुण्य
प्राप्तिकामः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

स्कन्दपुराणे शिवलिङ्गपूजायाम्—

अर्च्चायामर्च्चयेद्यो मां पूर्णवर्षशतं नरः ।
एकं वा दिवसं लिङ्गे सममेतन्न संशयः ॥१८८॥

अद्य पूर्णवर्षशतकालिकप्रथमाधिकरणकशिवपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः
शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे शिवार्च्चनस्य—

मेरुमन्दरमात्रोऽपि राशिः पापस्य कर्म्मणः ।
शिवस्यार्च्चनतः क्षिप्रं विलयं याति सर्वशः ॥१८९॥

अद्य क्षिप्रं मेरुमन्दार[1]मात्रपापराशिक्षयकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

१. ने० पा०, मेरुमन्दार ।

भविष्ये शिवलिङ्गार्चनस्य —

यस्तु पूजयते लिङ्गं देवादिन्तु जगत्पतिम् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा मत्परायणः ॥१९०॥
तेषां प्रीतः प्रदास्यामि शुभाँल्लोकाननुत्तमान् ।

अद्य शिवप्रीतिशुभानुत्तमलोकप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये।

शिवधर्म्मे शिवपूजायाम्—

सौभाग्यं कान्तिमद्रूपं सत्य त्यागः प्रभाविता ।
शौर्य्यञ्च जगति ख्यातिः शिवमर्च्चयतो भवेत् ॥१९१॥

अद्य सुभगत्वकान्तिमद्रूपवत्वसत्य त्यागप्रभावित्वशूरत्वजगत्ख्यातित्वकामो भगवतः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवलिङ्गपूजायाम्—

न ते भूयः प्रयास्यन्ति योनिमार्गं सुसङ्कटम् ।
क्रमान्मोक्षं गमिष्यन्ति ये नरा लिङ्गमाश्रिताः ॥१९२॥

अद्य योनिसङ्कटागमनक्रमिकमोक्षावाप्तिकामः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

तत्रैव ब्रह्मचर्य्येण त्रिसन्ध्यपूजायाम्—

ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा त्रिसन्ध्यं योऽर्च्चयेच्छिवम् ।
कुलसप्तकमुद्धृत्य शिवलोके महीयते ॥१९३॥

अद्य कुलसप्तकनरकोद्धरणपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया ब्रह्मचर्य्येण त्रिसन्ध्यं भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भविष्ये शङ्करार्च्चनस्य—

न तत्र देशे दुर्भिक्षं न च मारो प्रवर्त्तते ।
नाकाले म्रियते राजा पूज्यते यत्र शङ्करः ॥१९४॥

अद्य दुर्भिक्षाभावमारीप्रवर्त्तनाभावाकालिकराजमरणाभावकामो भगवतः शिवस्य पूजनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे शिवार्च्चनस्य—

सर्वावस्थां गतो वापि युक्तो वा सर्वपातकैः ।
शिवमिष्ट्वा नरः सोऽपि प्रयाति परमाङ्गतिम् ॥१९५॥

अद्य परमगतिप्राप्तिकामः शिवपूजनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य—

यः पुनः स्थानसङ्कल्पमुत्सृज्य शिवमर्च्चयेत् ।
सोऽश्वमेधफलं सम्यक् लभते नात्र संशयः ॥१९६॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

भक्त्या शिवार्च्चनस्य—

यस्तमर्च्चयते भक्तया तस्य पुण्यं ततोऽधिकम् ॥१९७॥

अद्याश्वमेधफलाधिकफलप्राप्तिकामो भक्त्या शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

नद्यादिस्थानसङ्कल्पे शिवार्च्चनस्य—

सरित्समुद्रतीरेषु पर्वतेषु वनेषु च ।
गिरिशृङ्गेषु तुङ्गेषु गह्वरेषु गृहेषु च ॥१९८॥
पुष्करिण्यां तड़ागेषु तीर्थेष्वायतनेषु च ।
यत्र वा रमते बुद्धिस्तत्र यः शिवमर्च्चयेत् ॥
सर्वयज्ञेषु यत्पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥१९९॥

अद्य सर्वयज्ञपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामः सरित्तीरे शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे शिवाद्वैतज्ञानपूर्वक शिवपूजायाम्—

यस्तु सर्वगतं ज्ञात्वा यत्र तत्रार्च्चयेच्छिवम् ।
स विन्दति महापुण्यं शिवसायुज्यतां व्रजेत् ॥२००॥

अद्य महापुण्यप्राप्तिशिवसायुज्यगमनकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यत्फलं पाकयज्ञेषु हविर्यज्ञेषु यत्फलम् ।
एकाहात्तदवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने तथा ॥२०१॥

अद्य बहुपाकयज्ञबहुहविर्यज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य लिङ्गार्चनमहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे शिवलिङ्गपूजनस्य—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ।
लीयन्ते तानि लिङ्गेषु तस्माल्लिङ्गं प्रपूजयेत् ॥२०२॥

अद्य पृथिवीवर्त्तिबहुतीर्थायतसेवनजन्यपुण्यसमपुण्यकामः शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव महादेवपूजायाम्—

सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ।
यः पूजयेन्महादेवं स गच्छेत् परमां गतिम् ॥२०३॥

अद्य सर्वतीर्थस्नानसर्वयज्ञदीक्षितत्वजन्यपुण्यसमपुण्यपरमगतिप्राप्तिकामो भगवन्तं महादेवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपुराणे शिवपूजायाम्—

कामेनाभ्यर्च्चमानस्य शृणु चैव महत्फलम् ॥२०४॥
मम तुल्यबलो भूत्वा त्रिशूली वृषवाहनः ।
न हन्यते गतिस्तस्य पवनस्याम्बरे यथा ॥२०५॥

अद्य शिवतुल्यबलत्वत्रिशूलित्व वृषवाहनत्वाप्रतिहतगतित्वकामनया भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शैवे ईश्वरपूजायाम्—

ईश्वरं येन भावेन पूजयेत्तस्य तत्फलम् ॥२०६॥
[विद्यापति]

भाव = इच्छा ।

अद्य वाञ्छितफलप्राप्तिकामो भगवन्तमीश्वरमहं पुजयिष्ये ॥

तत्रैव शिवलिङ्गर्च्चनस्य—

षष्टिकोटिसहस्राणि षष्टिकोटिशतानि च ।
षष्टितीर्थसहस्राणि परिसंख्या प्रकीर्त्तिता ॥
शिवलिङ्गार्च्चनस्यैते कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥२०७॥

अद्य बहुषष्टिकोटिसहस्रबहुषष्टिकोटिशतषष्टितीर्थसहस्रसेवनजन्यफलसमफलशतगुणाधिकफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये।

समन्त्रकशिवार्च्चनस्य—

अयं विनैव मन्त्रेण पुण्यराशिः प्रकीर्त्तितः ।
स्यादयं मन्त्रयुक्तश्चेत् पुण्यं शतगुणं भवेत् ॥२०

अद्यामन्त्रकशिवपूजाजन्यपुण्यशतगुणपुण्यप्राप्तिकामो मन्त्रेण भगवतः शि
पूजामहं करिष्ये ॥

मन्त्रः—"ॐ नमः शिवायेति" ॥

शिवपुराणे शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

चान्द्रायणशतं कृत्वा यत्फलं लभते नरः ।
तत्फलं लभते मर्त्यो मम लिङ्गाभिपूजने ॥२०

अद्य चान्द्रायणशताचरणजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवलिङ्गार्च्चनमहं करि

शिवधर्म्मे समन्त्रकशिवार्च्चनस्य—

जितेन्द्रियः शान्तमनाः शिवं मन्त्रेण योऽर्च्चयेत् ।
न तस्य शक्यते वक्तुं पुण्यं वर्षशतैरपि ॥२१

एतावच्छक्यते वक्तुं यस्मिन्देशे वसेदयम् ।
सोपि देशो भवेत्पूतः किं पुनस्तस्य बान्धवाः ॥२१

यस्यायमन्नमश्नाति ये वा[1]ऽस्य परिचारकाः ।
तेपीह तत्समाज्ञेया यैर्विना न शिवार्च्चनम् ॥२१

अद्य वर्षशतानिर्वचनीयपुण्यप्राप्तिबहुबान्धवस्वान्नदातृपरिचारकपूजानु
पुरुषसहितात्मीयपापक्षयकामो भगवतः शिवस्य मन्त्रेणार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

सततं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

सर्वभूतोद्भवं देवं सर्वभूतपतिं शिवम् ।
अर्च्चयेत् सततं लिङ्गे यदीच्छेद्भूतिमात्मनः ॥२१

अद्यादि भूतिकामः सततं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

सततं भगवद्विभूषणस्य—

पुण्याभिरद्भिः स्नानञ्च चन्दनेनानुलेपनम् ।
मनोरमैश्च सततं गन्धमाल्यैर्विभूषितम् ॥
कुर्य्याद्वै सततं रुद्रं यदीच्छेद्भूतिमात्मनः ॥२१४

१. ने० पा०, चास्य ।

अद्यादि भूतिकामः पुण्यजलैः स्नपयित्वा चन्दनानुलिप्य सुगन्धिबहुकुसुमैर्भगवतो रुद्रस्य विभूषणमहंकरिष्ये ।

शिवधर्म्मे रुद्रपूजनस्य—

पुष्पं वा यदि वा पत्रं यत्पादयुगले जलम् ।
दत्वा तरति संसारं रुद्रोऽसौ किं न पूज्यते ॥२१५॥

अद्य संसारतरणकामो भगवतो रुद्रस्य पूजामहं करिष्ये ।

अर्द्धरात्रे शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

यो लिङ्गमर्द्धरात्रे तु शुचिर्भूत्वा समर्च्चयेत् ।
सम्यगिष्टं शतं तेन यज्ञानां लब्धमेव च ॥२१६॥

अद्यास्मिन्नर्द्धरात्रे सम्यगिष्टशतयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

स्कन्दपुराणे महोपहारपूजायाम्—

महामाल्योपहारैश्च यो मां जप्यैश्च पूजयेत् ।
ददामि ब्रह्मलोकस्य वासं वस्तुं सुपूजितम् ॥२१७॥

[विद्यापति]

"उपहारैर्गन्धादिभिः" ॥

अद्य ब्रह्मलोकाधिकरणकपूजितात्मीयवासकाम एभिर्म्महोपहारैर्जप्यैश्च भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

स्नानोत्तरप्रात्यहिक प्रातःपूजने—

स्नात्वा यः पूर्वसन्ध्यायां सदा मामधिच्छति[१] ।
स मृतो यक्षराजस्य मित्रं भवति वीर्य्यवान् ॥२१८॥

[विद्यापति]

"सदेति सङ्कल्पादारभ्य जीवनपर्य्यन्तम्" ।

अद्यादि तनुत्यागानन्तरयक्षराजमित्रत्ववीर्य्यवत्त्वप्राप्तिकामः स्नात्वाऽहरहः प्रातः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ॥

शिवधर्म्मे शीताम्बुस्नानधारोष्णपयःस्नानघृतस्नानोत्तरपूजायां—

लिङ्गं शीताम्बुना स्नाप्य धारोष्णपयसा ततः ।
स्नाप्य पश्चाद् घृतेनैव कृतमेतद्विशिष्यते ॥२१९॥

---

१ नें० पा०, मभिगच्छति ।

एतत्स्नानत्रयं कृत्वा पूजयित्वा तु भक्तितः ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोति मानवः ॥२२

अद्य अश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामनया शिवलिङ्गस्य शीताम्बुस्ना
पूजनमहङ्करिष्ये ॥

यावज्जीवपूजायाम्—

एवं वेलासु सर्वासु स्ववेलास्वपि शङ्करम् ।
भक्त्या पूजयते नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥२२

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

शिवपूजायाम्—

सत्तयाजिसहस्रेभ्यः सर्वविद्यार्थपारगः ।
सर्वविद्यार्थवित् कोट्याः शिवभक्तो विशिष्यते ॥२२

अद्य सर्वविद्यार्थवित्कोटिपुण्याधिकपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयि

शिवपूजायाम्—

ये भक्त्या देवदेवेशं शिवं वै शरणङ्गताः ।
इहलोके सुखं प्राप्य ते यान्ति परमं पदम् ॥२२३

अद्यैतल्लौकिकसुखावाप्तिपूर्वकपरमपदप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयि

शिवार्चने—

सर्वमन्यत् परित्यज्य शिवैकाहि[1]तमानसः ।
शिवपूजाविधिं कुर्याद्यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥२२४॥

अद्य शुभावाप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवपुराणे दिवसदशतयाधिकरणकशिवलिङ्गार्चने ।

गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ।
दशाहात्तदवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने रतः ॥२२५॥

अद्यादि दिवसदशतयं यावत् प्रत्यहं सम्यग्दत्तगोशतसहस्रफलसमफल
प्राप्तिकामनया शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

१. ने० पा०, शिवैकावृतमानसः

विंशतिदिवसाधिकरणकशिवाराधनस्य—

वाजपेयशतैरिष्ट्वा यत्फलं विन्दते द्विजः ।
विप्रो विंशतिरात्रेण रुद्रभक्तस्तदश्नुते ॥२२६॥

अद्यादि विंशतिर्यावत्प्रत्यहं वाजपेययज्ञशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतो रुद्रस्याराधनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

विप्रोऽत्राधिकारी ।

मासार्द्धं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मासार्द्धमपि यो लिङ्गं नैरन्तर्य्येण चार्च्चयेत् ।
पुरुषोत्तमः स विज्ञेयो नैरन्तर्य्यं हि दुष्करम् ॥२२७॥

अद्यादि मासार्द्धं व्याप्य प्रत्यहं पुरुषोत्तमत्वभवनकामनया शिवलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे मासं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

अश्वमेधसहस्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ।
मासेन तदवाप्नोति रुद्रलिङ्गार्च्चने रतः ॥२२८॥

अद्यादि मासं यावत् प्रत्यहं सम्यगिष्टाश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामो रुद्रलिङ्गार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

तत्रैव मासं शिवलिङ्गार्च्चनस्य —

सर्वेषामेव तीर्थानां यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
मासेन तदवाप्नोति लिङ्गे योऽर्च्चयते शिवम् ॥२२९॥

अद्यादि मासमेकं यावत्प्रत्यहं सर्वतीर्थसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो लिङ्गे भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

कौर्म्मे मासं व्याप्य शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

[विद्यापति]

विप्र इत्यधिकृत्य

गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ।
मासेन तदवाप्नोति सम्यग्लिङ्गार्च्चने रतः ॥२३०॥

अद्यादि मासमेकं यावत्प्रत्यहं सम्यग्दत्तगोशतसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

शिवमाहात्म्ये मासं शिवार्च्चनस्य—

यः कुर्य्यात् पूजनं मासि एकाहारो जितेन्द्रियः ।
स यत्फलमवाप्नोति न तत्सर्वैर्महामखैः ॥

अद्यादि सर्वमहामखकरणकफलाधिकफलप्राप्तिकामो मासमेकं प्रतिदिनमेकाहारो जितेन्द्रियः शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे मासत्रये शिवलिङ्गार्चनस्य—

राजसूयसहस्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ।
त्रिभिर्मासैरवाप्नोति शिवलिङ्गार्च्चने रतः ॥२३२

अद्यादि सम्यगिष्टराजसूयज्ञसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामो मासत्रयं यावदहर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमच्चंयिष्ये ।

मासनवतयाधिकरणकशिवलिङ्गपूजनस्य—

सर्वतीर्थाभिषेकञ्च सर्वदानफलानि च ।
सर्वयज्ञफलञ्चैव उपवासफलानि च ॥२३३
ततोपि विधिना व्यासव्रतानि विविधानि च ।
सम्यगिष्टफलाः सर्वे क्षमाचारसमाधिना ॥२३४
नवमासान् समासाद्य ब्राह्मणो विजितेन्द्रियः ।
सर्वमेतदवाप्नोति लिङ्गे योऽर्च्चयते शिवम् ॥२३५

अद्यादि क्षमाचारसमाधिमत्सर्वतीर्थाभिषेकसर्वदानसर्वयज्ञोपवासविविधबहुव्रतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो मासनवतयं यावदहरहः शिवलिङ्गा...ङ्करिष्ये ॥

[विद्यापति]

जितेन्द्रियो ब्राह्मणोऽत्राधिकारी ।

शिवमाहात्म्ये संवत्सरं शिवलिङ्गार्च्चनस्य—

संवत्सरञ्च मां देवि एकाहारेण योऽर्च्चयेत् ।
न तस्य पुनरावृत्तिः सत्यमेतद्वदामि ते ॥

अद्यादि संवत्सरं यावत् प्रत्यहमेकाहारोऽपुनरावृत्तिकामो भगवतः ...र्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवपुराणे संवत्सरमेकलिङ्गाधिकरणकशिवपूजनस्य—

यस्तु संवत्सरं पूर्णं पूजयेदेकलिङ्गके ।
तस्य तुष्टः प्रयच्छामि गाणपत्यं न संशयः ॥२३७॥

अद्यादि संवत्सरं यावत् अहरहः शिवप्रसादहेतुकगाणपत्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यैकलिङ्गे[1] पूजामहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

"वृषादिशून्यं लिङ्गमेकलिङ्गम्"

शिवधर्म्मे सङ्गपरित्यागपूर्वक निरन्तरसंवत्सरपूजनस्य—दिनादिपूजाफलमुक्तम् ।

अनेन क्रमयोगेन पुण्यवृद्धिर्दिने दिने ।
ज्ञेयं संवत्सरस्यापि यावत्कालं समर्च्चयेत् ॥२३८॥
यः पुनः सङ्गमुत्सृज्य शिवलिङ्गं प्रपूजयेत् ।
नैरन्तर्य्याच्छतगुण पुण्यं तस्य प्रवर्त्तते ॥२३९॥

[विद्यापति]

"सङ्गो विषयासङ्गः"

अद्यादि संवत्सरशिवपूजाजन्यफलशतगुणफलप्राप्तिकामः संवत्सरं यावत् प्रत्यहं विमुक्तसङ्गो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

तत्रैव मुक्तसङ्गस्याब्दार्द्ध पूजनस्य —

पञ्चाशद्गुणितं पुण्यमब्दार्द्धं योऽर्च्चयेच्छिवम् ॥२४०॥

अद्यादि षण्मासावच्छिन्नशिवपूजाजन्यफलपञ्चाशतगुणफलप्राप्तिकामनया विमुक्तसङ्गः षण्मासान् यावत् प्रत्यहं शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

ऋतुपूजनस्य —

ऋतावृतौ तदर्द्धं स्यात ॥२४१॥

[विद्यापति]

"तदर्द्धं पञ्चाशदर्द्धम् ।"

अद्यादि ऋतुंपूजाजन्यफलपञ्चविंशतिगुणफलप्राप्तिकाम ऋतावहरहर्विमुक्तसङ्गो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा० लिङ्ग ।

मासपूजायाः—

मासि चैव तदर्द्धकम् ॥ ॥२४२॥

[विद्यापति]

"तदर्द्धं पञ्चविंशत्यर्द्धम् ।"

अद्यादि मासाधिकरणकशिवपूजाजन्यफलसार्द्धद्वादशगुणफलप्राप्तिका[illegible] विमुक्तसङ्गो मासमेकं यावदहरहर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे चतुर्म्मासार्च्चनस्य ।

चतुर्म्मासार्च्चनं तद्वन्महापुण्यफलप्रदम् ॥२४३॥

अद्यादिमहापुण्यप्राप्तिकामो मासचतुष्टयेऽहरहर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये

अथ पौषमासीय शिवार्च्चनस्य—

चातुर्म्मास्यार्च्चनात्पुण्यं पौषमासार्च्चनाल्लभेत् ॥२४४॥

अद्यादि चतुर्म्मासावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यफलप्राप्तिकामः पौषमा[illegible] प्रत्यहं भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

फाल्गुनचैत्रयोरन्यतरस्मिन् पूजनस्य—

चैत्रफाल्गुनयोः पुण्यं द्विमासजनितं भवेत् ॥२४५॥

अद्य द्विमासावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामः फाल्गुने मा[illegible] भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

चैत्रमासपूजायामपीयमेव कामना ।

शिवधर्म्मे माघाषाढ़कार्त्तिकान्यतममासीयत्रिसन्ध्यशिवार्च्चनस्य—

माघेमासि समुद्युक्तस्त्रिसन्ध्यं योऽर्च्चयेच्छिवम् ।
लभेत् षाण्मासिकं पुण्यं मासेनैव न संशयः ॥२४६॥
यथा माघे तथाषाढ़े कार्त्तिके तु विशेषतः ।
त्रिषु पुण्यं समंज्ञेयं मासेष्वेतेषु यत्फलम् ॥२४७॥

अद्यादि षण्मासावच्छिन्नप्रात्यहिकशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिका[illegible] माघमासं व्याप्याहरहस्त्रिसन्ध्यं शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

आषाढ़कार्त्तिकयोरन्यतरस्मिंस्त्रिसन्ध्यपूजायामपीयमेव कामना ॥

अथ यावज्जीवं शिवार्च्चनस्य—

तत्र भविष्यपुराणे ।

यस्तु पूजयते लिङ्गं नित्यं त्रिभुवनेश्वरम् ।
सस्वर्गराज्यमोक्षाणां क्षिप्रं भवति भाजनम् ॥२४८॥

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम्"

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं स्वर्गराज्यमोक्षशीघ्रावाप्तिकामः शिवलिङ्गार्च्चनमहं करिष्ये ।

तत्रैव शिवार्च्चनस्य—

शिवपूजापरोनित्यं महापातकसम्भवैः ।
दोषैर्न लिप्यते सर्वैः पदमपत्रमिवाम्भसा ॥२४९॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं महापातकसम्भवसकलदोषालिप्तत्वकामः शिवपूजामहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सदाशिवार्च्चनस्य—

शिवार्च्चनस्य तुल्योऽस्ति न धर्म्मो भुवनत्रये ।
इति विज्ञाय यत्नेन पूजनीयः सदा शिवः ॥२५०॥

"सदा यावज्जीवं विश्वजिन्न्यायात् स्वर्गः फलम्" ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं स्वर्गप्राप्तिकामः शिवमहं पूजयिष्ये ।

शिवधर्म्मे सदा शिवार्च्चनस्य ।

ये वाञ्छन्ति महाभोगान्राज्यञ्च त्रिदशालये ।
तेऽर्च्चयन्ति सदा कालं हरस्य चरणाम्बुजौ[1] ॥२५१॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं बहुमहाभोगत्रिदशालयाधिकरणकराज्यप्राप्तिकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

[1] ने० पा० चरणाम्बुजम् । मूले चरणाम्बुजे ।

तत्रैव नित्यं शिवार्च्चनस्य —

य: शिवं पूजयेन्नित्यमन्त्यजोपि जितेन्द्रिय: ।
भवार्च्चनरतो यस्मात् स याति परमां गतिम् ॥२५२॥

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम्" ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं परमगतिप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

अत्र जितेन्द्रियशिवभक्तशूद्रस्याप्यधिकारः ।

भविष्यपुराणे यावज्जीवं शिवार्च्चनस्य—

स्फुटं निर्वहते यस्य यावज्जीवं शिवार्च्चनम् ।
मनुष्यचर्म्मणा नद्धः स रुद्रो नात्र संशय: ॥२५३॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं रुद्रत्वभवनकामः शिवार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

शिवधर्म्मे सदाशिवार्च्चनस्य—

सदा यजति[1] यज्ञेन सदा दानानि[2] यच्छति ।
सदा च वायुभक्षः स्यात् सदा योऽर्च्चयते शिवम् ॥२५४॥

अद्यादि यावज्जीवमहरहः सार्वकालिकयष्टृत्वसदादातृत्वसदातनवायुभक्षत्व जन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव नित्यं शिवार्च्चनस्य—

य: शिवं पूजयेन्नित्यं प्रणमेद्वापि भक्तितः ।
तस्य योगञ्च मोक्षञ्च शिवस्तुष्टः प्रयच्छति ॥२५५॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं शिवप्रसादहेतुकयोगमोक्षावाप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव नित्यमीशानार्च्चनस्य—

ये स्मरन्ति विरूपाक्षमीशानं पूजयन्ति च ।
रुद्रलोकात्परिभ्रष्टा विज्ञेयास्ते गणेश्वराः ॥२५६॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं रुद्रलोकप्रच्यवानन्तरगणेशत्वभवनकामो भगवत ईशानस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

---

१ तत्रैव, यजति; मूले जयति ।
२ तत्रैव दानं ।

तत्रैव यावज्जीवं शङ्करपूजायाम्—

सदा शङ्करमभ्यर्च्य सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥२५७॥

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

कालिकापुराणे सार्व्वदिकपञ्चोपचारपूजायाम्—

अद्यादि पितृमनुष्यनाशहेतुकभयाभाववैवस्वतादर्शन-कुम्भिसंज्ञकनरकापतन-महुकामविमानकरणकलोकविचरणपूर्वकमोक्षप्राप्तिकामः पञ्चोपचारेण भगवतो हरस्य यावज्जीवं प्रत्यहं पूजामहङ्करिष्ये ।

भविष्ये गंगास्नानानन्तरनित्यपूजायाम् —

गङ्गायान्तु नरः स्नात्वा यो लिङ्गं नित्यमर्च्चयेत् ।
एकेन जन्मना मुक्तिं परामाप्नोति स ध्रुवम् ॥२५८॥

[विद्यापति]

"नित्यं यावज्जीवम् ।"

अद्यादि यावज्जीवं परममुक्तिप्राप्तिकामो गंगायां स्नात्वाऽहरहः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

अथ पुण्यकाला[1]र्च्चनफलम्—

कालिकापुराणे—

व्यतीपाते दिनच्छेदे चन्द्रसूर्य्यग्रहेषु च ।
युगादौ विषुवे क्रान्तौ पुण्ययोगेषु सर्व्वशः ॥२५९॥
यत्र यत्रार्च्चते देवो विषमाक्षो वृषध्वजः ।
तत्र तत्राक्षयं पुण्यमिति प्राह पितामहः ॥२६०॥

[विद्यापति]

क्रान्तौ रविसंक्रान्तौ, अक्षयं आहू[2]तसंप्लवस्थायि ।

अद्य व्यतीपातेऽक्षयपुण्यप्राप्तिकामो वृषभध्वजमहं पूजयिष्ये ।

दिनच्छेदचन्द्रसूर्य्योपरागविषुवसंक्रान्त्याद्यन्यतमपुण्यसमयेपीयमेव कामना ।

१. ने० पा०, अथ अक्षयपुण्यकालार्च्चनफलम् ।
२. तत्रैव, आकृत ।

शिवधर्म्में विषुवसंक्रान्तौ शिवार्च्चनस्य—

नैरन्तर्य्येण षण्मासं विधिना योऽर्च्चयेच्छिवम् ।
पुण्यं तदेव सकलं लभते विषुवार्च्चनात् ॥२६१॥

एतदेव तु विज्ञेयं ग्रहणे चोत्तरायणे ।
संक्रान्तिषु दिनच्छेदे षडशीतिमुखेषु च ॥२६२॥

अद्यविषुवद्रविसंक्रान्तौ वैधनिरन्तरषण्मासावाच्छिन्नप्रात्यहिकशङ्करपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

[विद्यापति]

एवं ग्रहणोत्तरायणापरसंक्रान्तितिथिक्षयेष्वपीदमेव फलम् ।

संक्रान्तिपदादेवलब्धे विषुवादिग्रहणमधिकफलार्थम् ।

कार्त्तिक्यां शिवार्च्चनस्य—

मासैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य शङ्करम् ।
तत्कार्त्तिक्यां भवेत्पुण्यं पौर्णमास्यां शिवार्च्चनात् ॥२६३॥
पुण्यं तदेव फाल्गुन्यामाषाढ्यामेवमेव च ॥२६४॥

अद्य कार्त्तिक्यां मासचतुष्टयावच्छिन्नसविधिशङ्करपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्यार्च्चनमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

आषाढीफाल्गुन्योरन्यतरस्यामप्येतदेव फलम् ।

अथ चतुर्द्दश्यां घृतादिस्नानोत्तरपूजायां

शिवपुराणे—

घृतेन पयसा दध्ना तैलेन च जलेन वा ।
गोक्षीरेण चतुर्द्दश्यां लिङ्गस्नपनकारणात् ॥२६५॥
ते ममेष्टाश्च जायन्ते तेऽक्षयास्तेऽजरामराः ।
ते युद्धेष्वजिता देवि ये लिङ्गार्च्चनतत्पराः ॥२६६॥
ब्रह्मलोकं विष्णुलोकं गोलोकं मामकं तथा ।
अव्याहताश्चरन्त्येतेऽक्षयास्तेऽजरा[1]मराः ॥२६७॥

---

१ ने० पा०, लिङ्गार्चनरता नराः ।

अद्य चतुर्दश्यां शिवेष्टत्वाक्षयत्वाजरामरत्व-बहुयुद्धानिर्जितत्व-ब्रह्मलोक-विष्णुलोकगोलोकशिवलोकाव्याहतगतिमत्त्वप्राप्तिकामो घृतदुग्धदधिजलक्षीराद्य-तमस्नपनपूर्वक शिवङ्गार्च्चलिनमहङ्करिष्ये ।

स्नात्वा कृष्णचतुर्दश्यामाराधनस्य—

यस्तु कृष्णचतुर्दश्यां स्नात्वा देवं पिनाकिनम् ।
आराधयेद्द्विजश्रेष्ठ ! न तस्यास्ति पुनर्भवः ॥२६८॥

अद्य कृष्णचतुर्दश्यामपुनर्भवकामः स्नात्वा पिनाकिनं देवमाराधयिष्ये।

कृष्णचतुर्दश्यां प्रातर्मध्याह्नयोः पूजनस्य—

कृष्णपक्षे त्रयोदश्यामुपोष्य परमेश्वरम् ।
प्रातर्मध्याह्नयोः पूजां चतुर्दश्यां समाचरेत् ॥२६९॥

पञ्चगव्येन स्नात्वादौ हविर्भुञ्जीत वाग्यतः ।
दशाश्वमेधानां फलमाप्नोति मानवः ॥२७०॥

अद्य कृष्णचतुर्दश्यां दशाश्वमेधजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः प्रातर्मध्या-ह्नयोर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

अमावास्यापूर्णिमयोः पूजाद्वयान्तरं च पञ्चगव्यपानपूर्वकं मौनेन हवि-र्भोजनम् ।

चतुर्दश्यादिषु पूजायाम्—

चतुर्दश्याममावास्यां पौर्णमास्याञ्च पाक्षिकम् ।
पुण्यमष्टगुणं ज्ञेयमष्टम्यां योऽर्चयेच्छिवम् ॥२७१॥

[विद्यापति]

अष्टम्यामष्टगुणत्वं पाक्षिकफलापक्षेया ।

अद्य कृष्णचतुर्दश्यां पक्षावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

अमावास्यापूर्णिमयोरपीदमेव फलम् ।

अष्टम्यां पूजनस्य—

अद्याष्टम्यां पक्षावच्छिन्नशिवपूजाजन्यपुण्याष्टगुणपुण्यप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां धारोष्णपयःस्नपनस्य—

धारोष्णपयसा स्नाप्य कृष्णाष्टम्यामुपोषितः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७२॥

अद्य कृष्णाष्टम्यामेकविंशतिकुलनरकोत्तारणपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया धारोष्णेन पयसा शिवलिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

कृतोपवासस्यात्राधिकारः ।

लैङ्गे कृष्णाष्टम्यां दधिस्नपनस्य—

संस्नाप्य दध्ना लिङ्गन्तु कृष्णाष्टम्यामुपोषितः ।
कुलसप्तकमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७३॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां कुलसप्तकनरकोत्तारणपूर्व्वकशिवलोकमहितत्वकामनया दध्ना भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

[विद्यापति]

सप्तम्यां कृतोपवासस्यात्राधिकारः ।

शैवे कृष्णाष्टम्यां घृतस्नपनस्य—

कृष्णाष्टम्यां घृतस्नानं कृत्वा लिङ्गे सकृन्नरः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥२७४॥

अद्य कृष्णाष्टम्यामेकविंशतिकुलनरकोत्तारणपूर्व्वकशिवलोकमहितत्वकामो घृतेन भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां वा दधिस्नपनस्य–

कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां दध्ना संस्नापयेच्छिवम् ।
यावज्जीवकृतात् पापान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥२७५॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां वा यावज्जीवपापविमुक्तिकामो दध्ना भग[वन्तं] शिवमहं स्नपयिष्ये ।

भविष्ये कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्द्दश्यां वा मधुस्नपने —

कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां मधुना स्नापयेच्छिवम् ।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥२७६॥

अद्य राजसूययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामः कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्द्दश्यां वा मधुना भगवन्तं शिवमहं स्नपयिष्ये ।

चतुर्द्दश्यादिपर्वकालाराधने ।

दानोपवासनियमै[1] पूजाजागरभोजनैः ।
महास्नानादिविधिना शिवं पर्वसु पूजयेत् ॥२७७॥

यावत्पर्वसु कालेषु यावदर्च्चयते शिवम् ।
यावत्कालार्च्चनं पुण्यं तावत्पर्वार्च्चनात् लभेत् ॥२७८॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन महाविभवविस्तरैः ।
पूजनीयः शिवो नित्यं महापुण्यजिगीषया ॥२७९॥

अद्य चतुर्द्दश्यादिपर्वणि सर्वपर्वकालिकशिवपूजाजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिका[मो] महास्नानादिविधिपूजादानोपवासनियनजागरतप स्विप्रभृतिभोजनादिभिर्भगवतः [शिव]स्या राधनमहङ्करिष्ये ।

कार्त्तिकचतुर्द्दश्यां स्थाण्वर्च्चनस्य—

कार्तिके भौमवारेण चित्रा कृष्णा चतुर्द्दशी ।
अस्यामाराधितः स्थाणुर्नयेच्छिवपुरं ध्रुवम् ॥२८०॥

अद्य कार्त्तिकमासीयकुजवारचित्रायुतकृष्णचतुर्द्दश्यां शिवपुरप्राप्तिका[मो] भगवतः स्थाणोरर्च्चनमहङ्करिष्ये ।

---

१ शौचमिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः ।
व्रतमौनोपवासञ्च स्नानं च नियमा दश ॥—अत्रि

शिवपुराणे चतुर्दश्यष्टम्योरन्यतरार्च्चनस्य —

चतुर्द्दश्यां तथाष्टम्यां पक्षयोस्तु विधानतः ।
नियमेष्वभिरक्तस्य ब्रह्मचर्य्यपरस्य च ॥२८१॥

ब्राह्मणस्य च वात्सल्या[1]न्ममभक्तिपरस्य च ।
तस्य पुण्यं[2]फलं देवि मत्प्रसादादिदं शृणु ॥२८२॥

स्वच्छन्दनिरतो हृष्टो व्योमचारीविहङ्गवत् ।
अजितः सर्वभूतैस्तु स्वर्गलोके महीयते ॥२८३॥

अद्य चतुर्द्दश्यां स्वचछन्दनिरतत्वहृष्टत्वव्योमचारित्वसर्वभूताजितत्व स्वर्गलोकमहितत्वकामनया यथाविधिभगवतः शिवस्याराधनमहङ्करिष्ये ।

[विद्यापति]

ब्रह्मचर्य्यादिनियमयुक्तो ब्राह्मणोऽत्राधिकारी ।

अष्टम्यामपीयमेव कमना ।

चतुर्द्दश्याद्यन्यतमपर्वण्यर्कान्यतमपुष्पपूजनस्य—
शिवपुराणे ।

अर्कवकबिल्वपत्रचम्पककुशकरवीरपद्मधत्तूरकपुष्पाणि प्रस्तुत्य—

एवमेतानि पुष्पाणि निवेदयति यस्तु मे ।
तथा पर्वसु सुश्रोणि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥२८४॥

संवत्सरेण चैकेन पुष्णाणां यत्फलं लभेत्[3] ।
दिवसेन तु तत्सर्वं विख्यातञ्च वरानने ॥२८५॥

अद्यामुकपर्वणि संवत्सरावच्छिन्नशिवबहुपुष्पपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिरर्ककुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

वकबिल्वपत्रचम्पककुशकरवीरपद्मधत्तूरान्यतमकुसमैरपि पूजने फलमिदम् । शिवपुराणे चतुर्द्दश्यामर्कादिकुसुमपूजायां—

अर्कञ्च करवीरञ्च कुश:न्म[4]त्तमेव चेत्यधिकृत्य—

---

१ वात्सल्यम्मम् मूले
२ पुण्यं मूले ।
३ ने० पा०, भवेत् ।
४ तत्रैव, कुशमुन्मत्तमेव च ।

अष्टमीमपराह्णे तु तथा कृष्णाचतुर्दशीम् ।२८६॥
एतैः पुष्पविशेषैस्तु कुर्य्याद्योऽभ्यर्चनं मम ।
तस्य पुण्यतमालोकाः शिव लोक[1]निवासिनः ॥२८७॥
यथेष्टं गच्छते सोऽपि यत्र देवः शिवोऽव्ययः ॥२८८॥

अद्य चतुर्द्दश्यामपराह्णे शिवलोकनिवासिलोकप्राप्तियथेष्टशिवाधिष्ठित लोकविहरणकाम एभिरर्ककुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

करवीरकुशोन्मत्तकानामन्यतमपुष्पेष्वपीदं फलम् ।

एवमष्टम्यामपि ।

कृष्णचतुर्द्दश्यां साज्यगुग्गुलुधूपस्य ।

शिवे कृष्णचतुर्द्दश्यां यः साज्यं गुग्गुलुं दहेत् ।
अपराधसहस्रं कमिहामुत्रकृतं क्षमेत्[2] ॥२८९॥

अद्य कृष्णचतुर्दश्यां शिवविषयैहिकामुष्मिकस्वीयापराधसहस्रक्षान्तिकामनयाऽयं साज्यगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मे चतुर्दश्यां शालितण्डुलप्रस्थाधिकचरौ—

शालितण्डुलप्रस्थेन कुर्य्यादन्नं सुसंस्कृतम् ।
शिवायत्तं चरुं दत्वा चतुर्द्दश्यां विशेषतः ॥२९०॥
हरिद्रां कृसरं शुक्लं पायसं यावकं तथा ।
गुड़खण्डाज्यसम्मिश्रमेवमन्नं प्रकल्पयेत्[3] ॥२९१॥
यावन्तस्तण्ड्लास्तस्मिन्नैवेद्ये परिसंख्यया ।
तावद्युगसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥२९२॥

अद्य चतुर्द्दश्यामेतच्चरुप्रहृति[4]तण्डुलसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नस्वर्गलोकमहितत्वकाम इमं शालितण्डुलप्रस्थसुसाधितचरुं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

१ नें० पा० मम लोकनिवासिनः ।
२ तत्रैव, क्षमे ।
३ तत्रैव, विकल्पयेत् ।
४ तत्रैव प्रकृति । मूले पहृति ।

एवं हरिद्रासुसंस्कृतकृसरशुक्लपायसयावक[1]गुडखण्डाज्यसम्मिश्रान्नानामन्यतम... दानेपीदमेव फलम् ।

कृष्णचतुर्द्दश्यामन्नपानदाने—

योऽन्नपानं चतुर्द्दश्यां कृष्णस्य कुरुते मम ।
रथेन वृषयुक्तेन ममलोके स मोदते ॥२६३॥

[विद्यापति]

"कृष्णस्य - कृष्णपक्षस्य"

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां वृषयुक्तरथकरणकशिवलोकाधिकरणकसर्वकामन... एते अन्नपाने प्रजापतिवरुणदैवत्ते शिवस्य तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्कन्दपुराणे चतुर्द्दश्यामष्टम्यां वा पूजानन्तरं वामदेवेत्यादिनामकीर्त्तनस्य—

अर्च्चयित्वा तु मां देवि यो मे नामानि कीर्त्तयेत् ।
चतुर्द्दश्यामथाष्टम्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥२६४॥

वामदेव सुदेवेति हरगुप्तेति मानवः ।
उमापते नीलकण्ठ शान्त श्रीकण्ठ गोपते ॥२६५॥

शर्व भीम पशुपते शङ्करोग्र भवेति च ।
महादेवेति चाप्यन्नामगुह्यं[2] प्रकीर्त्तयन्[3] ॥२६६॥

सर्वपापैः प्रमुच्येत दिवि देवैश्च पूज्यते ।
एतेषामेकमपि यः पठेद् वा पाठयेत्तथा[4] ।
सदेहपद्धतिं भित्वा मामेव प्रतिपद्यते ॥२६७॥

अद्य चतुर्द्दश्यां सर्वपापविमुक्तिस्वर्गाधिकरणकबहुदेवपूज्यत्वकामो वामदेवादिमहादेवान्तनामकीर्त्तनमहङ्करिष्ये ।

अष्टाम्यामपीयमेव कामना ।

---

१. ने० पा० संयाव ।
२. तत्रैव, गुत्थं ।
३. तत्रैव, प्रकीर्तयेत्
४. तत्रैव, पाठयेत्तदा ।

अष्टम्यामुपोष्य कृष्णनवमीपूजायाम्—

समुपोष्याष्टमीं कृष्णामर्चयित्वा च शङ्करम् ।
प्राप्नोति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥२९८॥

अद्य कृष्णनवम्यां महेश्वरपुराधिष्ठितपरमस्थानप्राप्तिकामो भगवतः शङ्करस्य पूजामहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

अत्र कृष्णाष्टम्युपवासोऽङ्गम् ।

धर्म्मलब्धपुष्पार्च्चनस्य—

धर्म्मलब्धैश्च योऽभ्यर्च्चेद् बलिपुष्पनिवेदनैः ।
तस्मै प्रीतो महादेवः सर्वान् कामान् प्रयच्छति ॥२९९॥

अद्य महादेवप्रीतिहेतुकसर्वकामावाप्तिकामो भगवतः महादेवस्य धर्म्मलब्धबलिपुष्पनिवेदनैरभ्यर्च्चनमहङ्करिष्ये ।

त्रिकालपार्थिवलिङ्गार्च्चनस्य—

त्रिसन्ध्यं योऽर्च्चयेल्लिङ्गं कृत्वा लिङ्गेन पार्थिवम् ।
दशैकादशिकं यावत्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥३००॥
अनेनैव सदेहेन रुद्रः सन्तिष्ठते क्षितौ ।
पापहा सर्वमर्त्यानां दर्शनात् स्पर्शनादपि ॥३०१॥

अद्याद्वैतदेहकरणकरुद्रवत्क्षितिसंस्थितत्वसकलमर्त्त्यपावनत्वकामो भगवतः शिवस्य दशैकादशिकं यावत् त्रिसन्ध्यं पार्थिवशिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

दशैकादशिकं दशोत्तरशतसङ्ख्यं त्रिसन्ध्यमित्यर्थः ।

शैवे सततं शिवार्च्चनस्य —

अर्च्चयेत् सततं देवं शुचिः प्रयतमानसः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा सर्वदुःखविवर्ज्जितः ॥
लोकान् कामदुघान् प्राप्य रुद्रलोके महीयते ॥३०२॥

१. रघुवंश, १/९५; ८/११; १३/७० ।

अद्यादि सर्वपापविशुद्धात्मत्व-सर्वदुःखविवर्जितत्व-कामदु[१]घबहुलोकप्राप्तिपूर्वकरुद्रलोकमहितत्वकामः सततं भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये।

अथ पूज्यफलकथनम्।

भविष्यपुराणे वाणलिङ्गार्च्चनस्य—

वाणश्चैव स्वयम्भूश्च स्वयं देवेन निर्मितः ।
तस्माद्वाणः सदा पूज्यः स्वयम्भूपूजने फलम् ॥३०३॥

अद्य स्वयम्भूपूजाफलसमफलप्राप्तिकामो वाणलिङ्गपूजामहं करिष्ये।

बृहन्नन्दिकेश्वरे वाणपूजायाः—

भुक्तिमुक्तिप्रदो वाणः पूजितस्तु न संशयः ॥३०४॥

अद्य भुक्तिमुक्तिप्राप्तिकामो वाणपूजामहं करिष्ये।

[विद्यापति]

वाणलिङ्गप्रतिष्ठाव्यतिरेकेणापि फलप्रदम्।

तथा च स्कन्दपुराणे—

वाणलिंगानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये ।
न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषामावाहनं तथा ॥
एवमेव प्रपूज्यामि शिवरूपाणि भारत ॥३०५॥

लिंगपुराणे स्फटिकलिंगपूजनस्य—

द्रव्यमायुः स्त्रियं पुत्रान् यच्चान्यन्मनसेप्सितम् ।
स्फाटिकं लिङ्गमासाद्य यजमानः समश्नुते ॥३०६॥

अद्य द्रव्यदीर्घायुष्ट्व-स्त्रीबहुपुत्रेप्सितकामः स्फाटिकलिङ्गमहं पूजयिष्ये।

भविष्यपुराणे प्रतिमार्च्चनस्य—

अर्च्चायां पूजयेद्यो मां विष्णर्भवति पूजितः ॥३०७॥

[विद्यापति]

अर्च्चा = प्रतिमा।

अद्य विष्णुपूजाजन्यफलसमफलप्राप्तिकामोऽर्च्चायां शिवमहं पूजयिष्ये।

१. ने० पा०, सर्वदुःखविवर्जितत्वकामलाभ।

प्रतिमादिपूजने स्मृतिः—

स्थण्डिले यत्फलं प्रोक्तं द्विगुणं प्रतिमासु तत् ।
स्फाटिकं त्रिगुणं प्रोक्तं वाणे चैव चतुर्गुणम् ॥३०८॥

अद्य स्थण्डिलपूजाजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामः प्रतिमायां शिवमहं पूजयिष्ये ।

स्फाटिकलिङ्गे—

अद्य स्थण्डिलपूजाजन्यफलचतुर्गुणफल-प्राप्तिकामो वाणलिङ्गमहं पूजयिष्ये।

पूजाधिकरणा[१]न्तरमाह—

निजमूर्त्तौ गुरोर्मूर्त्तौ पुस्तके सलिलेऽनले ।
चित्रादौ स्थण्डिले वाणो वाणश्चात्यन्तउत्तमः ॥३०९॥

अथ पार्थिवादिलिङ्गपूजनफलम् ।

भविष्ये—

यः कृत्वा पार्थिवं लिङ्गमर्च्चयेच्छुभवेदिकम् ।
इहैव धनवान् श्रीमानन्ते रुद्रोऽभिजायते ॥३१०॥

[विद्यापति]

शुभवेदिकं शोभनपिण्डिकायुक्तम्

अद्य ऐहिकधनवत्वानन्तकालिकरुद्रत्वभवनकामः पार्थिवशुभवेदिकं कृत्वा शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव पार्थिवलिङ्गपूजायाम्—

मृन्मयं धनदं धान्यं[२] श्रीपदं सर्वकामदम् ॥३११॥

अद्य धनवत्व-श्रीमत्वसर्वकामावाप्तिकामः पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैव पार्थिवशिवलिङ्गार्च्चनस्य—

मृदुभस्मगोशकृत् पिष्टैस्तथा बालुकयापि वा ।
कृत्वा लिङ्गं सकृत्पूज्यं वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥३१२॥

[विद्यापति]

गोशकृत् = गोमयम्

१. ने० पा० पूजाकरणान्तरमाह ।
२ तत्रैव, धन्यं ।

अद्य स्वर्गाधिकरणककल्पायुतावच्छिन्नवासकामो मृन्मयं शिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

भस्मगोमयबालुकाविष्टान्यतमघटितलिङ्गेपीयमेव कामना ।

शिवधर्म्मे पार्थिवलिङ्गविशेषमाह—

अयुग्मं पूजयेल्लिङ्गं दारिद्र्यं समवाप्नुयात् ।
तस्माद्द्युग्मं मुनिश्रेष्ठ पूजयेत् पार्थिवं शिवम् ॥३१३॥
असंस्कृतमृदा कृत्वा पूजयेद्द्यो महेश्वरम् ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च तस्य कुप्यन्ति वै सकृत् ॥३१४॥
तीर्थमृद्भिः पवित्राभिर्हीनाभिः केशकीटकैः ।
विरचिता त्रियत्नेन लिङ्गं निर्माय पूजयेत् ॥३१५॥
गङ्गामृत्तिकया यस्तु लिङ्गं निर्माय पूजयेत् ।
सर्वापराधान् क्षमते तस्य देवो महेश्वरः ॥३१६॥
पूजयेद्द्यो लभेत् सौख्यं चतुरो विपुलं धनम् ।
षट् कर्म लभतेऽनन्तमष्टौ मोक्षाय पूजयेत् ॥३१७॥
दश वा द्वादशाभ्यर्च्य लभते वाञ्छितं फलम् ।
अयुग्मं पूजयेद्विद्वाँल्लभेज्जन्मान्तरे रुजम् ॥३१८॥

शिवधर्म्मे पार्थिवशिवलिङ्गपूजनस्य—

क्रीडन्ति शिशिरोप्यत्र लिङ्गं कृत्वा यजन्ति ये ।
मृन्मयं सैकतं वापि भूपालाः स्युर्महर्द्धिकाः[1] ॥३१९॥

अद्य महर्द्धिकभूपतित्वभवनकामो मृन्मयं शिवलिङ्गं कृत्वाहं पूजयिष्ये ।

सैकतलिङ्गेप्येषैव कामना ।

नन्दिपुराणे पार्थिवलिङ्गपूजनस्य—

आयुष्मान् धनवान् श्रीमान् पुत्रवान् बलवान् सुखी ।
वरमिष्टं लभेल्लिङ्गं पार्थिवं यः समाचरेत् ॥३२०॥

अद्य दीर्घायुष्ट्व-धनवत्व-श्रीमत्व-पुत्रवत्व बलवत्व-सुखित्व-वरेष्टप्राप्तिकामनया पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

---

१. ने० पा०, महेश्वराः ।

पार्थिवपूजायाम्—

तस्मात्तु[1] पार्थिवं लिङ्गं ज्ञेयं सर्वार्थसाधकम् ॥३२१॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकामनया पार्थिवं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्कान्दे पार्थिवादिलिङ्गघटनस्य—

प्रतिमालिङ्गवेदीषु यावन्तः परमाणवः ।
तावत्कल्पं महाभोगैस्तत्कर्त्तास्ते शिवे पुरे ॥३२२॥

सुनिर्मितं तु यो लिङ्गं कृत्वाऽर्चयति शंकरम् ।
स प्राप्नोत्यक्षयं लोकं निर्माणसदृशं फलम् ॥३२३॥

पुत्रः शिष्योऽथ पत्नी वा पतिधर्मपरायणा ।
भक्त्या निर्माति यल्लिङ्गं स्वयं तन्निर्मितं भवेत् ॥३२४॥

परिमाणमाह—

अक्षादल्पं परीमाणं न लिङ्गं कारयेत् क्वचित् ।
तथैवाङ्गुष्ठतो ह्रस्वं न कदाचित् समाचरेत् ॥३२५॥

इदं मृदादिषु, रत्नादौ मानान्तर माह

अप्यामलकवल्लिङ्गं (सम्यक्) कृत्वाभिपूज्य च ।
हिरण्यमयं रत्नमयं शिवलोके महीयते ॥३२६॥

तथा—

लिङ्गमस्तकविस्तारो लिङ्गोच्छ्रायसमोभवेत् ।
द्विगुणः परिणाहः स्यात्तस्य पीठी व्यवस्थिता ॥२२७॥

कर्कशं कपिलं लिङ्गं तथा युग्मविवर्जितम् ।
नैवसिद्धिप्रदं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३२८॥

अद्य लिङ्गयुतवेद्यारम्भकमृत्पिण्डस्थपरमाणुसमसंख्यकल्पावच्छिन्नबहुमहाभोगयुतात्मशिवपुराधिकरणकवासकामनया पार्थिवशिवलिङ्गघटनमहं करिष्ये ।

एवं गोमयादिलिङ्गस्यघटनेपि कामना

१. ने० पा०, तस्मात्तो ।

नन्दिकेश्वरे पार्थिवलिङ्गघटनस्य —

क्रीडातोपि च यो बाल्यात्लिङ्गं करोति पांशुना ।
लभते राज्यमेकान्तं निःसपत्नमकण्टकम् ॥३२९॥

अद्य ऐहिका[1]न्तिकनिःसपत्नाकण्टकराज्यप्राप्तिकामः पार्थिवशिवलिङ्गघटनमहङ्करिष्ये ।

देवीपुराणे पार्थिवादिलिङ्गपूजायां मृदाहरणादि —

मृदाहरणसंघट्टः प्रतिष्ठाह्वानमेव च ।
स्नपनं पूजनञ्चैव विसर्ज्जनमतः परम् ॥३३०॥

क्रमेण मन्त्रानाह—

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति स्मृतः ॥३३१॥

भविष्यपुराणे पूजामन्त्राः—

ॐ नमः शिवाय । ओं शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः । ओं भवाय जलमूर्त्तये नमः । ओं रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः । ओं उग्राय वायुमूर्त्तये नमः । ओं भीमायाकाशमूर्त्तये नमः । ओं पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः । ओं महादेवाय सोममूर्त्तये नमः । ओं ईशानाय सूर्य्यमूर्त्तये नमः ॥

मूर्त्तयोऽष्टौ शिवस्यैताः पूर्वादिक्रमयोगतः ।
आग्नेय्यन्ताः प्रयोज्यास्तु वेद्यां लिङ्गे शिवं यजेत् ॥३३२॥

पूर्वतो वामावर्त्तेनाग्नेयान्ता वेद्यामष्टौ मूर्त्तयः पूज्याः ।
ओं नमः शिवायेति मन्त्रेण लिङ्गे शिवं पूजयेदित्यर्थः ।

नन्दिपुराणे—

गोभूमिवस्त्रदानादिबलिपुष्पनिवेदने ।
ज्ञेयो नमः शिवायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥
सर्वमन्त्राधिकश्चायमोङ्काराद्यः षडक्षरः ॥३३३॥

अथ पूजादिविधाने विष्णुः

स्नातः सुप्रक्षालितपाणिपादः शुचिर्बद्धशिखो दर्भपाणिराचान्तः प्राङ्मुख उदङ्मुखोपविष्टो ध्याती मौनी देवतां सम्पूजयेत् ।

---

१. ने० पा० एकान्तिक ।

गौत[1]मस्मृतिः—

रात्रावुदङ्मुखः कुर्य्याद्दैवकार्य्यं सदैव हि ।
शिवार्च्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्य्यादुदङ्मुखः ॥३३४॥

स्कन्दपुराणे—

स्नात्वा शुद्धे समे देशे गोमयेनोपलेपिते ।
सदासीनः सदा मौनी निश्चलोदङ्मुखः शिखी[2] ॥३३५॥
विचित्रमासनं तत्र निधाय सुमनोहरम् ।
अगस्त्येनैव शास्त्रेण प्रोक्तलक्षणलक्षितम् ॥३३६॥
आधाय श्रद्धया तत्र शिवलिङ्गं समाहितः ।
तत्रैवावाह्य देवेशं प्रणवेन हृदि स्थितम् ॥३३७॥
अर्घं दत्वा द्विजश्रेष्ठाः पूर्वोक्तेनैव मन्त्रतः ।
पुनः स्नाप्य महादेवमापोहिष्ठादिभिस्त्रिभिः ॥३३८॥
पुनराचमनं दत्वा प्रतिष्ठाप्यासने हरम् ।
दत्वा वस्त्रोपवीतञ्च भूषणानि च सादरम् ॥३३९॥
गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपञ्चैव निवेदयेत् ।
पंचाक्षरेण मन्त्रेण प्रणवेनोभयेन तु ॥३४०॥
हविर्न्निवेद्य देवाय पानीयेन सहादरात्[3] ।
पुनराचमनं दत्वा ताम्बूलं सोपदंशकम् ॥३४१॥
माल्यं दत्वानुलेपं च प्रणमेद् भुवि दण्डवत् ।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थश्च सुव्रतः ॥३४२॥
एवं दिने दिने देवं पूजयेदम्बिकापतिम् ।
संन्यासी देवदेवेशं प्रणवेनैव पूजयेत् ॥३४३॥
नमोऽन्तेन शिवेनैव स्त्रीणां पूजा विधीयते ।
विविक्तानाञ्च शूद्राणामेव पूजा प्रकीर्त्तिता ॥३४४॥
अन्येषामपि सर्वेषां शूद्राणां तु पूजादौ प्रणमेत् ।

---

१. ने० पा, गौतम ।
२. तत्रैव, सुखः ।
३ तत्रैव, महादरात् ।
४. श्लोक संख्या ३४२ सँ ३४४ धरि नेपाल पाण्डुलिपिक अंश थिक ।

भविष्यपुराणे—

सर्वाङ्गज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने[1] ।
नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत ॥३४५॥

अनन्तकान्तिसम्पन्न अनन्तासनसंस्थित ।
अनन्तकान्तिसम्भोग परमेश नमोस्तु ते ॥३४६॥

परापरपरातीत उत्पत्तिस्थितिकारक ।
सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोस्तु ते ॥३४७॥

बहुरूप महारूप सर्वरूपोत्तमोत्तम ।
पशुपाशार्णवातीत वरप्रद नमोऽस्तु ते[2] ॥३४८॥

स्वभावनिर्मलाभोग सर्वव्याधिविनाशन ।
योगियोगिमहायोगि योगीश्वर नमोस्तु ते ॥३४९॥

निरञ्जन निराधार साधार निरुपद्रव ।
प्रसन्न परमेशान महेशान नमोऽस्तु ते ॥३५०॥

जिह्वाचपलभावेन (न स्तुतं नाम) यन्मया ।
तत्क्षन्तव्यमनौपम्य कस्त्वां स्तौति गुणालयम्[3] ॥३५१॥

कृत्वा लिङ्गप्रतिष्ठान्तु ध्यात्वा लिङ्गं सदाशिवम् ।
पूजयित्वा महादेवं स्तवमेनमुदीरयेत्[4] ॥३५२॥

लिङ्गस्तवं महापुण्यं यः[5] शृणोति सदा नरः ।
नोत्पद्यते स संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ॥३५३॥

---

१ ने० पा० महात्मनः ।
२ श्लोक संख्या ३८४=ने० पा० क अंश थिक ।
३ श्लोक संख्या ३५०—३५१, ने० पा० क अंश थिक ।
४ ३५२संख्यक श्लोकक अन्तिम दू चरण ने० पा०क अंश थीक ।
५ ने० पा०—दिनेदिने

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रृणुयाल्लिङ्गसंस्तवम् ।
पापकञ्चकनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ॥३५४॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ।
विश्वाद्यं विश्वरूपं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥३५५॥

नन्दिकेश्वरे शिवलिङ्गार्चनस्य —

लिङ्गं समर्चयेन्नित्यं महतीं श्रियमाप्नुयात् ॥३५६॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं महालक्ष्मीप्राप्तिकामो घटयित्वा पार्थिवशिवलिङ्गमहमर्चयिष्ये ।

सहस्रलिङ्गार्चनस्य—

सहस्रमर्चयेल्लिङ्गं निरयं स न पश्यति ।
शिवलोकमवाप्नोति भुक्त्वा भोगाननुत्तमान् ॥३५७॥

तथा—

सहस्रपूजनात् सोऽपि लभते वाञ्छितं फलम्[1] ॥३५८॥

अद्यादि निरयादर्शनानन्दितबहुभोगभुक्तिपूर्वकरुद्रलोकप्राप्तिकामनया सहस्रपार्थिवलिङ्गान्यहमर्चयिष्ये[2] ।

लक्षलिङ्गपूजनस्य—

लक्षं पूजयते यस्तु शिवत्वं लभते ध्रुवम् ॥३५९॥

अद्यादि शिवत्वप्राप्तिकामनया लक्षं पार्थिवशिवलिङ्गान्यहं पूजयिष्ये ।

---

१. ने० पा० सँ प्राप्त ।
२. तत्रैव, शिवलिङ्गस्याहमर्चयिष्ये ।

दशलक्षलिङ्गपूजनस्य—

लक्षैर्दशभिरिन्द्रत्वम् ॥३६०क॥

अद्यादि इन्द्रत्वप्राप्तिकामो दशलक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

विंशतिलक्षलिङ्गपूजनस्य—

ब्रह्मत्वं विंशतेः स्मृतम् ॥३६०ख॥

अद्यादि ब्रह्मत्वप्राप्तिकामो विंशतिलक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

त्रिंशल्लक्षलिङ्गपूजनस्य—

त्रिंशल्लक्षैस्तु सायुज्यम् ॥३६१॥

शिवस्येति शेषः ।

अद्यादि शिवसायुज्यप्राप्तिकामस्त्रिंशल्लक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

चत्वारिंशल्लक्षपूजनस्य--

रुद्रत्वञ्च चतुर्गुणैः ॥३६२॥

[विद्यापति]

चतुर्गुणैर्दशभिश्चत्वारिंशल्लक्षैरित्यर्थः ।

अद्यादि रुद्रत्वकामश्चत्वारिंशल्लक्षपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहङ्करिष्ये ।

कोटिलिङ्गपूजनस्य—

लक्षेण शिवतां याति कोटिमभ्यर्च्य गच्छति ।
स्वशरीरेण सायुज्यं पुनरावृत्तिदुर्ल्लभम् ॥३६३॥

अद्यादि पुनरावृत्तिरहितत्व शिवसायुज्यप्राप्तिकामः कोटिसंख्यकपार्थिवशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

शिवधर्म्मे पञ्चगव्यप्रोक्षितान्न[1]लिङ्गपूजनस्य—

पञ्चगव्येन सम्प्रोक्ष्य सदालिङ्गं प्रपूजयेत् ।
अन्नलिङ्गन्तु[2]कृत्वार्च्य लभते कामिकं[3] फलम् ॥३६४॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य पञ्चगव्यसंप्रोक्षितान्नमयलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

---

१. ने० पा०, प्रोक्षितार्थलिङ्ग ।
२. तत्रैव, अन्तर्लिङ्ग ।
३. तत्रैव, कान्तिकम् ।

गुडमयलिङ्गपूजनस्य—

गुडलिङ्गं समभ्यर्च्च्य परं सौभाग्यमाप्नुयात् ।
कन्याशतपतिश्चैव प्रतिराज्येश्वरो भवेत् ॥३६५॥
नारी चैव सहस्रेण सापत्नेन वृता सती ।
लभते सौभाग्यमतुलं सर्वेषामुपरिस्थितम् ॥३६६॥
रमते पुत्रपौत्रैश्च सुखमेकान्तमश्नुते ।
अर्च्चयेच्च नरोनारी खण्डलिङ्गञ्च नित्यश: ॥३६६ क॥

अद्य सौभाग्यकन्याशतपतित्वप्रतिराज्येश्वरत्वप्राप्तिकामो भगवत: शिवस्य गुडमयलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्त्रीकर्तृकगुडमयलिङ्गपूजनस्य—

अद्य बहुसपत्नीपरिवृतत्वातुलसौभाग्यसर्वोपरिस्थितत्वबहुपुत्रपौत्रहेतुकं सन्तोषं-कान्तसुखावाप्तिकामनया गुडमयशिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

खण्डमयलिङ्गपूजने स्त्रिया इयमेव कामना । पुरुस्य तु पूर्वा ।

इतिपूर्वोक्तफलत्वयानुवत्तौ सत्यामभिधानात् ।

शर्कराघटितशिवलिङ्गपूजनस्य—

कृत्वा लिङ्ग[1]न्तु सितया प्रत्यहं य: समर्च्चयेत् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति षड्भिर्मासैर्न संशय: ॥३६७॥

[विद्यापति]

सिताशर्करा

अद्यादिसर्वकामावाप्तिकामनया सितया घटयित्वा षण्मासान् यावदहरह: शिवलिङ्गमहमर्चयिष्ये ।

नवनीतमयलिङ्गपूजनस्य—

नवनीतमये लिङ्गे लभते चेप्सितं फलम् ।
षण्मासेन विशुद्धात्मा शिवलोके महीयते ॥३६८॥

१. ने० पा०, लिङ्गं ।

अद्यादि ईप्सितफलप्राप्तिविशुद्धात्मत्व-शिवलोकमहितत्वकामनया षण्मासान् यावत्प्रत्यहं नवनीतमयशिवलिङ्गमपूजनहङ्करिष्ये[1] ।

लवणमयलिङ्गपूजनस्य —

लवणेन[2] तु लिङ्गेन लभेत्सौभाग्यमुत्तमम् ॥३६९॥

अद्योत्तमसौभाग्यप्राप्तिकामनया लावणं लिङ्गमहं पूजयिष्ये[3] ।

पार्थिवशिवलिङ्गसहस्रपूजनस्य —

बालुकानि च लिङ्गानि पार्थिवानि च कारयेत् ।
सहस्रपूजनात् सोऽपि लभते वाञ्छितं फलम् ॥३७०॥

अद्यादि ईप्सितफलप्राप्तिकामनया सहस्रं पार्थिवशिवलिङ्गान्यहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

बालुकामयशिवलिङ्गपूजनस्याप्येतदेव फलम् ।

एकदिवसेनैव पूजनत्वस्येति योज्यम् ।

शिवधर्म्मे पाषाणलिङ्गपूजनस्य—

ब्रह्मा पूजयते नित्यं लिङ्गं शैलमयं शुभम् ।
तस्य सम्पूजनात्तेन प्राप्तं ब्रह्मत्वमुत्तमम् ॥३७१॥

[विद्यापति]

नित्यंयावज्जीवम्

अद्यादि यावज्जीवमुत्तमब्रह्मत्वप्राप्तिकामः प्रत्यहं शैलं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

इन्द्रनीलमयलिङ्गपूजनस्य—

इन्द्रनीलमयं लिङ्गं विष्णुरर्च्चयते सदा ।
विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेन सोऽद्भुतैकसनातनम् ॥३७२॥

[विद्यापति]

सदानित्यम्

अद्यादि यावज्जीवमद्भुतैकसनातनविष्णुत्वभवनकामनया प्रत्यहमिन्द्रनीलमयं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

---

१. ने० पा०, पूजयिष्ये ।

२. तत्रैव, लावणेन ।

३. तत्रैव, करिष्ये ।

मणिमयलिङ्गपूजनस्य—

शक्रोऽपि देवदेवेन्द्रो लिङ्गं मणिमयं शुभम् ।
नित्यमर्च्चयते भक्त्या तेन शक्रत्वमाप्तवान् ॥३७३॥

अद्यादि यावज्जीवं शक्रत्वभवनकामः प्रत्यहं मणिमयशिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये।

हेमलिङ्गपूजनस्य—

लिङ्गं हेममयं कान्तं धनदोऽर्च्चयते सदा ।
तेनासौ[1] धनदोदेवो धनदत्वमवाप्तवान् ॥३७४॥

अद्यादि यावज्जीवं धनदत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य हेमलिङ्गपूजनं प्रत्यहमहं करिष्ये।

रौप्यलिङ्गपूजनस्य—

विश्वेदेवा महात्मानो रौप्यं लिङ्गं मनोहरम् ।
यजन्ते विधिवद्भक्त्या तेन विश्वत्वमाप्नुयुः ॥३७५॥

अद्य विश्वेदेवत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य रौप्यं लिंगमहं पूजयिष्ये।

पित्तललिङ्गपूजनस्य—

वायुः परेण भावेन लिङ्गं पित्तलजं शुभम् ।
त्रिकालेऽर्च्चयते तेन वायुत्वं प्राप्तमुत्तमम् ॥३७६॥

अद्यानौपम्यगुणावहवायुत्वभवनकामो भगवतः शिवस्य पैत्तलं लिङ्गमहं पूजयिष्ये।

कांस्यलिङ्गपूजनस्य—

वसवः कांसिकं लिङ्गं पूजयन्ति विधानतः ।
प्राप्तं तेन महात्मानो वसुत्वं सुमहोदयम् ॥३७७॥

१. ने० पा०, ततोऽसौ।

अद्य सुमहोदयवसुत्वप्राप्तिकामः कांस्यमयं भगवतः शिवस्य लिङ्ग… पूजयिष्ये ।

पार्थिवशिवलिङ्गपूजनस्य—

अश्विनौ पार्थिवं लिङ्गं पूजयेतां विधानतः ।
तेन तावश्विनौ देवौ दिव्यदेहं गतावुभौ ॥३७८॥

अद्य दिव्यदेहाश्वित्व भवनकामो भगवतः शिवस्य पार्थिवलिङ्गमहं पजयिष्ये

स्फटिकलिङ्गपूजनस्य—

स्फटिकं निर्मलं लिङ्गं वरुणोऽर्चयते सदा ।
तेन तद्वरुणत्वंहि प्राप्तमृद्धिबलान्वितम् ॥३७९॥

अद्यादि यावज्जीवमृद्धिबलान्वितवरुणत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य स्फाटिकलिङ्गमहं प्रत्यहं पूजयिष्ये ।

रत्नमयलिङ्गपूजनस्य—

लिङ्गं रत्नमयं पुण्यमग्निरर्चयते सदा ।
अग्नित्वं प्राप्तवांस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥३८०

अद्य तेजोरूपसमन्विताग्नित्वप्राप्तिकामो रत्नमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गम… पूजयिष्ये ।

ताम्रलिङ्गपूजनस्य—

ताम्रलिङ्गं सदाकालं भक्त्या देवो दिवाकरः ।
समभ्यर्च्च्य ततस्तेन प्राप्तं सूर्य्यत्वमुत्तमम् ॥३८१॥

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहमुत्तमसूर्य्यत्वप्राप्तिकामो भगवतः शिवस्य ताम्रमयलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

मौक्तिकलिङ्गपूजनस्य—

मुक्ताफलमयं लिङ्गं सोमः पूजयते सदा ।
तेन सोमोपि सम्प्राप्तः सोमत्वं सततोज्ज्वलम्[1] ॥३८२॥

---

१ ने० पा०, सततोज्ज्वलः ।

अद्यादि यावज्जीवं प्रत्यहं सततोज्ज्वलसोमत्वभवनकामो भगवतः शिवस्य मौक्तिकलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

प्रवाललिङ्गपूजनस्य—

प्रवालकमयं लिङ्गं यजन्ते पन्नगोत्तमाः ।
तेन नागेषु भोगाढ्या यान्ति ते परमं पदम् ॥३८३॥

अद्य भोगाढ्यत्वपरमपदप्राप्तिकामः प्रवालमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

कृष्णायसलिङ्गपूजनस्य—

कृष्णायसमयंलिङ्गं पूजयन्त्यसुरोत्तमाः ।
राक्षसाश्च[1] महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥३८४॥

अद्यादि अमितविक्रमत्वकामः कृष्णायसमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

त्रपुमयलिङ्गपूजनस्य—

त्रपुसीसमयं लिङ्गं पिशाचाः पूजयन्ति ते ।
तेन सर्वे बलोपेताः प्रयान्ति परमं पदम् ॥३८५॥

अद्य बलत्वपरमपदप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य त्रपुमयं सीसकमयं वा लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

त्रैलोहिकलिङ्गपूजनस्य—

त्रैलोहिकं सदाकालं यजन्ते गुह्यकादयः ।
तेन योगबलोपेताः प्रयान्तीश्वरमन्दिरम् ॥३८६॥

[विद्यापति]

त्रैलोहिकं कृष्णायसकनकताम्रमयम् ।

---

१ ने० पा०, रक्षसाञ्च ।

अद्यादि योगबलोपेतात्मेश्वरमन्दिरगमनकामो भगवतः शिवस्य त्रैलोहिक-लिङ्गं यावज्जीवं प्रत्यहं पूजयिष्ये ।

वज्रलौहमयलिङ्गपूजनस्य—

वज्रलौहमयं लिङ्गं यजन्ते मातरः[1] सदा ।
मातृत्वं प्राप्नुयुस्तेन प्रयान्ति परमं पदम् ॥३८७॥

अद्यादि मातृत्वप्राप्तिपूर्वक परमपदप्राप्तिकामो यावज्जीवं प्रत्यहं वज्रलौहमयं भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

वार्क्षलिङ्गपूजनस्य —

वार्क्षं वित्तप्रदं लिङ्गम् ॥३८८॥

[विद्यापति]

वार्क्षं शुभवृक्षभवम् ।

अद्य वित्तप्राप्तिकामो वार्क्षं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

स्फाटिकलिङ्गपूजनस्य —

स्फाटिकं सर्वकमादम् ॥३८९॥

अद्येप्सितफलप्राप्तिकामः स्फाटिकं शिवलिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

लिङ्गाधिकरणकपूजनस्य—

लिङ्गे पूजयते वै शङ्करमग्नौ तु पुष्टये ॥३९०॥

अद्य पुष्टिप्राप्तिकामो भगवतः शङ्करस्य लिङ्गे पूजामहं करिष्ये ।
एवमग्नौ फलम् ।

गुरुमूर्त्यादिषु पूजनस्य—

मोक्षार्थी गुरुमूर्त्तौ च आकाशे च जले स्थले ॥३९१॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामो गुरुमूर्त्तौ शङ्करमहं पूजयिष्ये ।

आकाशजलस्थलान्यतमाधिकरणकस्य पूजनस्यापीदमेव फलम् ।

---

१. मातरं मूले ।

अथावाहनादिः

पुष्पाक्षतैः—भगवन् शिव इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाहनस्थापने विधाय पुष्पाक्षत-दूर्वाकुशत्रयतिलकुङ्कुमबिल्वपत्रैरर्घदानं ततश्चन्दनानुलेपनम् । विहितपुष्पैः विधाय धूपदीपं नानानैवेद्यं वस्त्रं हिरण्यं रत्नं छत्रं प्रत्येकं दद्यात् । प्रदक्षिणीकृत्य प्रणम्य किञ्चित्स्तोत्रं पठित्वा भगवन् शिव क्षमस्वेति विसर्ज्जयेत् ।

पुराण—

सम्पूज्य पशुभर्त्तारं[1] विशुद्धेनान्तरात्मना ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा भक्त्या स्तोत्रमुदीरयेत् ।३९२॥

शिवं शिवकरं शान्तं शिवात्मानं शिवोत्तमम् ।
शिवमार्गप्रणेतारं प्रणमामि सदाशिवम् ॥३९३॥

शाश्वतं शोभनं शुद्धं शश्वद्दोषप्रशोधनम्[2] ।
विश्वविश्वेश्वरं देवं शङ्करं प्रणमाम्यहम् ॥३९४॥

सर्वपापहरन्नाथं सर्वरोगहरं शुभम् ।
सर्वबाधाहरन्नित्यं नमाम्यार्तिहरं विभुम्[3] ॥३९५॥

अस्थानस्थानसंस्थानं संस्थितिं स्थितिभासकम् ।
स्थिरस्थानस्थयोगस्थं स्थावरं प्रणमाम्यहम् ॥३९६॥

ईशानं वरदं देवमीशानं मन्त्रनायकम् ।
श्मशानं सर्वभूतानामीश्वरं प्रणमाम्यहम् ॥३९७॥

इति पूजाविधिं पुण्यं यः शृणोति सकृन्नरः ।
स मुक्तः सर्वपापेभ्यो रुद्रलोके महीयते ॥३९८॥

इति नन्दिकेश्वरप्रोक्तस्तवः ।

---

१. मूले पशुभक्तारम् ।
२. नै० पा०, प्रशोधकम् ।
३. तत्रैव, प्रभुम् ।

अथार्घपात्रम्

लिङ्गपुराणे—

षट्त्रिंशदङ्गुलं पात्रमुत्तमं परिकीर्त्तितम् ।
मध्यमन्तु त्रिभागोनं कनीयो द्वादशाङ्गुलम् ॥३९९॥

वस्वङ्गुलिविहीनन्तु न पात्रं कारयेत् क्वचित् ।
नानाविचित्ररूपाणि पुण्डरीकाकृतीनि च ॥४००॥

शङ्खनीलोत्पलाभानि पात्राणि परिकल्पयेत् ।
रत्नादिरचितान्येव काञ्चीमूलयुतानि च ॥४०१॥

यथालाभं यथाशोभं तथा पात्राणि कारयेत् ।
विना पात्रेण यः कुर्य्यात् प्रतिष्ठां[1] याज्ञिकीं क्रियाम्[2]
विफला जायते सर्वाविहनादिधनापहा ॥४०२॥

अथार्घपात्रफलम्

भविष्यपुराणे सुवर्णपात्रार्घे—

हेमपात्रेण सर्वाणि ईहितानि लभेन्मुने ॥४०३॥

अद्य सर्वेहितप्राप्तिकामनया हेमपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहं करिष्ये ।

रजतपात्रार्घस्य—

अर्घं कृत्वा तु रौप्येण आयूराज्यं सुखानि च ॥४०४॥

अद्यायूराज्यसुखावाप्तिकामनया राजतपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

ताम्रपात्रार्घस्य ।

ताम्रपात्रेण सौभाग्यम् ॥४०५॥

---

१. तत्रैव, प्रतीच्यां ।
२. तत्रैव, क्रिया ।

अद्य सौभाग्यप्राप्तिकामनया ताम्रपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहं करिष्ये ।

मृन्मयपात्रार्घस्य —

धर्म्यन्तु मृन्मयं भवेत् ॥४०६॥

अद्य धर्मावाप्तिकामनया मृन्मयपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

मृन्मयपात्रार्घस्य —

दारवेणार्घपात्रेण यद्दत्वा लभते फलम् ।
तस्माद्दशगुणं देयं[1] पुण्यं मृत्पात्रदानके[2] ॥४०७॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलदशगुणफलप्राप्तिकामो मृत्पात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

ताम्रपात्रार्घदानस्य—

ताम्रपात्रार्घदानेन तस्माच्छतगुणोत्तरम् ।
पलाशपद्मपात्राभ्यां ताम्रपात्रसमं भवेत् ॥४०८॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलशतगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनया ताम्रपात्रेण भगवतो महादेवस्यार्घदानमहङ्करिष्ये ।

पलाशपद्मपत्रान्यतरपात्रकरणकार्घदानस्याप्येतदेव फलम् ।

रौप्यपात्रकरणकार्घदानस्य —

रौप्यपात्रेण विज्ञेयं[3] तस्माल्लक्षगुणाधिकम् ॥४०९॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफललक्षगुणाधिकफलप्राप्तिकामो रौप्यपात्रेण भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

सौवर्णपात्रकरणकार्घस्य—

सुवर्णपात्रविन्यस्तमर्घं कोटिगुणोत्तरम् ॥४१०॥

अद्य दारुमयपात्रकरणकशिवार्घदानफलकोटिगुणोत्तरफलकामनया] सौवर्णपात्रेण भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

---

१. ने० पा० ज्ञेयं ।
२. तत्रैव, मृत्पात्रदानतः ।
३. मूले, विधेयं ।

एवं स्नानार्घनैवेद्यबलिधूपादिषु क्रमात् ।
पात्रान्तरविशेषेण तत्फलं चोत्तरोत्तम् ॥४११॥

रक्तबिल्वाक्षतैः पुष्पैर्द्दधिदूर्वातिलैः कुशैः ।
सामान्यः सर्वदेवानामर्घोऽयं परिकीर्त्तितः ॥४१२॥

[विद्यापति]

रक्तपत्र कुङ्कुमम् ।

अथार्घदानफलम्

तत्र शुद्धार्घदानस्य शिवपुराणे—

अर्घपुष्पप्रदानेन धूपदानेन यत्फलम् ।
दास्यामि च गतिं पुण्यां गाणपत्यञ्च दुर्ल्लभम् ॥४१३॥

अद्य पुण्यगतिदुर्ल्लभगाणपत्यप्राप्तिकामनया भगवते महादेवायार्घदानमहङ्करिष्ये ।

पुष्पफलोपेतार्घदानस्य—

अर्घं पुष्पफलोपेतं यः शिवाय निवेदयेत् ।
स पूज्यः सर्वलोकेषु शिववन्मोदते दिवि ॥४१४॥

अद्य सर्वलोकपूज्यत्वस्वर्गाधिकरणकशिवहर्षतुल्यहर्षकामोऽमुं पुष्पफलोपेतार्घं भगवते शिवाय तुभ्यमहन्ददे ।

गन्धोदकसम्मिश्रार्घस्य—

गन्धतोयेन सम्मिश्रमुदकार्घं दशोत्तरम् ॥४१५॥

अद्य उदकार्घदानजन्यफलदशगुणोत्तरफलप्राप्तिकामोऽमुं गन्धोदकसम्मिश्रार्घं भगवते महादेवाय तुभ्यमहं ददे ।

पञ्चगव्यसमायुतार्घस्य—

पञ्चगव्यसमायुक्तमर्घं दशगुणोत्तरम् ॥४१६॥

अद्योदकार्घदानजन्यफलदशगुणोत्तरफलप्राप्तिकामोऽमुं पञ्चगव्यसमायुक्तमर्घं भगवते महादेवाय तुभ्यमहं ददे ।

अष्टाङ्गार्घस्य—

आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्याज्यमधुतण्डुलाः ।
तिलाः[1] सिद्धार्थकाश्चैतदर्घमष्टाङ्गमुच्यते ॥४१७॥

[विद्यापति]

सिद्धार्थकाः सितसर्षपाः, अम्बुक्षीराद्यष्टयोगेनाष्टङ्गता ।

शिवधर्मे —

आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतञ्च दधितण्डुलाः ।
तिलाः सिद्धार्थकाश्चैतदर्घमष्टाङ्गमुच्यते ॥४१८॥

[विद्यापति]

इत्यष्टाङ्गतोक्ता

योऽष्टाङ्गमर्घमापूर्य्य लिङ्गमूर्द्धिन् विनिक्षिपेत् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥४१९॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामोऽमुमष्टाङ्गार्घं शिवमूर्द्ध्नि विनिक्षिपामि ।

तुल्यमेव फलं प्रोक्तं शिवे चाढ्यदरिद्रयोः ।
तयोरप्यधिकं पुण्यं यः शिवे भक्तिभावितः ॥४२०॥

विभवे सति यो मोहान्न कुर्य्याद्विधिविस्तरम् ।
न तत्फलमवाप्नोति प्रलोभा[2]क्रान्तमानसः ॥४२१॥

तस्मात् पुष्पैः फलैः पत्रैस्तोयैरपि च यत्फलम् ।
तदनन्तफलं ज्ञेयं भक्तिरेवात्र कारणम् ॥४२२॥

अथानुलेपनम्

तत्रोत्कृष्टसुन्धिद्रव्यानुलेपनस्य. भविष्यपुराणे—

लिङ्गानुलेपनं कुर्य्याद्दिव्यगन्धैः सुगन्धिभिः ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ॥४२३॥

अद्य दिव्यवर्षकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम उत्कृष्टसुगन्धिद्रव्यैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गानुलेपमहङ्करिष्ये ।

१. ने० पा०, यवाः ।
२. तत्रैव, प्रमादाक्रान्तमानसः ।

अथ चन्दनानुलेपनस्य—

गन्धानुलेपनात् पुण्यं द्विगुणं चन्दनस्य तु ।
चन्दनादगुरोर्ज्ञेयं पुण्यमष्टगुणाधिकम् ॥४२४॥
कृष्णागुरोर्विशेषेण द्विगुणं फलमिष्यते ।
तस्माच्छतगुणं पुण्यं कुङ्कुमस्य विधीयते ॥४२५॥

तत्र चन्दनाद्यनुलेपनस्य

अद्य दिव्यवर्षकोटिशतद्वयावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामश्चन्दनेन लिङ्गानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

अगुरुणानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यःषोडशवर्षकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामोऽगुरुणा शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

कृष्णागुरुणानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यद्वात्रिंशद्वर्षकोटिशताविच्छन्नशिवलोकमहितत्वकामः कृ... भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

कुङ्कुमानुलेपनस्य—

अद्य दिव्यद्वात्रिंशद्वर्षकोट्ययुतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामः ... भगवतः शिवस्य लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

चतुःसमानुलेपनस्य—

चन्दनागुरुकर्पूरैः श्लक्ष्णपिष्टैः सकुङ्कुमैः ।
लिङ्गं पर्य्याप्तमालिप्य कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥४२६॥

[विद्यापति]

पर्य्याप्तमापीठम् ।

अद्य कल्पकोट्यवच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकवासकामश्चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमैः पिष्टैर्भगवतः शिवस्यापीठं लिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

[विद्यापति]

तत्र कर्पूराभावे चतुःसमे सिह्लकं[1] चतुर्थं योज्यम् ।

१. ने० पा० सिन्दूरम् ।

भविष्यपुराणे चन्दनानुलेपनस्य—

चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कमोशीरपद्मकैः ।
अनुलिप्तः शिवो भक्त्या ददाति मनसेप्सितम् ॥४२७॥

अद्य ईप्सितफलप्राप्तिकाम एभिश्चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमोशीरपद्मकैर्भगवतः शिवस्यानुलेपनमहं करिष्ये ।

[विद्यापति]

पद्मकं पद्मकाष्ठम्

कर्पूरव्यतिमिश्रकस्तूरिकान्वितचन्दनाद्यनुलेपनस्य—

यः समालभते लिङ्गं चन्दनागुरुचम्पकैः ।
कर्पूरव्यतिमिश्रैश्च तथा कस्तूरिकान्वितैः ॥४२८॥

स्वमेकानां कोटिशतं विहृत्य त्रिदशालये ।
पुनः प्रजायते भूमौ राजराजो न संशयः ॥४२९॥

[विद्यापति]

स्वमेकः संवत्सरः स्वमेकः संवत्सर इतिश्रुतेः ।

अद्य वर्षकोटिशतावच्छिन्नत्रिदशालयविहरणपूर्वकपृथिव्यधिकरणकराजराजभवनकामनया एभिः कर्पूरव्यतिमिश्रकस्तूरिकान्वितचन्दनागुरुचम्पकैर्भगवतः शिवलिङ्गमहमनुलेपयिष्ये ।

शिवपुराणे गन्धदानस्य—

मासे मासे तु योऽश्नीयाद् यावज्जीवं द्विजोत्तमः ।
गन्धदानेन तत्पुण्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥४३०॥

अद्य यावज्जीवमासान्तमात्रभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एष गन्धो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

कर्पूरव्यतिमिश्रेण[1] चन्दनेनानुलेपयेत् ।
विद्याधरत्वमाप्नोति रमते सुरपूजितः ॥४३१॥

अद्य विद्याधरत्वसुरपूजितात्महर्षवत्वप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहं करिष्ये ।

१. ने० पा०, मिश्र ।

कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेनदशरात्राद्यनुलेपनस्य

अश्वमेधफलञ्चैव दशरात्रेण चाप्नुयात् ।
मासेन गणतां याति अब्दात् सायुज्यमाप्नुयात् ॥४३२॥

अद्यादि दशरात्रं यावत् प्रतिदिनमश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन भगवतः शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन मासानुलेपनस्य—

अद्यादि शिवगणत्वप्राप्तिकामनया मासं यावत् प्रत्यहं कर्पूरव्यतिमिश्र भगवतः शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

वर्षव्यापकसकर्पूरचन्दनानुलेपनस्य—

अद्याब्दपर्यन्तमहरहः शिवसायुज्यप्राप्तिकामः कर्पूरव्यतिमिश्रचन्दनेन शिवस्यानुलेपनमहङ्करिष्ये ।

बहुगन्धकरणकानुलेपनस्य—

गन्धैश्च लेपयेल्लिङ्गं दिव्यैश्चैव सुगन्धिभिः ।
वाजपेयस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥४३३॥

अद्य वाजपेययज्ञफलसमफलप्राप्तिकाम एभिर्मनोज्ञगन्धैर्भगवतः शिवस्य महमनुलेपयिष्ये ।

भविष्ये—

कालेयकं तुरुष्कञ्च रक्तं चन्दनमेव च ।
यान्यात्मनः सदेष्टानि तानि शस्तान्युपाकुरु ॥४३

[विद्यापति]

कालेयकं कलिकाया[1] काष्ठं, तुरुष्कं सिह्लकम् ।

शिवपुराणे—

भूमिदानेन यत्पुण्यं कालेयं यत्प्रयच्छति[2] ।
चतुर्गुणसहस्रन्तु गन्धदानेन तत्फलम् ॥४३

---

१ ने० पा० कालियाकाष्ठं ।
२ सूले॰ यः प्रयच्छति ।

कालेयकदानस्य ।

अद्य भूमिदानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामनया इदं कालेयकं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अथ गन्धदानस्य —

अद्य भूमिदानजन्यपुण्यचतुःसहस्रगुणपुण्यप्राप्तिकामनया एषगन्धो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

कुङ्कुमानुलेपनस्य—

वर्षकोटिसहस्राणां द्वे च त्रिंशत्तथैव च ।
कुङ्कुमेनानुलिप्येह शिवलोके महीयते ॥४३६॥

अद्य द्वात्रिंशद्वर्षकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामो भगवतः शिवस्य कुङ्कुमेनानुलेपनमहं करिष्ये ।

अथानुलिप्य संवीजनस्य

भविष्यपुराणे चतुःसमानुलेपनानन्तरं—

संवीज्य तालवृन्तेन लिङ्गं गन्धैः प्रलेपनम्[1] ।
दशवर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥४३७॥

[विद्यापति]

तालवृन्तेन व्यजनेन ।

अनुलेपनं संवीजनाङ्गमत्रैव विधेयं । फलवत्सन्निधिरितिन्यायात् ।

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामस्तालवृन्तेन चतुःसमानुलिप्तं शिवलिङ्गमहं वीजयिष्ये ।

शैवामृते संवीजनस्य—

संवीज्य तालवृन्तेन लिङ्गं गन्धानुलेपितम् ।
वर्षकोटिसहस्राणि वायुलोके महीयते ॥४३८॥

अद्य वर्षकोटिसहस्रावच्छिन्नवायुलोकमहितत्वकामस्तालवृन्तेन चतुःसमानुलिप्तं शिवलिङ्गमहं वीजयिष्ये ।

१ ने० पा०, प्रलेपितम् ।

अथ कृष्णतिलदानादिदानफलम्

स्कन्दपुराणे—

दद्यात्कृष्णतिलांश्चैव तथासिद्धार्थकांश्च हे ।
यो मे देवि सदा मूर्द्धि्न स मे नन्दिसमो भवेत् ॥४३९॥

सर्वेषां प्रलये चैव प्राप्ते त्रैलोक्यसञ्चरे ।
त्यक्त्वा सर्वाणि दुःखानि मामेव प्रतिपद्यते ॥४४०॥

अद्य नन्दितुल्यत्वसकलप्रलयोत्तरसर्वदुःखपरित्यागपूर्वकशिवात्मत्वप्राप्ति एतान् कृष्णतिलान् सितसर्षपान् वा भगवतः शिवस्य मूर्द्धि्न दास्ये ।

अथ पुष्पत्रोटनसमयः

भविष्यपुराणे—

कनकानि कदम्बानि रात्रौ देयानि शङ्करे ।
दिवा शेषानि चान्यानि दिवारात्रौ च मल्लिका ॥४४१॥

[विद्यापति]

देयानि त्रोटनीयानि । दो अवखण्डन इति धात्वनुसारात् । न पुनः कनक पूजायां रात्रिविधानं नवा रात्रिपूजायां कनकविधानमिदम् । उभयत्र समाचार धादित्यनिरुद्धधर्म्माधिकरणिकाः । नच पुष्पविधानप्रकरणपरित्यागप्रसङ्गो दो विधिमध्ये निषेधस्यापि प्रतीयमानत्वात् प्रकृतस्यापि निषेधे तात्पर्य्यात् ।

प्रहरं तिष्ठते जाती करवीरमहर्न्निशम् ॥४४२॥

ततः परं निर्म्मल्यतां यातीत्यर्थः

लघुहारीतः—

स्नानं कृत्वा तु ये केचित् पुष्पं चिन्वन्ति मानवाः ।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति भस्मीभवति काष्ठवत् ॥४४३॥

दक्षः—

द्वितीये च तथा भागे वेदाभ्यासो विधीयते ।
समित् पुष्पकुशादीनां सकालः परिकीर्त्तितः ॥४४४॥

अथ पुष्पफलम्

निषिद्धपुष्पस्य शिवधर्म्मे—

पुष्पैररण्यसम्भूतैः पत्रैर्वा गिरिसम्भवैः ।
अपर्युषितनिश्छिद्रैः प्रोक्षितैर्जन्तुवर्जितैः ॥४४५॥

आत्मारामोद्भवैर्वापि सुपुष्पैः पूजयेत् शिवम् ।
पुष्पजातिविशेषेण भवेत् पुण्यं ततोधिकम् ।४४६॥

पुष्पसामान्यं पूजनात् । पुष्पसामान्यप्रपूजने फलम्—

तपःशीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे ।
दत्वा दशसुवर्णानि यत्फलं कुसुमस्य तत् ॥४४७॥

[विद्यापति]

विशिष्यानुक्तफलविषयमिदम् ।

अद्य तपःशीलगुणोपेतवेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामेन पुष्पेण भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

पुष्पजातिविशेषेषु मध्ये अर्क्कपुष्पस्य—

अर्क्कपुष्पे तथैकस्मिन् शिवाय विनिवेदिते ।
दश दत्वा सुवर्णानि यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥४४८॥

[विद्यापति]

तथेत्युक्त्वाऽरण्यसम्भवत्वादि रूपयति । दत्वा पूर्वोक्ते विप्रे ।

अद्य तपःशीलगुणोपेते वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकदशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदमर्क्कपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

करवीरपुष्पस्य—

एवं पुष्पविशेषेण फलं तस्य ततोऽधिकम् ।
ज्ञेयं पुष्पान्तरज्ञेन यथा स्यात्तन्निबोध मे ॥४४९॥

अर्क्कपुष्पसहस्रेभ्यः करवीरं विशिष्यते ॥४५०॥

[विद्यापति]

करवीरमित्येकवचनस्वरसादेकस्यैवकरवीरपुष्पस्यार्क्कसहस्रदानफलसमफलता। एवमन्यत्रापि।

अद्यार्क्कपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं करवीरपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्।

जातीविजयपाटलाश्वेतमन्दारसितपद्मान्यतमपुष्पेपीयमेवकामना।

तथा च भविष्यपुराणे—

करवीरसमाज्ञेया जातीविजयपाटलाः
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मञ्च तत्समम् ॥४५१॥

[विद्यापति]

तत्समं करवीरसमम्, विजयोऽर्ज्जुनः।

बिल्वपत्रस्य—

करवीरसहस्रेभ्यो बिल्वपत्रं विशिष्यते ॥४५२॥

अद्य करवीरसहस्त्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं बिल्वपत्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्।

पद्मस्य—

बिल्वपत्रसहस्रेभ्यः पद्ममेकं विशिष्यते ॥४५३॥

अद्य बिल्वपत्रसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं पद्मपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्।

बकस्य—

पद्मपुष्पसहस्रेभ्यो बकमेकं विशिष्यते ॥४५४॥

अद्य पद्मपुष्पसहस्रदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं बकपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्।

स्य—
वकपुष्पसहस्रेभ्या एकं धुस्तूरकं वरम् ॥४५५॥
य वकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं धुस्तूरकपुष्पं भग-
तुभ्यं मया दत्तम् ।

य—
धुस्तूरकसहस्रेभ्यो बृहतीपुष्पं विशिष्यते ॥४५६॥

ति]
हतीपुष्पं कंटकारिकापुष्पम्[1] ।
य धुस्तूरकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं बृहतीपुष्पं
वाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

—
बृहतीपुष्पसहस्रेभ्योद्रोणपुष्पं विशिष्यते ॥४५७॥
य बृहतीपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं द्रोणपुष्पं भगवते
भ्यं मया दत्तम् ।

स्य—
द्रोणपुष्पसहस्रेभ्यः अपामार्गं विशिष्यते ॥४५८॥

ति]
पामार्गमपामार्गपुष्पं सन्दंशपातात् ।
य द्रोणपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदमपामार्गपुष्पं भगवते
भ्यं मया दत्तम् ।

—
अपामार्गसहस्रेभ्यः कुशपुष्पं विशिष्यते ॥४५९॥
यापामार्गपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं कुशपुष्पं भगवते
भ्यं मया दत्तम् ।

—
कुशपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते ॥४६०॥
य कुशपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं शमीपुष्पं भगवते
भ्यम्मया दत्तम् ।

1. अमरकोष, २/४/९३ ।

धयूर फूलसँ पूज
सहस्र व
आइ ह
ई धयूरक फूल १
बृहती पुष्पसँ पू
सहस्र ध
[विद्यापति]
बृहती
आइ स
ई बृहतीपुष्प भ
द्रोण फूलसँ पूज
सहस्र
आइ ह
कामनासँ ई द्रो
अपामार्ग (चिर
सहस्र
[विद्यापति]
अपाम
आइ ह
ई अपमार्ग फूल
कुश पुष्पसँ पूज
सहस्र
आइ
कामनासँ ई कु
शमी पुष्पस पू
सहस्र
आइ
शमी पुष्प भग

नीलोत्पलस्य ।

शमीपुष्पसहस्रेभ्यः श्रीमन्नीलोत्पलं वरम् ।
अतः परतरं नास्ति पुष्पमन्यद्विशेषतः ॥४६१॥

अद्य शमीपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं नीलोत्पलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शमीपुष्पस्य ।

शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमिष्यते ॥४६२॥

[विद्यापति]

बृहती कण्टकारिका । तुल्यं-तुल्यफलम् ।

धत्तूरकसहस्रेभ्यो बृहतीपुष्पं विशिष्यते ॥४६२ख॥

इति तत्फलमतिदिश्यते ।

अद्य धत्तूरकसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं शमीपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तम् ।

नागकेसर-चम्पक-पुन्नागानामान्यतमस्य —

नागचम्पकपुन्नागा धत्तूरकसमा स्मृताः ॥४६३॥

[विद्यापति]

पुन्नागः पुनाल इति प्रसिद्धः । धत्तूरकसमा धत्तूरकसफलसफलाः ।

वकपुष्पसहस्रेभ्य एकं वरमित्यादि तत्फलमतिदिश्यते ।

अद्य वकपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया इदं नागकेसरपुष्पं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

[विद्यापति]

चम्पकपुन्नागदानेप्येतदेव फलम् ।

अर्कपुष्पादारम्य पुन्नागपुष्पपर्यन्तं बहुपुष्पदानपक्षे —

अद्य प्रतिपुष्पं दशसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतान्यर्कपुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

करवीरपुष्पेषु -

अद्य प्रतिपुष्पमर्कपुष्पसहस्रदानफलविशिष्टफलप्राप्तिकामनया एतानि करवीरपुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

[विद्यापति]

इत्यादिक्रमेण तत्तद्वाक्येषु प्रतिपुष्पमिति योज्यम् ।

इदं पुष्पमित्यपहाय एतानि पुष्पाणीति प्रयोक्तव्यमिति विशेषः।

न्दिपुराणे —

पुष्पविशेषे मल्लिकादीनामन्यतमपुष्पस्य ।

मल्लिकोत्पल-पद्मानि जातीपुन्नागचम्पकाः ।
अशोक[1]श्वेतमन्दारकर्णिकारवकानि च ॥४६४॥
करवीरार्कमन्दारशमीतगरकेसरः ।
कुशापामार्गकुमुदकदम्बद्रोणकानि च ।४६५॥
पुष्पैरेतैर्यथालाभं यो नरः पूजयेच्छिवम् ।
स यत्फलमवाप्नोति तदेकाग्रमना: शृणु ॥४६६॥
सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः ।
पुष्पमालापरिक्षिप्तैर्गीतवादित्रनादितैः ॥४६७॥
तन्त्रीमधुरवाद्यैश्च स्वच्छन्दगमनालसैः ।
रुद्रकन्यासमाकीर्णैर्देवदानवदुर्ल्लभैः ॥४ ८॥
दोधूयमानश्चमरैः स्तूयमानः[2] सुरासुरैः ।
गच्छेच्छिवपुरं दिव्यं यच्च चारुचिरं भवेत् ॥४६९॥

[विद्यापति]

केसरवकुलनागकेसर इति कश्चित्

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशसर्वकामसमन्वितपुष्पमालापरिक्षिप्तगीतवादित्रयुत-
...ायमानमनोज्ञतन्त्रीकस्वच्छन्दगमनरुद्रकन्यासमाकीर्णदेवदानवाभीष्टबहुविमान-
...णकबहुचामरवीज्यमानसुरासुरस्तूयमानात्मकचिरचारुदिव्यशिवपुरगमनकाम एभिर्म-
...काकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

एवमुक्तपुष्पान्तरेऽपि कामना ।

...रपुष्पेषु भविष्ये–

धत्तू[3]रकैस्तु यो लिङ्गं सकृत्पूजयते नरः ।
स गोलक्षफलं प्राप्य शिवलोके महीयते ॥४७०॥

अद्य गोलक्षफलसमाफलप्राप्तिपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया एतैर्धत्तूर-
...र्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

नागचम्पकपुन्नागा धत्तूरकसमाः स्मृताः ।
इति तत्फलातिदेशात् ।

१. ने० पा०, अशोकाश्वेत मन्दारः ।
२. तत्रैव, संस्तुतश्च ।
३. तत्रैव, धस्तूर।

अथाखण्डविल्वपत्रेषु भविष्ये—

विल्वपत्रैरखण्डैस्तु यो लिङ्गं पूजयेत् सकृत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥४७१॥

[विद्यापति]

अखण्डैर्निश्छिद्रपत्रत्रयैः ।

अद्य सर्वपापविमुक्ति-शिवलोकमहितत्वकामनया एतैरखण्डबिल्वपत्रैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

तत्रैवकण्टकारिकाकुसुमेषु—

बृहतीकुसुमैर्भक्त्या यो लिङ्गं सकृदर्च्चयेत् ।
गवामयुतदानस्य फलं प्राप्य शिवं व्रजेत् ॥४७२॥

[विद्यापति]

बृहतीकण्टकारिका ।

गवामयुतदानस्य शक्रेण सह नित्यमोदनम् ।

अद्यायुतगवीदानफलसमफलप्राप्तिपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया एभिः कण्टकारिकाकुसुमैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

शमीपुष्पेऽप्विदमपि फलम् ।

शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमिष्यते इतितत्फलातिदेशात् ।
शैवामृते भविष्यपुराणीयाशोकादिपुष्पेषु—

अशोकश्वेतमन्दार-कर्णिकार-वकानि च ।
करवीरार्क-मन्दार-शमी-तगर-केशरम् ॥४७३॥

पुष्पैरेतैर्यथालाभं यो नरः पूजयेच्छिवम् ।
स यत्फलमवाप्नोति तदेकाग्रमनाः शृणु ॥४७४॥

]

सूर्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः ।
दोधूयमानश्चमरैः शिवलोके महीयते ॥४७५॥

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशसमप्रभसार्वकामिकबहुविमानकरणकबहुचामरवीज्य-मानकशिवलोकमहितत्वकाम एभिरशोकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पुराणे अर्ककरवीरकुशोन्मत्तकानामन्यतमपूजायाः—

अर्कञ्च करवीरञ्च कुशमुन्मत्तमेव च ।
यो मे प्रयच्छते देवि लभते गणनाथताम् ॥४७६॥

अद्य गाणपत्यप्राप्तिकाम एभिरर्कपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

करवीरकुशधत्तूरकान्यतमपुष्पपूजनेप्पीयमेव कामना—

पुराणीयपुष्पदानस्य—

एकपुष्पप्रदानेन लिङ्गेषु प्रतिमासु वा[1] ।
अशीतिं कल्पकोटीनां दुर्गतिं न नरो व्रजेत् ॥४७७॥

अद्याशीतिकल्पकोट्यवच्छिन्नदुर्गत्यनवाप्तिकाम इदं पुष्पं भगवतः शिवस्य लिङ्गे प्रतिमायां वाऽहं दास्ये ।

शिवधर्मे मुक्तपुष्पपूजायाम्—

प्रत्येकं मुक्तपुष्पेषु दशसौवर्णिकं फलम् ।
स्रङ्निबद्धेषु[2] तेष्वेव द्विगुणं फलमिष्यते ॥४७८॥

[विद्यापति]

मुक्तपुष्पेषु अग्रथितपुष्पेषु ।

एतत्फलं विशेषतोऽकथितफलेषु विहितपुष्पेषु द्रष्टव्यम् ।

१ ने० पा०, च ।
२ तत्रैव, मूर्द्धिनबद्धेषु ।

शिवपुराणेप्युक्तम्—

दशसौवर्णिकं सुगन्धि यदि दद्याद् भामिनि[1] ।
शतसाहस्रिकी[2] मालाजन्यं दशगुणं भवेत् ॥४७६॥

अद्य प्रतिपुष्पं दशसुवर्णदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिरमुक्तपुष्पै-र्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति ।

एकपुष्पपूजने तु प्रतिपुष्पमित्यपहाय इदं पुष्पमिति योज्यमिति विशेषः ।

संग्रथितपुष्पेषु—

अद्य प्रतिपुष्पं संग्रथितप्रतिपुष्पदानफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया एतानि सग्रन्थितपुष्पाणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ॥

पुष्पमालायाः—

अद्य शतवर्षसहस्रसुवर्णदानफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽनया पुष्पमालया भगवतः शिवस्य लिङ्गपूजामहङ्करिष्ये ।

नन्दिकेश्वरे सुगन्धिमुक्तपुष्पेषु—

यः सुग[3]न्धैर्मुक्तपुष्पैर्लिङ्गं सम्यक् प्रपूजयेत् ।
मालाभिर्वा सुगन्धिभिः सोऽनन्तफलमाप्नुमात् ॥४७९ख॥

अद्यानन्तफलप्राप्तिकामनया एभिः सुगन्धिमुक्तपुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये ।

सुगन्धिमालात्रयदानेपीयमेव कामना ।

शिवधर्म्मे पुष्पमालाभिर्वेदिवेष्टनस्य—

मालाभिर्वेष्टयेद्वेदीं लिङ्गं सम्पूज्य यत्नतः ।
यस्तु देव्याः स पुत्रः स्यात्तदभ्यासे च मोदते ॥४८०॥
लिङ्गवेदी भवेद्देवी लिङ्गं साक्षान्महेश्वरः ।
तयोः संपूजनात् स्यातां देवीदेवश्च पूजितौ ॥४८१॥

[विद्यापति]

अत्र मालाभिरेव लिङ्गपूजा[4]अभ्यासे सन्निधाने ।

---

१ ने० पा०, भाविनि ।
२ तत्रैव, शतसहस्रिकी ।
३ तत्रैव, सुगन्धीभिः
४ तत्रैव, नित्यंपूजा ।

अद्य देवीपुत्रत्व-तत्सन्निधानहर्षयुतत्वकामनया एताभिः पुष्पमालाभिर्भगव
...य लिङ्गं सम्पूज्य वेदीं वेष्टयिष्ये ।

...हस्ये पुष्पपञ्चकमात्रेणापि पूजायाम् —

पुष्पैः पञ्चभिरप्यत्र पूजयित्वा महेश्वरम् ।
दशानामश्वमेधानां फलमाप्नोति मानवः ॥४८२॥

अद्य दशाश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामः एभिः पञ्चभिः पुष्पैस्तदधिकैर्वा भगव...
...श्वरमहं पूजयिष्ये ।

...मालायाः—

स्रङ्[1]निबद्धेषु तेष्वेव द्विगुणं फलमिष्यते ॥४८३॥

अद्य दशाश्वमेधफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनयाऽनया पुष्पपञ्चकमालया भगव...
...श्वरमहंपूजयिष्ये ।

...ल्वपत्रपञ्चकमात्रेऽपि—

बिल्वपत्रादिभिश्चैव सम्पूज्य लभते फलम् ॥४८४॥

अद्य दशाश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामनया एभिः पञ्चभिर्बिल्वपत्रैस्तदधिकै...
...वन्तं महेश्वरमहं पूजयिष्ये ।

...ल्वपत्रमालायाः—

अद्य दशाश्वमेधफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया बिल्वपत्रमालया भगव...
...श्वरमहं पूजयिष्ये ।

[विद्यापति]

विहितपत्रान्तरेप्येतदेवफलम् ।

शक्त्यपेक्षया फलभूमापेक्षया वा व्यवस्था ।

...सहस्रस्य :—

अष्टभिर्वा शिवं पुष्पैरभ्यर्च्य विधिना नृप ।
प्रयाति शङ्करं धाम किं पुनर्यः सहस्रशः ॥४८५॥

अद्य शङ्करधामप्राप्तिकामनया एभिः सहस्रकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये

[विद्यापति]

बिल्वपत्रसहस्रपूजनेपीयमेवकामना ।

अशक्तौ त्वष्टपत्रादिपूजने तदधिकपूजने वापीयमेव कामना ।

---

१ ने० पा०, सूद्धिन् वद्धेषु ।

२ तत्रैव इष्टपुष्पपत्रादि ।

विष्यपुराणे नीलोत्पलसहस्रमालायाः—

नीलोत्पलसहस्रेण यो मे मालां प्रयच्छति ।
शिवाय विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥४८६॥

कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
वसेच्छिवपुरे श्रीमान् शिवतुल्यपराक्रमः ॥४८७॥

अद्य श्रीमत्वशिवतुल्यपराक्रमत्वकल्पकोटिसहस्रकल्पकोटिशतावच्छिन्नशिवपुर-
ासकामनया इयं नीलोत्पलहस्रमाला भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

ष्पान्तरसहस्रमालायाः—

शेषाणां पुष्पजातीनां यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
स तत्फलानुसारेण शिवलोके महीयते ॥४८८॥

विद्यापति]

नीलोत्पलेतरपुष्पाणां यत्फलमुक्तं तत्फलभोगकालगणनया शिवलोके महीयते।
त्पुष्पान्तरसहस्रेण मालां प्रयच्छतीत्यर्थः ।

अद्य सहस्रगुणितामुकपुष्पदानफलभोगकालावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम
मामुकपुष्पमालां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

नीलोत्पलव्यतिरिक्तपुष्पाणां यावत्फलमुक्तं तत्फलं यावत्कालेन भुज्यते तावत्कालं
शवलोकमहितत्वमधिकं नीलोत्पलसहस्रमालादानस्यैव फलं तत्फलैरेव प्रतीयतेरेव[1]
ाक्यतार्थं बोधादन्यथाध्याहारादिदोषप्रसङ्गादिदोषप्रसङ्गादिभिर[2]स्वरसः ।

कन्दपुराणे पुष्पादीनां लिङ्ग[3]पुराणे—

लिङ्गपूरणन्तु यः कुर्य्यान्मुमुदे विदृढव्रतः ।
शतं वर्षसहस्राणि दिव्यानि दिवि मोदते ॥४८९॥

अद्य स्वर्गाधिकरणकदिव्यवर्षशतसहस्रावच्छिन्नहर्षकाम एभिः पुष्पैर्भगवतः
शिवस्य लिङ्गपूरणमहं करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, प्रतीयते एकवाक्यतानुरोधत् ।
२ तत्रैव, रत्नाकर ।
३ लिपिकारक भ्रमसँ मूलमे लिङ्गपुराणे 'लिपिवद्ध भय गेल अछि ।

देवीपुराणे पुष्पाद्यन्यतमपूरणे—

पूरणं फलगन्धाद्यैः पुष्पाद्यैश्च सुशोभनैः ।
कार्य्यं वित्तानुसारेण सर्वकामफलार्थिभिः ॥४९०॥

[विद्यापति]

पूरणं लिङ्गस्यैव प्रथमाद्यपदेन पूरणसाधकः पुष्पान्यतिरिक्तपरग्रहः पुष्पाद्यैरित्याद्यपदेन पत्रादिपरिग्रहः। वित्तानुसारेण वित्तशाठ्येन।

अद्य सर्वकामावाप्तिकाम एभिः पुष्पैः फलैर्वा गन्धैर्वा भगवतः शिवस्य लिङ्ग पूरणमहं करिष्ये।

नन्दिकेश्वरे पुष्पमण्डपस्य—

शिवस्योपरि यः कुर्य्यादध्व[1]नं पुष्पमण्डपम् ।
शोभितं पुष्पमालाभिरापठान्तप्रलम्बिभिः ॥४९१॥

अत्याश्चर्य्यैर्महायानैर्दिव्यपुष्पोपशोभितैः ।
सर्वोपरिचरः श्रीमान् गच्छेच्छिवपुरं सुखी ॥४९२॥

अद्य दिव्यपुष्पोपशोभिताश्चर्य्यहेतुबहुमहायानकरणकसर्वोपरिचरत्व-श्रीमत्-सुखित्व-शिवपुरगमनकामोऽमुम् अध्व[2]नमापीठप्रलम्बिपुष्पमालाशोभितंपुष्पमण्डपं भगवतः शिवस्योपर्यहङ्करिष्ये।

अथ सुवर्णपूजनस्य

स्कन्दपुराणे—

यो जातरूपैरूप्यैश्च अर्च्चयेत् सुरेश्वरम् ।
लिङ्गपूजाञ्च यो देवि करोति मम शोभने ॥
गाणपत्यमवाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति ॥४९३॥

अद्य गाणपत्यप्राप्ति-शिवलोकगमनकाम एभिः सुवर्णैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गं पूजयिष्ये।

रजतपूजायामपीदं फलम्

१ ने० पा०, सुघनं।
२ तत्रैव, सुघनं।

सुवर्णकुसुमैरर्च्चनस्य—

निवसन्ति शिवे लोके सदा यज्ञैर्यजन्ति च ।
सर्वदा न भयंतेषां जायते नात्र संशयः ॥४९४॥

व्रियन्ते परितः पुष्पैः[1] पौद्रैश्चैव[2] समन्ततः ।
श्रिया सदैव पूज्यन्ते हेमपुष्पैः शिवार्चनात् ॥४९५॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकवाससार्वकालिक-बहुयज्ञयाजित्व-सदाभयशून्यत्व-त्रिकबहुपुत्रपौत्रपरिवृतत्व-सदाश्रीयुक्तत्वकाम एभिर्हिरण्यकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजनमहं करिष्ये ।

सुवर्णरजतान्यतरकुसुमेषु—

हिरण्यस्यैव कुसुमै राजतैः कुसुमैस्तथा ।
अर्च्चयित्वा शिवं देवं रुद्रलोके महीयते ॥४९६॥

अद्य रुद्रलोकमहितत्वकाम एभिर्हिरण्यकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजाङ्करिष्ये ।

रजतपुष्पैरपि पूजायामिदमेव कलम् ।

शिवरहस्ये मणिविद्रुमरचितोत्कृष्टसुवर्णबहुकुसुमपूजने—

सुवर्णकुसुमैर्दिव्यैर्म्मणिविद्रुमचित्रितैः ।
येऽर्च्चयन्ति शिवं भक्त्या नरास्ते स्युर्महेश्वराः ॥४९७॥

अद्य महेश्वरत्वभवनकाम एभिर्मणिविद्रुमविचित्रितोत्कृष्टसुवर्णकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहमर्च्चयिष्ये ।

माषाधिकसुवर्णकुसुमस्य—

हेम्नां[3] कृत्वा च यः पुष्पमपि माषकमात्रकम् ।
भोगैः शिवपुरे दिव्यैः कल्पकोटिं वसेन्नरः ॥४९८॥

---

१ मूले, पुष्पैः ।
२ तत्रैव, पौद्रेश्चैव ।
३ ने० पा०, हेम्ना ।

विद्यापति]

पुष्पं दद्यादित्यनुषज्यते—

अद्य शिवपुराधिकरणककल्पकोट्यवच्छिन्नदिव्यबहुभोगहेतुकवासकामनया इदं मासाधिकसुवर्णकुसुमं भगवते शिवाय तुभ्यम्मया दत्तम् ।

अथ मासविशेषे पुष्पफलविशेषफलानि

तत्र वैशाखे पाटलापुष्पस्य—

वैशाखे मासि कर्त्तव्या पूजा पाटलया सदा ।
सर्वान् कामानवाप्नोति ज्येष्ठे पद्मार्च्चनैः सदा ।।४९९।।

सदा मासं व्याप्य प्रतिदिनम् ।

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकामनयाऽस्मिन् वैशाखे प्रत्यहं पाटलपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

ज्येष्ठमासे पद्मपुष्पपूजस्य—

अद्यादि प्रत्यहं सर्वकामावाप्तिकामनयाऽस्मिन् ज्येष्ठे मासि पद्मैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

आषाढ़मासे बल्वपत्रकल्हारपूजनस्य—

आषाढ़े बिल्वकल्हारैरीहितं लभते फलम्[१] ।।५००।।

सदेति सर्वत्रान्वेति तेन मासं व्याप्त प्रतिदिनपूजा लभ्यते ।

अद्यादि प्रत्यहमीप्सितफलप्राप्तिकामनयाऽस्मिन्नाषाढे बिल्वपत्रैः कल्हारैर्वा भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कल्हारं सौगन्धिकम् ।

श्रावणे नवमल्लिकापूजनस्य—

नवमल्लिकया पूजा नभोमासि महाफला ।।५०१।।

विद्यापति]

नभो मासि श्रावणे ।

अद्यादि महःफलप्राप्तिकामनयाऽस्मिन्नभोमासि प्रत्यहं नवमल्लिकापुष्पैः शिवलिङ्गमहमर्च्चयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि, सम्पादक, डॉ० जयमन्त मिश्र पृष्ठ ३०—
आषाढे विल्वकह्लारविहितं लभते फलम् ।

भाद्रे कदम्बचम्पकपुष्पयोरन्यतरपूजनस्य—

कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा ॥५०२॥

नभस्ये भाद्रे ।

अद्यादि प्रत्यहं सर्वकामावाप्तिकामः कदम्बपुष्पैश्चम्पकपुष्पैर्वाऽस्मिन्मासे भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

आश्विने पंकजमालतीपुष्पयोरन्यतरपूजनस्य—

पूजा पङ्कजमालत्योरिषेऽभ्युदयदायिनी ॥५०३॥

इषे आश्विने ।

अद्यादि प्रत्यहमभ्युदयप्राप्तिकामनया पङ्कजेन मालतीपुष्पेण वाऽस्मिन् मासि भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कार्त्तिके शतपत्रिकापूजनस्य—

शतपत्रिकया पूजा कार्त्तिके सार्वकामिकी ॥५०४॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् कार्त्तिके सर्वकामावाप्तिकामनया शतपत्रिकाभि भँगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

मार्गे नीलोत्पलपूजनस्य—

मार्गे नीलोत्पलैः पूजा ॥५०५॥

[विद्यापति]

सार्वकामिकीत्यनुषज्यते ।

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् मार्गे मासि सर्वकामावाप्तिकामो नीलोत्पलैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पौषे कुब्जकपूजनस्य ।

पौषे[1] तु कुब्जकैः [पूजां] सदा ॥५०६॥

[विद्यापति]

यः कुर्य्यादित्यादि वक्ष्यमाणेनान्वयः ।

पुष्ये पौषे ।

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् पौषे सर्वयज्ञसर्वदानफलसमफलकामनया कुब्जकपुष्पै र्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ ने० पा० पुष्ये ।

यादौ कुन्दकुसुमादिपूजनस्य—

माघे तु कुन्दकुसुमैर्मरुवकेण च फाल्गुने ।
शतपत्रैस्तथा चैत्रे यः कुर्य्यादर्च्चनं शिवे ॥
लभते सर्वयज्ञानां सर्वदानफलं तथा ॥५०७॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् माघे सर्वदानफलप्राप्तिकामनया कुन्दकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

गुने मरुवकस्य—

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् फाल्गुने सर्वयज्ञसर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनया कैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

त्रे शतपत्रिकापूजनस्य—

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् चैत्रे मासि सर्वयसर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनया पत्रिकापुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

ङ्गपुराणे चैत्रे दमनकपूजायाम् —

दमनस्य च पत्रैश्च मञ्जर्य्या च विशेषतः ।
मधुमासे तु सम्पूज्य माञ्चैव सुरसुन्दरि ॥
सर्वदेवपदं भुक्त्वा प्राप्नोति शिवरूपताम् ॥५०८॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् मधुमासे सर्वदेवपदभुक्तिपूर्वकशिवरूपत्वप्राप्तिकामनया नकपत्रैर्दमनकमञ्जरीभिर्वा भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

धर्मे श्रावणमासीयैकाहारपूजायाम्—

श्रावणस्य [च] मासस्य एकाहारेण यो नरः ।
अर्चयेत् करवीरेण गोसहस्रफलं लभेत्[1] ॥५०९॥

अद्यादि प्रत्यहमस्मिन् श्रावणे मासि गोसहस्रदानजन्यफलसमफल- प्तिकामः करवीरपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

द्रमासीयापामार्गपूजायाम् —

भाद्रपदस्य मासस्य अपामार्गेण योऽर्च्चयेत् ।
हंसध्वजसमायुक्तविमानेन स गच्छति[2] ॥५१०॥

अद्यादि अस्मिन् भाद्रपदे मासि प्रत्यहं हंसध्वजसमायुक्तविमानकरणकगति- प्तिकामोऽपामार्गेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

१ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ५ ।
२ तत्रैव ।

आश्विनमासीयावर्कपूजायाम्—

आश्विनस्य तु मासस्य अवर्कपुष्पेण योऽर्च्चयेत् ।
मयूरध्वजयुक्तेन विमानेन स गच्छति[1] ॥५११॥

अद्याद्यस्मिन्नाश्विने मयूरध्वजयुक्तविमानकरणकगतिप्राप्तिकामोऽवर्कपुष्पैरहरहर्भगवतः शिवस्य पूजामहंकरिष्ये ।

कार्त्तिकमासीयक्षीरस्नानोत्तरजातीपुष्पपूजनस्य—

कार्त्तिकस्य तु मासस्य यो मां क्षीरेण स्नापयेत् ।
अर्च्चयेज्जातिपुष्पैः शिवं पश्येन्निरञ्जनम्[2] ॥५११क॥

अद्याद्यस्मिन् कार्त्तिके प्रत्यहं निरञ्जनशिवदर्शनकामः क्षीरस्नानोत्तरं जातीपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये ।

मार्गशीर्षमासीयबकपुष्पपूजायाम्—

मार्गशीर्षस्य मासस्य बकपुष्पेण योऽर्च्चयेत् ।
स त्रैलोक्यमतिक्रम्य यत्राहं तत्र गच्छति[3] ॥५१२॥

अद्याद्यस्मिन् मार्गशीर्षे त्रैलोक्यातिक्रमणोत्तरशिवाधिष्ठितदेशगमनकामो वकपुष्पैरहरहर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

पौषमासीयधुस्तूरकवकपुष्पार्च्चनस्य—

पौषमासे तु सम्प्राप्ते धत्तूरेण तु योऽर्च्चयेत् ।
स तुष्टेन मया देवि लभते परमं पदम्[4] ॥५१३॥

अद्याद्यस्मिन् पौषे मासि शिवतुष्टिहेतुकपरमपदप्राप्तिकामो धुस्तूरकपुष्पैरहरहर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

माघमासीयबिल्वपत्रपूजायाम्—

माघस्य तु मासस्य स्नापयेद् गन्धवारिणा ।
अर्च्चयेद्बिल्वपत्रेण इन्द्रस्यार्द्धासनं लभेत्[5] ॥५१४॥

अद्यादि अस्मिन् माघे मासि इन्द्रस्यार्द्धासनप्राप्तिकामो गन्धतोयस्नपनोत्तरमहरहर्बिल्वपत्रैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तमणि पृ० ५ ।
२ तत्रैव ।
३ तत्रैव १०६ ।
४ तत्रैव ।
५ तत्रैव ।

फाल्गुनमासीयद्रोणपुष्पार्च्चनस्य—

फाल्गुनस्य तु मासस्य द्रोणपुष्पैश्च योऽर्च्चयेत् ।
कृष्णागुरुं दहेद्धूपं सघृतं वापि गुग्गुलुम् ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो वाजपेयफलं लभेत् ॥५१५॥

अद्यास्मिन् फाल्गुने मासि प्रत्यहं सर्वपापविनिर्मुक्तत्ववाजपेययज्ञजन्य-फलसमफलप्राप्तिकामनया कृष्णागुरुधूपदानोत्तरं सघृतगुग्गुलुधूपदानोत्तरं वा द्रोणपुष्पैर्भगवतः शिवस्य पूजामहं करिष्ये—

चैत्रमासीयनृत्यगीताभ्यां गन्धपुष्पपूजने ।

चैत्रिकस्य तु मासस्य गन्धपुष्पैः प्रपूजयेत् । ।
आराध्य नृत्यगीताभ्यां लभते स्वर्णकानि सः ॥५१६॥

अद्यास्मिन् चैत्रमासि बहुस्वर्णप्राप्तिकामो नृत्यगीताभ्यामाराध्य गन्धपुष्पै-र्भगवतः शङ्करस्याहरहः पूजामहङ्करिष्ये ।

वैशाखमासीयघृतस्नानान्तरशुक्लमन्दारपूजनस्य—

वैशाखस्य तु मासस्य घृतेन स्नापयेत्सदा ।
अर्च्चयेच्छुक्लमन्दारैरश्वमेधफलं लभेत् ॥५१७॥

अद्यास्मिन् वैशाखमासि अश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽहरहर्घृत-स्नानोत्तरं शुक्लमन्दारकुसुमैर्भगवतः शिवस्य पूजामहङ्करिष्ये ।

ज्यैष्ठमासीयदधिस्नानान्तरपद्मपुष्पार्च्चनस्य—

ज्यैष्ठस्याप्यथ मासस्य यो दध्ना स्नापयेच्छिवम् ।
अर्च्चयेत् पद्मपुष्पैस्तु स गच्छेत् परमां गतिम् ॥५१८

अद्यास्मिन् ज्यैष्ठे मासि परमगतिप्राप्तिकामोऽहरहर्दधिस्नपनोत्तरं पद्मपुष्पै-र्भगवतः शिवस्य पूजनमहङ्करिष्ये ।

...ष्ये—

स्वयमुत्पाद्य[२] पुष्पाणि यः स्वयं पूजयेच्छिवम् ।
तानि साक्षात् प्रगृह्णाति तद्भक्त्या सततं शिवः ॥५१९॥

१ पुष्पचिन्तामणि, पृष्ठ ६ ।
२ नै० पा० स्वय उत्पाद्य ।

[विद्यापति]

उत्पाद्य[1] त्रोटयित्वा। साक्षात्प्रगृह्णाति अतिप्रीत्या [2]गृह्णाति।

अथ कामनाविशेषे

वुकार्च्चने—

वुकेन वरदो देवः ॥५२०॥

अद्य वरप्राप्तिकामो वुकेन शिवमहं पूजयिष्ये।

करवीरपूजनस्य—

करवीरैर्धनप्रदः ॥५२१॥

अद्य धनंप्राप्तिकामनया एभिः करवीरपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

अर्कपुष्पस्य—

अर्केण श्रियमन्विच्छेत् ॥५२२॥

अद्य श्रीप्राप्तिकामनया एभिरर्कपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

धुस्तूरकपुष्पस्य—

मोक्षं धुस्तूरकेण च ॥५२३॥

अद्य मोक्षप्राप्तिकामनयाऽनेन धत्तूरकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

रक्ताब्जपुष्पाणाम्—

रक्ताब्जैः प्राप्नुयाद्राज्यम् ॥५२४॥

अद्य राज्यप्राप्तिकामनया एतैरक्ताब्जपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

नीलोत्पलपुष्पाणाम्—

नीलोत्पलैर्भवेद्भोगो योऽर्च्चयेल्लिङ्गमुत्तमम्[3] ॥५२५॥

अद्य भोगप्राप्तिकाम एभिर्न्नीलोत्पलपुष्पैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गमहं पूजयिष्ये।

चम्पकपुष्पाणाम्—

चम्पकैः सकलान् कामान्[4] ॥५२६॥

अद्य सकलकामनावाप्तिकाम एभिश्चम्पकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

---

१ ने० पा०, उत्पाट्य।
२ तत्रैव, अभिप्रीत्या।
३ पुष्पचिन्तामणि पृष्ठ ११।
४ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ११ चम्पकैः सर्वकामानि।

नागपुष्पाणाम् —

पुन्नागैर्नागकेसरैः ।
ईप्सितं लभते कामं तथा केसरदामभिः[1] ॥५२७॥

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकाम एभिः पुन्नागपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

विद्यापति]

पुन्नागः पुनाल इतिप्रसिद्धः ।

एवं नागकेसर-वकुलमालार्च्चनेप्येतदेव फलम् ।

स्थू[2]लचम्पकपुष्पाणाम्—

चम्पकैः स्थूल[3]जैर्लाभम् ॥५२७क॥

अद्य लाभकामः स्थूल[4]चम्पकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

वारुणीपुष्पे—

सौभाग्याय च वारुणी[5] ॥५२८॥

अद्य सौभाग्यप्राप्तिकाम एभिर्वारुणीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

जातीपुष्पाणाम्—

कन्याकामश्च जातीभिर्योर्च्चयेत् परमेश्वरम् ।
स लभेदुत्तमां कन्यां षड्भिर्मासैर्न संशयः[6] ॥५२९॥

अद्य षण्मासाभ्यन्तरे उत्तमकन्याप्राप्तिकाम एभिर्जातीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

मल्लिकापुष्पेषु—

मल्लिकाभिर्ज्ञानकामा येऽर्च्चयन्ति महेश्वरम् ।
लभते परमं ज्ञानं संसारभयनाशनम्[7] ॥५३०॥

अद्य संसारभयाभावहेतुपरमज्ञानकामो मल्लिकापुष्पैर्भगवन्तं महेश्वरमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि पृ० ११, ईप्सिताँल्लभते कामान् तथा केसरदामकैः ॥८
२ ने० पा० स्थल ।
३ तत्रैव, स्थल ।
४ तत्रैव, स्थल ।
५ तत्रैव, पृ० ११ ।
६ तत्रैव ।
७ तत्रैव ।

कुन्दपुष्पे—

पुत्रकामैस्तु कुन्दैर्यः पूजयेत शुचिर्न्नरः ।
स लभेत बहून् पुत्रान् बलयुक्तांश्चिरायुषः[१] ॥५३१॥

अद्य बलवच्चिरजीविबहुपुत्रप्राप्तिकाम एभिः कुन्दकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कुशपुष्पेषु—

आरोग्यं कुशपुष्पैस्तु[२] ॥५३२॥

अद्यारोग्यप्राप्तिकाम एभिः कुशपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कर्णिकारपुष्पेषु—

कर्णिकारैर्द्धनं विद्यात[३] ॥५३३॥

अद्य धनलाभकाम एभिः कर्णिकारकुसुमैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

द्रोणपुष्पिकायाम्—

सस्यार्थं द्रोणपुष्पिका[४] ॥५३४॥

अद्य सस्यप्राप्तिकामनया द्रोणपुष्पिकया भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कदम्बपुष्पेषु—

कदम्बैः शत्रुनाशाय[५] ॥५३५॥

अद्य शत्रुनाशकाम एभिः कदम्बपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

माधवीपुष्पेषु—

व्याधिनाशोऽतिमुक्तकैः ॥५३६॥

अद्य व्याधिनाशकाम एभिरतिमुक्तकपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

सिन्धुवारपुष्पेषु—

सिन्धुवारस्य पुष्पेण बद्धो मुच्येत बन्धनात्[६] ॥५३७॥

अद्य बन्धनमोक्षप्राप्तिकामोऽनेन सिन्धुवारपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि, पृ० ११—लभते बहुपुत्रन्तु धनवन्तंचिरायुषम् ।
२ तत्रैव ।
३ तत्रैव ।
४ तत्रैव वश्यार्थे द्रोणपुष्पकम् ।
५ तत्रैव ।
६ तत्रैव ।

ङ्कोठपुष्पेषु—

अङ्कोठसितवर्णानि[1] निर्गन्ध[2]कुसुमानि च ।
एतानि शत्रुनाशाय देवदेवाय कल्पयेत् ॥५३८॥

अद्य शत्रुविनाशकाम एभिरंकोठपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

तिकापुष्पेषु—

पीतिकानि तु पुष्ट्यर्थं पुष्पाणि विजयाय च ।
नित्यमेव तु यो दद्यात् सर्वकामानवाप्नुयात् ॥५३९॥

अद्य पुष्टिविजयकाम एभिः पीतिकापुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भिरेव नित्यपूजायाम् ।

अद्यादि सर्वकामावाप्तिकाम एभिः पीतिकापुष्पैर्यावज्जीवं प्रत्यहं भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

जलपुष्पकेषु—

जलजानि तु पुष्पाणि वश्यार्थं संप्रयोजयेत् ।
नीलरक्तानि यान्येव तानि वश्यकराणि च ॥५४०॥

अद्याकुसुमस्यात्मीयवशीकरणकाम एभिर्जलपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

एवं नीलपुष्परक्तपुष्पान्यतमपुष्पेऽपीयमेव कामना ।

बिल्वपत्रे—

सर्वकामप्रदं बिल्वं दारिद्र्यस्य विनाशनम् ।
बिल्वपत्रात्परं नास्ति येन तुष्यति शङ्करः ॥५४१॥

अद्य सर्वकामावाप्तिदारिद्र्याभावस्वविषयकशङ्करप्रीतिकाम एभिर्बिल्वपत्रैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

दमनके—

विजयार्थं दमनकं योजयेद्विजयेच्छया ॥५४२॥

अद्य विजयप्राप्तिकाम एभिर्दमनकैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ पुष्पचिन्तामणि पृ० ११ अंकटासितपर्णानि ।
२ नें० पा०, सुगन्धि ।

गाङ्गेयीपुष्पेषु—

गाङ्गेयी सुखदा नित्यम् ॥५४३॥

अद्य नित्यसुखप्राप्तिकामोगाङ्गेयीपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये[1]।

जम्बुम्याम्—

जम्बुकी सर्वकामदा ॥५४४॥

अद्य सर्वकामावाप्तिकामनयाऽनया जम्बुक्या भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

तिल[2] पुष्पेषु—

तिळको धनकामाय ॥५४५॥

अद्य धनप्राप्तिकामनयाऽनेन तिलपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

वन्धुल्याम्[3]—

गोकामाय च बन्धुली[4] ॥५४६॥

अद्य गोप्राप्तिकामनयाऽनया बन्धुल्या भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

तगरपुष्पेषु—

सौख्यदस्तगरोज्ञेयः ॥५४७॥

अद्य सौख्यप्राप्तिकामनयाऽनेन तगरपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

किङ्किरातपुष्पस्य—

किङ्किरातश्च कामदः ॥५४८॥

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन किङ्किरातपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

फलिनीपुष्पस्य।

आरोग्यञ्च धनञ्चैव फलिनी कामदा स्मृता ॥५४९॥

अद्यारोग्यधनेप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन फलिनीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

---

१ ने० पा० सं प्राप्त।

२ तत्रैव, तिलकपुष्पेषु।

३ तत्रैव, वङ्कुल्याम्, पुष्पचिन्तामणि पृ० १२, वंकुली।

४ तत्रैव, वंङ्कुली।

फलिनीप्रियङ्गुः[1] ।

लपुष्पे —

शालः[2] प्रियङ्करश्चैव ॥५५०॥

अद्य प्रियप्राप्तिकामनयाऽनेन शालपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

शालः शङ्कुतरुपुनष्यम्

शुकपुष्पेषु—

किंशुकादायुराप्नुयात् ॥५५१॥

अद्यायुःप्राप्तिकामनयाऽनेन किंशुकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

टजपुष्पेषु—

हस्त्यश्वपशुकामस्तु कुटजैरर्च्चयेच्छिवम् ॥५५२॥

अद्य हस्त्यश्वपशुप्राप्तिकामनया एभिः कुटजपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

र्पूरदमनकेषु ।

कर्पूरदमनं दद्याच्छत्रूणाञ्च विनाशने ॥५५३॥

अद्य बहुशत्रुविनाशकामनयाऽनेन कर्पूरदमनकेन भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

श्यामापुष्पे—

श्यामा चारोग्यदा नित्यं जवापुष्पं तथैव च ॥५५४॥

अद्य नित्यमारोग्यप्राप्तिकामोऽनेन श्यामापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

जवापुष्पेष्वेतदेव फलम् ।

१. [प्रिय + गम् + कु] एक लताक नाम कहल जाइत अछि जे ई लता स्त्रीगणक स्पर्श मात्रसँ मुकुलित भय जाइत अछि। मातंगलीला, ३,९]

२ [शल् + घनञ्] रघुवंश, १,१३ एवं १,६८, शिशुपालवध, ३,४० ।

कुरुण्टकपुष्पे—

कुरुण्टकञ्च वश्यार्थे नित्यं लिङ्गस्य पूजनात् ॥ ५५५ ॥

अद्यामुकस्यात्मीयनित्यवशीकरणप्राप्तिकामनयाऽनेन कुरुण्टकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कुरुण्टकं पीतझिं[1]रण्टीपुष्पम् ।

यूथिका[2]पुष्पे—

विद्वेषे[3] यूथिका योज्या ॥५५६॥

अद्यामुकामुकयोः परस्परविद्वेषकामनया अनेन यूथिकापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

केतकीपुष्पे—

केतकी शत्रुमारणी ॥५५७॥

अद्य शत्रुमारणकामनयाऽनेन केतकीकुसुमेन भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

व्याघ्रीपुष्पे—

व्याघ्री च कामदा प्रोक्ता ॥५५८॥

अद्य ईप्सितार्थप्राप्तिकामनयाऽनेन व्याघ्रीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

वालकपुष्पे—

बालकेनार्चयेद्देवं बालकायुश्च वर्द्धते ॥५५९॥

अद्य बालायुर्वृद्धिकामनयाऽनेन बालकपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

ग्रन्थिकापुष्पेण—

ग्रन्थिका सुखदा नित्यम् ॥५६०॥

अद्य नित्यवत् सुख प्राप्तिकामनयाऽनेन ग्रन्थिकापुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

---

१ ने० पा०, पीतसिण्ठीपुष्पम् ।

२ [यूथं पुष्पवृन्दमस्ति अस्याः—यूथ + ठन् + टाप्, यूथ + अच् + ङीप्] एक प्रकारक चमेली ।

३ मूले—विद्योषा ।

डिम्बाक्षीपुष्पे—

डिम्बाक्षी व्याधिनाशार्थमश्वकर्णस्तथैव च ॥५६१॥

अद्य व्याधिनाशकामनयाऽनेन डिम्बाक्षीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

जयन्तीपुष्पे—

जयन्ती जयकामाय श्वेता च गिरिकर्णिका ॥५६२॥

अद्य जयप्राप्तिकामनयाऽनेन जयन्तीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

श्वेतापराजितापुष्पेप्येतदेव फलम्।

निम्बपुष्पेषु—

विद्वेषोच्चाटनार्थेषु निम्बपुष्पाणि योजयेत् ॥५६३॥

अद्यामुककर्तृकामुकविषयकविद्वेषकामनयाऽमुकोच्चाटनकामनया वा एभिर्निम्बपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

भण्टी[1]पुष्पे—

भण्टिकाकर्षणे योज्या मदयन्ती पुनः पुनः ॥५६४॥

अद्यामुकदेशादमुकस्याकर्षणकामनयाऽनेन भण्टीपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

मदयन्तिकापुष्पेपीयमेव कामना।

हस्तीपुष्पीपुष्पे—

हस्तिपुष्पीरुद्रजटी[2] हन्ति सर्वमुपद्रवम् ।
शतपुष्पञ्च यत् पुष्पं कोकिलाक्षं तथैव च ॥५६५॥

अद्य सर्वोपद्रवाभावकामोऽनेन हस्तिपुष्पेण भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये।

एवमितरेष्वपीदमेव फलम्।

---

१ ने० पाठ, भण्टिका।
२ तत्रैव, वज्रजटी।

श्वेतपुष्पे—

सर्वं श्वेतञ्च शान्त्यर्थं सर्वं पीतञ्च पौष्टिके ।
कृष्णञ्चैवाभिचारे च देवदेवाय कल्पयेत् ॥५६६॥

तत्र प्रत्येकं चित्तवृत्तिविशेषानाह—

शान्तिके शोभनं भावं सुखभावन्तु पौष्टिके ।
अभिचारे महाक्रोधं त्रिविधं भावमाचरेत् ॥५६७॥

अद्यामुकस्य शरीराविरोधेन प्रत्युत्पन्नरोगोपशमकामनया ग्रहदौःस्थ्यसूचित-दुरितोपशमकामनया वा एभिः श्वेतपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

कृष्णपुष्पे —

अद्यामुकध्वंसकामोऽनेन कृष्णपुष्पेण भगवन्तं शिवमहमर्चयिष्ये ।

पीतपुष्पे—

अद्य पुष्टिकाम एभिः पीतपुष्पैर्भगवन्तं शिवमहं पूजयिष्ये ।

भविष्यपुराणे—

अलाभेन तु पुष्पाणां पत्राण्यपि निवेदयेत् ।
पत्राणामप्यलाभे तु फलान्यपि निवेदयेत् ॥५६८
फलानामप्यलाभेतु तृणगुल्मौषधीरपि ।
औषधीनामप्यलाभे भक्त्या भवति पूजितः ॥५६९॥

पत्रं पुष्पं फलं तोयं तृणञ्चैव तथा परम् ।
प्रत्यहं यो भवे दद्यान्न स दुर्गतिमाप्नुयात् ॥५७०॥

अद्यादि प्रत्यहं दुर्गत्यनवाप्तिकामः पत्रं पुष्पं फलं तोयं तृणं वा भगवते शिवायाहं दास्ये ।

अथ धूपदानफलम्

भविष्यपुराणे सकर्पूरकृष्णागुरुधूपस्य—

कृष्णागुरुं सकर्प्पूरं धूपं दद्यान्महेश्वरे ।
नैरन्तर्य्येण मासार्द्धं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥५७१॥
कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
भुङ्क्ते शिवपुरे भोगान् तस्यान्ते स महीपतिः ॥५७२॥

अद्यादि मासार्द्धं यावत् प्रत्यहं कल्पकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवपुराधिकरणक-बहुभोगभुक्तितदुत्तरमहीपतित्वभवनकामनया कर्प्पूरकृष्णागुरुधूपं भगवते शिवायाहं दास्ये ।

अगुरुधूपस्य—

अगुरुं दशसाहस्रं द्विगुणञ्चासितागुरुम् ॥५७३॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरबहुभोगभुक्तिकामनयाऽयमगुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

कृष्णागुरुधूपे—

अद्य विंशतिवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरबहुभोगभुक्तिकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

गुग्गुलुं घृतसंयुक्तं साक्षाद्गृह्णाति शङ्करः ।
मासार्द्धमस्य दानेन शिवलोके महीयते ॥५७४॥

अद्यादि मासार्द्धं यावत्प्रत्यहं शिवलोकमहितत्वकामनया घृतयुक्तगुग्गुलु-धूपं भगवते शिवाय तुभ्यमहं दास्ये ।

स्कन्दपुराणे देवदारुधूपस्य—

देवदारुं नमेरु[1]ञ्च स[2]र्ज्जश्रीवासकुन्दुरुम् ।
श्रीफलञ्चाज्यसम्मिश्रं दग्ध्वाप्नोति परां गतिम् ॥५७५॥

सर्जः सारसः, श्रीवासः सरलद्रवः । कुन्दुरुशैलेयं सूलइति प्रसिद्धम् । श्रीफलं बिल्वफलम् ।

अद्य परमगतिप्राप्तिकामनयाऽयं देवदारुधूपो भगवते शिवाय मया दत्तः । एवं साज्यश्रीफलादिधूपेष्वपि ।

---

१ नमेरु; [नम् + एरु] एक गाछक नाम; रुद्राक्ष—रघुवंश, ४/७ ।
२ सर्जः [सृज् + अच्] सालक वृक्ष; साल वृक्षक चूनवला रस ।

शिवधर्म्मे सौगन्धिकधूपस्य—

एभ्यः सौगन्धिकं धूपं षट्सहस्रगुणोत्तरम् ।
अगुरु दशसाहस्रं द्विगुणञ्चासितागुरुम् ॥
गुग्गुलुं शतसाहस्रं सघृतं द्विगुणं भवेत् ॥५७६॥

सौगन्धिकं सौघेट[1] इति प्रसिद्धम् । षट्सहस्रगुणोत्तरं पूर्वोक्तदेवदार्वादि-फलापेक्षया ।

अद्य देवदार्वादिधूपषट्कफलसहस्रगुणोत्तरफलप्राप्तिकामनयाऽयं सौगन्धिक-धूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

अगुरुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलदशसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयमगुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

कृष्णागुरुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलविंशतिसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

गुग्गुलुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलशतसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं गुग्गुलुधूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

अद्य देवदार्वादिधूपफलविंशतिसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयं सघृतगुग्गुलु-धूपो भगवते महेश्वराय तुभ्यं मया दत्तः ।

सघृतबिल्वधूपस्य—

स[2]बिल्वं घृतसंयुक्तं दग्ध्वा[3] बिल्वमथापि वा ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥५७७॥

अद्य अग्निष्टोमयज्ञफलप्राप्तिकामनया घृतसंयुक्तबिल्वफलधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

---

१ ने० पा०, सौन्धेन ।
२ दूविल्वं मूले
३ देत्वा मूले;

कृष्णागुरुधूपस्य—

शोधयेत् पापसंयुक्तं पुरुषं नात्र संशयः ।
कृष्णागुरु…वोधूपस्तुषाग्निरिव काञ्चनम् ॥५७८॥

अद्य निष्पापत्वकामनयाऽयं कृष्णागुरुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

शिवपुराणे सरलदेवदारुधूपयोरन्यतरस्य—

सरलं देवदारुं वा भक्त्या धूपं प्रदापयेत् ।
सदृशं देवि लिङ्गानां तस्य पुण्यफलं शृणु ॥५७९॥
द्वात्रिंशतः सहस्राणि स…तित्तथा पुनः ।
षष्टिवर्षसहस्राणि मोदते स ममालये ॥५८०॥

अद्य द्वात्रिंशत्सहस्रद्व्यशीतिषष्टिवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवालयाधिकरणकहर्षकामनया एषसरलधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

एवं देवदारुधूपेऽपि।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

सघृतं गुग्गुलुञ्चापि अगुरुञ्चैव यो दहेत् ।
युगकोटिसहस्राणि मम लोके महीयते ॥५८१॥

अद्य युगकोटिसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एषसघृतगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

एतदेवागुरुधूपेऽपि फलम्।

घृतपुष्पादिधूपस्य—

नवेद्यं सघृतं युक्तं धूपं यदि निवेदयेत् ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥५८२॥

अद्य अग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया एष घृतसहितपुष्पादिधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

सुरभिद्रव्यधूपस्य—

गन्धञ्च कुसुमञ्चैव धूपं पापप्रणाशनम् ।
ईश्वरस्य तु यो दद्यात् स्वर्गलोके महीयते ॥५८३॥

गन्धं गन्धद्रव्यम्।

अद्य पापक्षयस्वर्गलोकमहितत्वकामनया एष सुरभिद्रव्यधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

सघृतगुग्गुलुधूपस्य—

गुग्गुलुं घृतसंयुक्तं यः शिवाय निवेदयेत् ।
रुद्रलोकमवाप्नोति गाणपत्यं स विन्दति ॥५८४॥

अद्य रुद्रलोकप्राप्तिपूर्वकगाणपत्यप्राप्तिकामनयाऽयं सघृतगुग्गुलुधूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शैवे धूपदानस्य—

धूपस्य तु प्रदानेन यत्फलं तद्विभीषण ।
दास्यामि च गतिं पुण्यां गाणपत्यञ्च दुर्लभम् ॥५८५॥

अद्य पुण्यगतिलाभदुर्लभगाणपत्यप्राप्तिकामनया एष धूपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्मोत्तरे—

तुरुष्कान्[1] गुरुकर्पूरसितचन्दनगुग्गुलुम्[2] ।
एतानि धूपद्रव्याणि कथितानि मयानघे[3] ॥५८६॥

अथ दीपदानफलम्

भविष्यपुराणे—

यस्तु दीपं प्रयच्छेत वित्तशाठ्येन कौशिकि ।
रुद्राणां सदृशो भूत्वा वृषेण विचरेद्भुवि ॥५८७॥

अद्य रुद्रसदृशत्वभवनपूर्वकवृषकरणकभूतलाधिकरणकविचरणकामनया घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

घृताभावे तिलतैलेन दीपस्य—

तैलेनापि हि यो दद्याद् घृताभावेन मानवः ।
तेन दीपप्रदानेन शिववद्राजते भुवि ॥५८८॥

अद्य शिवदीप्तिसमदीप्तिकामनयाऽयं तिलतैलदीपो भगवते शिवाय मया दत्तः।

---

१ ने० पा०, गुरुष्कांगुरु ।
२ तत्रैव गुग्गुलुः
३ तत्रैव ।

भविष्यपुराणे घृतदीपस्य—

शतयोजनविस्तीर्णं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ।
दिव्यं विमानमाप्नोति घृतदीपप्रदानतः ॥५८९॥

अद्य शतयोजनविस्तीर्णसूर्य्यकोटिसमप्रभदिव्यविमानप्राप्तिकामनया एषघृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मे घृतदीपस्य--

घृतदीपप्रदानेन शिवाय शतयोजनम् ।
प्रयास्यति तमो भित्वा विमानैः सूर्य्यसप्रभैः ॥
स गत्वा दिवि देवेभ्यो गाणपत्यं लभेन्नरः ॥५९०॥

अद्य सूर्य्यसमप्रभबहुविमानकरणकतमोविभेदपूर्वकशतयोजनगमनानन्तरस्वर्गाधिकरणकबहुदेवहेतुकगाणपत्यप्राप्तिकामनया एष घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

घृतदीपदानस्य—

घृतदीपप्रदानेन अक्षय्यां मार्गदीपिकाम् ।
रुचिं प्राप्य सदा देवि अक्षय्यां गतिमाप्नुयात् ॥५९१॥

अद्याक्षय्यमार्गप्रकाशकरुचिप्राप्तिपूर्वकाक्षय्यगतिप्राप्तिकामनयाऽयं घृतदीपो भगवते शिवाय तुभ्यंमया दत्तः ।

घृतपूर्णदीपदानस्य—

शतयोजनविस्तीर्णं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ।
दिव्यं विमानमाप्नोति घृतदीपप्रदानतः ॥५९२॥
शतयोजनविस्तीर्णैः सूर्य्यकोटिसमप्रभैः ।
तमोविमानैर्बहुभिर्लंघयित्वा तु मानवः ॥५९३
देवानां तद्गणानाञ्च आधिपत्यं त्रिविष्टपे ।
शिवाय भक्तितो दत्वा लभते नात्र संशयः ॥५९४॥

अद्य शतयोजनविस्तीर्णसूर्य्यकोटिसमप्रभदिव्यविमानप्राप्त्येत[१]द्बहुविमानकरणकतमोलङ्घनपूर्वकत्रिविष्टपदाधिकरणकबहुदेवगणाधिपत्यकामनयाऽयं घृतदीपोभगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।
(श्लोकत्रयैकवाक्यतया वाक्यमिदम्)[२]

१ ने० पा०, तत्त्वज्ञविमानकरणक ।
२ ने० पा० सँ प्राप्त ।

दीपवृक्षस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] शर्वस्यायतने शुभम् ।
पुण्यं सुमहदाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति ॥५९५॥

समुद्बोध्य[2] प्रज्वाल्य ।

अद्यादि अतिशयितपुण्यप्राप्तिशिवलोकगमनकामोऽमुं दीपवृक्षं समुद्बोध्य शर्वस्यायतनेऽहं दास्ये ।

नन्दिपुराणे शिवाग्रतो दीपदानस्य—

शिरसा धारयेद्दीपं सर्वां रात्रिं शिवाग्रतः ।
ललाटे वाऽथ हस्ताभ्यां समुद्युक्तस्तथोरसि ॥५९६॥

सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः ।
कल्पायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥५९७॥

सर्वां सम[3]स्ताम्शिरसा ललाटे, उरसि हस्ताभ्यामितिप्रयोगचतुष्टयम् ।

अद्यास्यां समस्तरात्रौ सार्वकामिकसूर्य्यकोटिप्रतीकाशबहु विमानकरणक-बहुकल्पायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया शिवस्याग्रे शिरःकरणक-दीपधारणमहं करिष्ये ।

एवं ललाटेनोरसा हस्तद्वयेन वा दीपधारणेऽपीयमेव कामना ।

लिङ्गपुराणे—

यावदक्षिनिमेषांस्तु दीपः प्रज्वलितस्तथा ।
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥५९८॥

अद्यास्यां रात्रौ दीपज्वालावच्छिन्नयावन्निमेषसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्न-शिवलोकमहितत्वकामनया शिवायतने दीपदानमहं करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, सुसम्बोध्य ।
२ तत्रैव, सम्बोध्य ।
३ समस्ताम् ।

शिवालयाधिकरणकलौहदीपवृक्षदानस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] लौहमुच्चं शिवालये।
दत्त्वा कल्पायुतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥५९९॥

अद्य साग्रकल्पायुतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनयाऽमुं लौहवृक्षमुद्बोध्यं शिवस्यायतनेऽहं दास्ये।

शिवपुराणे दीपदानस्य—

दीपप्रदानं यो दद्याच्छुचिः प्रयतमानसः।
तेन दीपप्रदानेन मत्प्रख्यां याति चैव सः ॥६००॥

अद्य शिवप्रख्यत्वप्राप्तिकामनयाऽयं दीपो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः।

अथ कार्त्तिकमासीयप्रत्यहदीपदानस्य

स्कन्दपुराणे शिववाक्यम्—

कार्त्तिके मासि यो दद्याद्दीपं वै प्रत्यहं मम।
ब्राह्मणान् भोजयित्वान्ते गाणपत्यं लभेद्ध्रुवम् ॥६०१॥

अद्यास्मिन् कार्त्तिके प्रत्यहं गाणपत्यप्राप्तिकामनया घृतदीपं भगवते महादेवाय दत्वा मासान्ते ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये।

कार्त्तिकमासे दीपमालायाः—

प्रदीपमालां यः कुर्य्यात् कार्त्तिके मासि वै मम।
अवसाने तु मालायाः[3] ब्राह्मणाँस्तर्प्पयेच्छुचिः॥
गाणपत्यं स लभते दीप्यते च रविर्यथा ॥६०२॥

मासव्यापकोऽयं प्रयोगः विशेषश्रुतेः[4]।

अद्यास्मिन् कार्त्तिके मासि गाणपत्यप्राप्तिरवितुल्यतेजस्करत्वकामः प्रत्यहं दीपमालां भगवते महादेवाय दत्वा तदवसाने ब्राह्मणानहं पूजयिष्ये।

---

१. ने० पा०, सुसम्बोध्य।
२. तत्रैव, सम्बोध्य।
३. तत्रैव, दीपानां।
४. तत्रैव, विशेषश्रुतेः।

भविष्यपुराणे कार्त्तिकमासीयकृष्णचतुर्द्दश्यां घृतपूर्णदीपमालायाः—

यः कुर्य्यात् कार्त्तिके मासि शोभनां दीपमालिकाम् ।
घृतेन च चतुर्द्दश्याममावास्यां विशेषतः ॥६०३॥

सूर्य्यायुतप्रतीकाशतेजोभिर्भासयन् दिशः ।
तेजोराशिविमानस्थः कुलं प्रद्योत्य सर्वशः ॥६०४॥

यावत्प्रदीपसंख्या तु घृतेनापूर्य्य बोधिता ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६०५॥

कार्त्तिके चतुर्द्दश्याममावास्यायामिति सम्बन्धः । अमावास्यासमभिव्याहाराच्चतुर्द्दश्यपि कृष्णैव । शिवायेत्यनुषज्यते । दीपमालिकां कुर्य्यादित्यत्र ।

अद्य कार्त्तिककृष्णचतुर्द्दश्यां कार्त्तिकामावास्यायां वा सूर्य्यायुततेजस्तुल्यतेजस्कत्वसकलदिग्भासकतेजोमयविमानस्थत्वसर्वशःकुलोद्योतनपूर्वकैतद्घृतपूर्णदीपसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया इयं घृतपूर्णदीपमाला भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

शिवधर्म्मे कार्त्तिकमासीयकृष्णचतुर्द्दश्यां घृतपूर्णदीपवृक्षस्य—

दीपवृक्षं समुद्बोध्य[1] शर्वस्यायतने शुभम् ।
पूर्वस्माद्द्विगुणं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥६०६॥

पूर्वस्माद्दीपमालादानफलात् ।

अद्य कार्त्तिककृष्णचतुर्द्दश्यां सूर्य्यायुतसमप्रभत्वसकलदिग्भासकत्वतेजोमयविमानस्थत्वसर्वशः कुलोद्योतनपूर्वकैतद्दीपवृक्षवर्त्तिघृतपूर्णदीपद्विगुणसंख्यबहुगुणावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामोऽमुं दीपवृक्षं समुद्बोध्य शर्वस्यायतनेऽहं दास्ये ।

---

१. ने० पा०, सुसंबोध्य ।

अथ नैवेद्यप्रकरणम् ।

दिकेश्वरे—

अथ भक्त्या शिवं पूज्य नैवेद्यमुपकल्पयेत् ।
यद्यद्देवात्मनः[1] प्रेयस्तत्तदीशाय कल्पयेत् ॥६०७॥

दत्त्वा नैवेद्यवस्त्रादि नाददीत कथञ्चन ।
त्यक्तव्यं शिवमुद्दिश्य तदा दानेन तत्फलम् ॥६०८॥

यद्यन्निवेदनीयं स्याद्दानं देयञ्च यद्भवेत् ।
तत्पुष्पाक्षततोयेन शिवाय[2] च समुत्सृजेत् ॥६०९॥

न्दपुराणे पक्वश्रीफलनिवेदनस्य ।

यः पक्वं श्रीफलं भक्त्या शिवाय विनिवेदयेत् ।
गुरोर्वा होमयेद्वापि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१०॥
श्रीमद्भिः समहायानैर्भोगान् भुङ्क्ते शिवे पुरे ।
वर्षाणां नियुतं साग्रं तदन्ते श्रीपतिर्भवेत् ॥६११।

अद्य श्रीमद्बहुमहायानकरणकशिवपुराधिकरणकसाग्रवर्षनियुतावच्छिन्नबहुभोगभुक्तितदनन्तरश्रीपतिभवनकामनया इदं पक्वश्रीफलं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

कपित्थफलनिवेदनस्य—

कपित्थमेकं पक्वं यः शिवाय विनिवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैः[3] क्रीडते स शिवे पुरे ॥६१२॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमहाभोगसहितक्रीडनकामनया इदं कपित्थफलं पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१. मूले, यद्यदेवात्वनः ।
२. ने० पा०, देवाय ।
३. तत्रैव, महाभागैः ।

पक्वाम्रफलदानस्य—

एकमाम्रफलं पक्वं यः शम्भौ विनिवेदयेत् ।
वर्षाणामयुतं भोगैः क्रीडते स शिवे पुरे ॥६१३॥

अद्य वर्षायुतावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगक्रीडनकामनया इदमाम्रफलं पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

पक्वकदलीफलदाने—

एकं मोचाफलं पक्वं यः शिवाय निवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६१४॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगोभोगपर्सहितमहितत्वकामनया पक्वं मोचाफलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

पक्वदाडिमफलस्य—

यः पक्वं दाडिमञ्चैव हृद्यं विकसितं नवम्[1] ।
शिवाय गुरवे वापि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१५॥
यावत्तद्बीजसंख्यान[2]मुभयोर्विनिवेदितम् ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६१६॥

अद्यैतद्दाडिमबीजसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया पक्वदाडिमफलं नवं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

द्राक्षाफलस्य—

द्राक्षाफलानि पक्वानि यः शिवाय निवेदयेत् ।
भक्त्या वा शिवयोगिभ्यस्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥६१७॥
यावत्तत्फलसंख्यानमुभयोर्विनिवेदितम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६१८॥

अद्यैतद्द्राक्षाफलसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया पक्वद्राक्षाफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

---

१ ने० पा०, फलम् ।
२ तत्रैव, संख्यात ।

खर्जुरफलेष्वप्येतदेव फलम् ।

...हि—

द्राक्षाफलेषु यत्पुण्यं तत् खर्जुरफलेष्वपि ।
तदेव राजवृक्षेषु पारावतफलेषु च ॥६१९॥

...रङ्गफलस्य—

नागरङ्गफलं पक्वं विनिवेद्य महेश्वरे ।
अब्दलक्षं महाभोगैः क्रीडते स शिवपुरे ॥६२०॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुमहाभोगसहितक्रीडनकाम इदं नागरङ्ग... पक्वं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

...वीरफले—

जम्बीरेषु तदर्द्धञ्च पुण्यं स्याल्लकुचेषु[1] च ।
आक्षोडपीलुनीपेषु तत्पुण्यं तिन्दुकेषु[2] च ॥६२१॥

अद्य पञ्चाशद्वर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुमहाभोगक्रीडनकाम एतानि ...वीरफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

लकुचाक्षोडपीलुनीपतिन्दुकफलान्यतमफलदानेऽपीदृशमेव फलम् ।

...रिकेलफलस्य—

पुन्नागं नारिकेलञ्च शिवाय विनिवेदयेत् ।
अब्दलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६२२॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नमहाभोगसहितशिवलोकमहितत्वकामनया इदं ...रिकेलफलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

पुन्नागफलेष्वेतदेव फलम् ।

...परु[3]षकादिफले—

परुषकं प्रियालञ्च मधूककुसुमानि च ।
जम्बूफलानि पक्वानि वैकैकं तत्फलानि च ॥६२३॥
निवेद्य भक्ष्यं शर्वाय प्रत्येकन्तु फले फले ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६२४॥

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतत् परुषफलं भगवते ...शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, स्यानकुचेषु ।
२ तिन्दुः तिन्दुकः, तिन्दुलः [तिम्+कुनि, तिन्दु+कन् पक्षे कस्य लः] तेन्दूक गाछ ।
३ ने० पा०, वालुकि ।

इऐह पु
जेना वि
द्राक्षा प
पारावत फल च
नागरंग फल चढ़
जे पाक
प्ररि शिवपुरमे,
आइ ल
क्रीडा करबाक
करंत छी ।
जम्बीर चढ़यबाक
जम्बीरकें
लकुच, अखरोट,
आइ हम
पूर्वक क्रीड़ाक क
लकुच, अ
नारिकेल फल द्वा
कोनो व
अनेक महाभोगक
आइ हम
महितत्वक काम
इएह पु
पाकल परूष आ
परूष, प्
शिवकें अर्पित व
प्राप्त करैछ ॥६
आइ द
कामनासँ ई परूष

एवं प्रियालफलेष्वपि[1]।

क्षीरिकावकुलयोरन्यतरस्मिन्—

क्षीरिकां बकुलञ्चैव यः शिवाय निवेदयेत् ।
वर्षलक्षं महाभोगैर्मोदते स शिवे पुरे ॥६२५॥

अद्य शिवपुराधिकरणकलक्षवर्षावच्छिन्नबहुभोगहेतुकमुदितत्वकामनया एत क्षीरिकाफलं बकुलफलं वा शिवाय तुभ्यमहं ददे।

बिल्वाम्रादिफलेषु क्षीरकावकुलपर्य्यन्तेषु बहुषु दातव्येषु अद्य प्रतिफलमि प्रयोज्यम्। इदं पदस्थाने एतानीति पदमिति विशेषः।

कर्कटीत्रपुषयोरन्यतरदाने—

वालुङ्कि[2]त्रपुषीणाञ्च यः फलानि निवेदयेत् ।
शिवाय गुरवे वापि तस्य पुण्यं वदाम्यहम् ॥६२६॥

एकैकस्मिन् फले भोगानयुताब्दं शिवे पुरे ।
प्राप्नुयाद्द्विगुणं पुण्यं यः पक्वं विनिवेदयेत् ॥६२७॥

वालुङ्किः कर्कटी।

अद्य प्रतिफलं शिवपुराधिकरणकायुतवर्षावच्छिन्नवहुभोगभुक्तिकामनया एता वालुङ्किफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि।

त्रपुषफलेप्येतदेव फलम्। एतयोरेव पक्वयोर्न्निवेदने।

अद्य प्रतिफलं वर्षायुतावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगभुक्तिकामन पएतानि क्ववालुङ्किफलानि पक्वत्रपुषफलानि वा भगवते शिवाय तुभ्यं मय दत्तानि।

एकफलदाने तु प्रतिफलमित्यपहाय इदं फलमिति योज्यम्।

---

१ ने० पा० प्रियालादिः।
२ तत्रैव, वालुकी।

पक्वकरमर्द्दकदाने—

निवेदयेत् शर्वाय यः पक्वं करमर्द्दकम् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६२८॥

अद्य प्रतिफलं दशवर्ष सहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि पक्वकरमर्द्दकफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

सुपक्वबदरीफलदाने—

बदराणि सुपक्वानि तिन्तिडीकफलानि च ।
दर्शनीयानि पक्वानि आमलक्याः फलानि च ॥६२८॥

एवमादीनि चान्यानि शाकमूलफलानि च ।
निवेदयेत शर्वाय शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६२९॥

एकैकस्मिन् फले भोगान् प्राप्नुयादानुपूर्वशः ।
पंचवर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥६३०॥

अद्य प्रतिफलं पञ्चवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगभुक्तिमहितत्वकामनया एतानि सुपक्वबदरफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

एवं तिन्तिडीफलामलकीफलयोरुक्तान्यफलेषु शाकमूलेष्वेतदेव फलम् । एकफलदाने तु प्रतिफलमित्यपहाय इदमिति योज्यम् ।

भृष्टगोधूमादिदाने—

गोधूमचणकान्यान्[1] यः सुकृतान् सक्तुभर्जितान् ।
निवेदयेत शर्वाय शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६३१॥
यावत्तद्बीजसंख्यानां[2] स्विन्नं भृष्टं निवदयेत् ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६३२॥

सुकृतान् सुस्विन्नान् ।

अद्यैतद् गोधूमबीजसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि भृष्टगोधूमान्नानि सुस्विन्नगोधूमान्नानि वा भगवते शर्वाय तुभ्यमहं ददे ।

एवं चणककलायादौ ।

---

१ ने० पा०, गोधूमचणका न्यन् ।
२ तत्रैव, संख्यातं ।

इक्षुदाने—

य: पर्वणीक्षुदण्डानां शिवाय विनिवेदयेत् ।
गुरवे वापि चैकैकवर्षलक्षं प्रमोदते ॥
साग्रं शिवपुरे भोगैः पौण्ड्रं[1] पञ्चगुणं भवेत् ॥६३३॥

अद्य प्रतिपर्वणि साग्रलक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगप्रमुदितत्व-कामनया इमानिक्षुदण्डान् भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ॥

पौण्ड्रकेक्षुदण्डनिवेदने —

अद्य प्रतिपर्वसाग्रपञ्चलक्षवर्षावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकबहुभोगप्रमुदित-त्वकामनया एते पुण्ड्रकेक्षुदण्डाः भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

एकेक्षुदण्डदाने त्वेकवचनं प्रयोज्यमिति विशेषः ।

शिवयोगिसम्प्रदानकदानेप्येतदेव फलम् ।

इक्षुरसनिवेदने—

निवेद्य परमेशाय शुक्ति[2]मात्रं रसस्य तु ।
वर्षकोटिं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६३४॥

अद्य वर्षकोट्यवच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुमहाभोगमहितत्वकाम इममिक्षुरसं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

फाणित[3] दाने—

निवेद्य फाणितं शुद्धं शिवाय गुरवेऽपि वा ।
रसात् सहस्रगुणितं फलं प्राप्नोति मानवः ॥६३५॥

रसादिक्षुरसात् ।

अद्यरसदानफलसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनया इदं फाणितं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदितम् ।

फाणितञ्चापि विज्ञेयं खण्डवद्वाग्रभागकम् ।

गुडपलदाने—

गुडस्य पलमेकन्तु यः शिवाय निवदयेत् ।
अब्दकोटिं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥६३६॥

अद्य वर्षकोट्यवच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकबहुभोगमहितत्वकामनया इदं गुडपलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम्[4] ।

---

१ मूले प्रौण्डं ।
२ सितुआ ।
३ मूले फालितं ।
४. ने० पा०, निवेदितम् ।

खण्डपलनिवेदने—

खण्डस्य पलनैवेद्यं गुडाच्चतुर्गुणं स्मृतम् ।
खण्डात्सहस्रगुणितं शर्कराविनिवेदने ।।६३७।।

अद्य गुडपलशतदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं खण्डपलं भगवते शिवाय तुभ्यं दत्तम् ।

शर्करापलनिवेदने—

अद्य खण्डपलसहस्रदानफलप्राप्तिकामनया इदं शर्करापलं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

मत्स्यण्डिकादाने—

मत्स्यण्डिकां महाशुद्धां शङ्कराय निवेदयेत् ।
कल्पकोटिं नरः साग्रां शिवलोके महीयते ।।६३८।।

अद्य साग्रकल्पकोट्यवच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम इमां मत्स्यण्डिकां महाशुद्धां भगवते शिवाय तुभ्यं मया निवेद्यते ।

मत्स्यण्डिका तु विज्ञेया खण्डशालुकिका हि सा ।

मांसनिवेदने—

परिपक्वं सुसंमृष्टमाज्यसिद्धं सुसंस्कृतम् ।
शिवाय मांसं दत्वा तु शृणु यत्फलमाप्नुयात् ।।६३९।।

अशेषफलदानेन यत्फलं परिकीर्त्तितम् ।
तत्फलं प्राप्नुयान्नित्यं सर्वं मांसनिवेदनात् ।।६४०।।

अद्याशेषफलदानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकाम इदं मांसं परिपक्वं सुसंमृष्टमाज्यसंस्कृतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

पानकनिवेदने—

यः पानकानि दिव्यानि स्वादूनि सुरभीणि च ।
निवेदयेत शर्वाय तस्य पुण्यफलं शृणु ।
कल्पकोटिं नरः साग्रां शिवलोके महीयते ।।६४१।।

---

१ मालविकाग्निमित्र, ३ ।

अद्य साग्रकल्पकोट्यवच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एतानि हृद्यस्वादुसुरभिपानकानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

आत्मेष्टान्नपानफलाद्यन्यतमनिवेदनस्य —

यदिष्टमात्मनः किञ्चिदन्नपानफलादिकम् ।
तच्छिवाय प्रदेयं स्यादुत्तमं भोगमिच्छता ॥६४२॥

अद्य उत्तमभोगप्राप्तिकामनया इदमात्मेष्टमन्नं पेयं फलं वा भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पलाशादिपत्रदाने—

पलाशकदलीपत्रं पद्मपत्राणि चैवहि ।
दत्त्वा शिवाय गुरवे शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥६४३॥

यावत्तत्पत्रसंख्यानमीश्वराय निवेदितम् ।
तावदब्दायुतान्यैशे लोके स च महीयते ॥६४४॥

अद्य तत् कदलीपत्रसमसंख्यवर्षायुतावच्छिन्नेशलोकमहितत्वकामनया एतानि कदलीपत्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवं पलाशपद्मपत्रयोरन्यतरदाने ।

शिवयोगिसंप्रदानकदानेप्येतदेव फलम् ।

पर्णपूगनिवेदने—

यावत्ताम्बूलपत्राणि पूगांश्च निवेदयेत् ।
तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके[1] महीयते ॥६४५॥

अद्य तत्ताम्बूलपत्रपूगसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एतानि पूगताम्बूलपत्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवमन्यदपि क्षुद्रवस्तुप्रदानमक्षयफलम् ।

---

१ ने० पा० रुद्रलोके ।

सुक्षेत्रे च यथा बीजमुप्तं बहुफलं भवेत् ।
अत्यल्पमक्षयं तद्वत्पुण्यं तस्य शिवाश्रयात् ॥६४६॥

न शिवः परिपूर्णत्वात् किञ्चदश्नाति कस्यचित् ।
किन्त्वीश्वरनिभं[१] कृत्वा सर्वस्यात्मनि दीयते ॥६४७॥

तस्मादीश्वरमुद्दिश्य यद्यदात्मनि रोचते ।
तत्तदीश्वरभक्तेभ्यः प्रदातव्यं फलार्थिभिः ॥६४८॥

अद्य तद् द्रव्यदानजन्याक्षयपुण्यप्राप्तिकामनया इदममुकं वस्तु भगवते शिवाय
यं मया दत्तम् ।

अथ नन्दिपुराणे सिद्धान्नदानं

देवतानां तु यो दद्यादन्नं श्रद्धासमन्वितः ।
सिक्थात्[२] सिक्थाद्वसेल्लक्षं समा नाकेऽमरैःसह ॥६४९॥

एतद्दशगुणं पुण्यमन्ने व्यञ्जनसंयुते ।
तथैष्टदैवते दत्वा पुण्यमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥६५०॥

यो दद्याद्ब्राह्मणेऽन्नानि तस्य द्विगुणित फलम् ।
तस्माद्विष्णौ तु दत्वान्नं द्विगुणं फलमश्नुते ॥६५१॥

रुद्रायान्नप्रदानेन फलमेतच्चतुर्गुणम् ।
एतत्काले समायोगाद्व्यञ्जनानाञ्च योऽगतः ॥
शतसंख्यं भवेत्पुण्यं सम्यगन्नप्रदायिनाम् ॥६५२॥

अद्य प्रतिसिक्थं विष्णुसम्प्रदानकान्नदानफलचतुर्गुणफलप्राप्तिकामनया एतानि
ान्नानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।
कालीनसव्यञ्जनान्नदाने—

अद्योत्तरायणादिरविसंक्रान्तौ प्रतिसिक्थं विष्णुसम्प्रदानकान्नदानफलप्राप्तिकामनया
ानि सव्यञ्जनानि भक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ मूले ईश्वरांनिमे ।
२ भात ।

शिवपुराणे सघृतनैवेद्यदाने—

नैवेद्यं घतसंयुक्तं धूपञ्चैव दिवेदयेत् ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलमाप्नोति मानवः ॥६५३॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं सघृतनैवेद्यं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सघृतपायसंदाने—

पायसं घृतसंयुक्तं यो हराय प्रयच्छति ।
न दुर्गतिमवाप्नोति स्वर्गलोकं प्रयच्छति[१] ॥६५४॥

अद्य दुर्गत्यनवाप्तिस्वर्गलोकगमनकाम इदं सघृतपायसं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सव्यञ्जनशालिभक्तदाने—

सव्यञ्जनानि भक्तानि शिवाय प्रतिसिक्थकम् ।
वर्षलक्षाणि पूर्णानि चत्वारिंशत्तथैव च ॥
प्रदाय चामरैः सार्द्धं स्वर्गलोके महीयते ॥६५५॥

अद्य प्रतिसिक्थं[२] चत्वारिंशद्वर्षलक्षावच्छिन्नामरसहितस्वर्गलोकमहितत्वकामनया एतानि सव्यञ्जनशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

अन्नदाने—

रुद्रायान्नप्रदानेन सिक्थे सिक्थेऽमरैः सह ।
षोडशैवाब्दलक्षाणि वसेच्छ्रद्धान्वितो नरः ॥६५६॥

अद्य प्रतिसिक्थं षोडशाब्दलक्षावच्छिन्नामरसहितस्वर्गवासकामनया एतानि भक्तान्नानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, गच्छति ।
२ ने० पा०, सिक्त ।
३ तत्रैव, कोटय षोडश ।

ञ्जनान्नदाने—

सव्यञ्जनान्नदानेन कोटिञ्च प्रतिसिक्थकम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि[1] वसेच्छ्रद्धान्वितोऽमरैः ॥६५७॥

अद्य प्रतिसिक्थं षष्टि[2] वर्षसहस्रावच्छिन्नाधिकवर्षकोट्यवच्छिन्नसहामरस्वर्ग-कामनया एतानि सव्यञ्जनशालिभक्तानि भगवते रुद्राय तुभ्यं मया दत्तानि ।

यञ्जनसहितान्नदाने—

वहुव्यञ्जनं प्रदायान्नं शिवायप्रतिसिक्थकम् ।
कोट्यः षोडशवर्षाणां वसेच्छ्रद्धान्वितोऽमरैः ॥६५७॥

अद्य प्रतिसिक्थं षोडशवर्षकोट्यवच्छिन्नसहामरवासकामनया एतानि वहु-ञ्जनशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

तान्नदाने—

रुद्राय तत्सघृतं दत्वा तथा चान्नादिकं शुभम् ।
अग्निष्टोमादिकं पूर्वं फलमुक्तं लभेन्नरः ॥६५८॥

अद्याग्निष्टोमयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि सघृतान्नानि भगवते य तुभ्यं मया दत्तानि ।

धर्मोत्तरे भक्तदानस्य—

शिवाग्निगुरुनैवेद्ये यावत्सिक्थानि संख्यया ।
तावद्वर्षसहस्राणि दाता शिवपुरे वसेत् ॥६५९॥

अद्यैतद्दातव्यसिक्थसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नशिवपुरवासकामनया एतानि नि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

शिवयोगिसम्प्रदानकैतद्दानेऽप्येतदेव फलम् ।

सूपयुक्तभक्तदाने ।

घृतसूपयुतैः[3] सिक्थैः पुण्यं दशगुणोत्तरम् ।
अवदंशयुतैर्ज्ञेयं पुण्यं दशगुणाधिकम् ॥६६०॥

अवदंशो मूलकादिः ।

अद्य प्रतिसिक्थं दशवर्षसहस्राधिकावच्छिन्नशिवपुरवासकामनया एतानि सूपयुतभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवमवदंशयुतान्नदानेऽपि ।

---

१ ने० पा०, कोट्यः षोडश.......।
२ तत्रैव षोडश वर्षः.......।
३ तत्रैव, युक्तैः ।

षष्टिकौदने—

षष्टिकोदननैवेद्यैः सहस्रगुणितं फलम् ॥६६१॥

अद्य ओदनदानफलसहस्रगुणफलप्राप्तिकामनया एतानि षष्टिकौदनानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

सुगन्धिशालिभक्तदाने—

सुगन्धिशालिनैवेद्यं विज्ञेयमयुताधिकम् ॥६६२॥

अद्य भक्तदानफलायुताधिकफलप्राप्तिकामनया एतानि सुगन्धिशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

रक्तशालिभक्ते—

रक्तशालिकनैवेद्यैः फलं स्यान्नियुताधिकम् ॥६६३॥

अद्य नियुताधिकभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि रक्तशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

कलमशालिभक्ते—

कलमशालिनैवेद्यैर्दशलक्षाधिकं फलम् ॥६६४॥

अद्य दशलक्षाधिकौदनफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि कलमशालिभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

एवं शालिविशेषेण फलं स्यादुत्तरोत्तरम् ।
शुभव्यञ्जनसंयुक्तैर्भूयः पुण्यं प्रवर्द्धते ॥६६४क॥

विचित्रस्वादुसुरभिवहुव्यञ्जनदाने—

व्यञ्जनानि विचित्राणि स्वादूनि सुरभीणि च ।
तानि कोटिशतान्याहुः स्निग्धानि मधुराणि च ॥६६५॥

अद्य कोटिशताधिकौदनदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि स्वादुविचित्रसुरभिस्निग्धमधुरवहुव्यञ्जनान्नानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

क्षीरभक्तदानस्य—

क्षीरभक्तेन नैवेद्यं दशकोटिगुणाधिकम् ॥६६६॥

अद्य दशकोटिगुणाधिकौदनदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि क्षीरभक्तानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

शर्करायुतदधिदाने—

दधिशर्करायुक्तं तत्पुण्यं स्याद्दशाधिकम् ॥६६७॥

अद्य दशगुणाधिकक्षीरभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं दधिशर्करायुक्तं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

साधितमांसदाने—

मांसेनैव तु नैवेद्यं पुण्यं तस्य दशाधिकम् ॥६६८॥

अद्य दशगुणाधिकशर्करायुक्तदधिदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि साधितमांसानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

रसालादाने—

रसालां सुघनां स्फीतां कर्पूरसुरभीकृताम् ।
निवेद्य पुण्यमाप्नोति दशकोटिगुणाधिकम् ॥६६९॥

अद्य दशकोटि····धिकमांसदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इमां रसालां भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

वैद्यके—

अर्द्धाढकं त्वचिरपुर्य्युषित (तस्य) सदध्नः ।
खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभवस्य ।
सर्पिप्पलं मधुपलं मरिचद्विकर्षं ।
शुण्ठीपलार्द्धमपि चार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥३७०॥
श्लक्ष्ने[1]पाटलनया मृदुपाणिघृष्टा ।
कर्पूरधूपसुरभीकृतभाण्डसंस्था ।
एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला ।
यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥६७१॥

१ श्लक्ष्णोपले (शुद्ध पाठ)

चतुर्णाम् एलापत्रकगुडत्वचानागकेशराणाम् ।

सुगन्धिपानकदानस्य—

पानकानां सुगन्धानां फलं तुल्यं रसालया ।
तथा फलविशेषैश्च स्वादुभिः सदृशं फलम् ॥६७१क॥

सुगन्धानां कर्पूरादिक्षोदसुरभीकृतानाम् ।

अद्य रसालादानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं सुगन्धिपानकं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं[1] स्वादुफलविशेषेष्वपि ।

गुडखण्डाक्षतयुतघृतपाचितभक्ष्येषु—

गुडखण्डाक्षतैर्भक्ष्यैर्घृतेन परिपाचितैः ।
सहस्रकोटिगुणितं ज्ञेयं सुगन्धिभिः ॥६७२॥

अद्य सहस्रकोटिगुणितपानकदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि सुरभीणि खण्डघृताक्षतपाचितभक्ष्याणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

गुड़घृताक्षतपाचितेष्वेतदेव फलम् ।

घृतपाचितमधुरविविधपिष्टप्रकारेषु—

पिष्टप्रकारैर्विविधैर्मधुरैर्घृतपाचितैः ।
कोटिकोटिगुणं पुण्यं शिवाग्निगुरुपाचितैः ॥६७३॥

अद्य कोटिकोटिगुणाधिकघृतखण्डाक्षतपाचितभक्ष्यदानफलप्राप्तिकामनया एते घृतपाचितमधुरपिष्टकप्रकारा भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

घृतपात्रदानस्य—

घृतपात्रेण विज्ञेयं पिष्टतुल्यं फलं बुधैः ।
शर्कराखण्डयुक्तेन[2] पिष्टादप्यधिकं फलम् ॥६७४॥

अद्य घृतपाचितमधुरपिष्टकदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं घृतपात्रं भगवते शिवायं तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, एवामितर ।

२ तत्रैव, शर्कराखण्डकेनापि ।

शर्कराखण्डयुतघृतपात्रदाने—

अद्य खण्डाज्यपाचितमधुरपिष्टदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं शर्करा-खण्डयुतघृतपात्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं स्वासुरभिमधुरान्तरनिवेदनेऽपि ।

स्वादुमधुरविवेदनपूर्वकभोजनेन तु यद्यन्निवेदने तत्फलमक्षयं भवति ।

यदाह—

यथातथा स्वादूनि शुभानि सुरभीणि च ।
निवेद्य पिष्टपानानि तत्फलानि तथातथा ॥
भक्त्या निवेद्य भुञ्जानः फलमक्षयमाप्नुयात् ॥६७५॥

स्कन्दपुराणे दक्षिणामूर्त्तौ घृतपायसनिवेदने—

दक्षिणायान्तु यो मूर्त्तौ पायसं घृतसंयुतम् ।
निवेदयेद्वर्षमेकं स च नन्दिसमो भवेत् ॥६७६॥

वर्षमेकं वर्षप्रतिदिनमित्यर्थः ।

अद्यावि वर्षमेकं यावत्प्रत्यहं नन्दिसमत्वभवनकामो घृतसंयुक्तपायस दक्षिणा-मूर्त्तौ भगवतः शिवस्य निवदेयिष्ये ।

शालितण्डुलप्रस्थसाधितचरौ—

चरवो दशसाहस्रा यावकाश्च चतुर्गुणाः ।
शेषाश्च चरवः सर्वे यावकार्द्धेन सम्मिताः ॥६७७॥

अद्य दशसहस्रगुणभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एष शालितण्डुल-प्रस्थप्रकृतिकचरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

यवप्रस्थप्रकृतिकचरौ—

अद्य भक्तदानफलचतुर्गुणफलप्राप्तिकामनया एष यवप्रस्थप्रकृतिकचरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शालियवान्यतरचरौ—

अद्य यवप्रस्थप्रकृतिकचरुदानफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया एष चरुर्भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

१ ने० पा०, मूले यवप्रस्थ ।

शालितण्डुलप्रस्थसाधितचरौ —

शालितण्डुलप्रस्थेन कुर्यादन्नं सुसंस्कृतम् ।
शिवाय तं चरुं दद्याच्चतुर्दृश्यां विशेषतः ॥६७८॥

हरिद्रां कृसरं[1] शुक्लं पायसं यावकं तथा ।
गुडखण्डाज्यसंमिश्रमेवमन्नं प्रकल्पयेत् ॥६७८क॥

यावन्तस्तण्डुलास्तस्मिन्नैवेद्ये परिसंख्यया ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥६७९॥

चतुर्दृश्यां विशेषत इतिवचनादधिकं फलम् ।

अद्य एतच्चरुप्रकृतितण्डुलसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकाम इमं शालितण्डुलप्रस्थसुसंस्कृतचरुं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदये ।

प्रस्थः षोडशपलानि ।

तदुक्तम्—

षोडशपलिकं प्रस्थमाढकं तैश्चतुर्गुणैः ।
द्वाभ्यामर्द्धाढकञ्चैव मुनिभिः समुदाहृतम् ॥६८०॥

एवं दरिद्रासंस्कृतकृसरशुक्लपायसयावकगुडखण्डाज्यसम्मिश्रान्नानामन्यतमदानेऽपीदमेव फलम् ।

गुडखंडान्यतरघृतपाचितभक्ष्यदाने —

गुडखण्डतानाञ्च भक्ष्याणां विनिवेदने ।
घृतेन पाचितानां स्यादन्नाच्छतगुणं फलम् ॥६८१॥

अद्य शतगुणफलभक्तदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि खंडघृतान्नपाचितभक्ष्याणि घृतगुडान्नपाचितभक्ष्याणि वा भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

---

१ ने० पा०, कृसरा ।

]

...ङ्गादि[1] फलस्य —

मातु[1]लिङ्गफलाद्यानि पक्वानि विनिवेदयेत् ।
शिवाय तत्फलं तस्य यद्भक्ष्याणां निवेदने ॥६८२॥

अद्य गुडखंडान्यतरघृतपाचितभक्ष्यदानफलसमफलप्राप्तिकामनया एतानि ...लिङ्गफलानि भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

एवं फलान्तरेऽपि ।

...सलिलयोः—

मार्ज्जिता पानकान्यानां भक्ष्यार्द्धफलमिष्यते ।
तदर्द्धं सलिलस्यापि वासितस्य निवेदने ॥६८३॥

अद्य गुडखंडान्यतरपाचितभक्ष्यदानफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया इदं पानकं ...ते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

मार्ज्जिता रसालातद्दानेऽपीदं फलम् ।

...जलस्य—

अद्य पानकदानजन्यफलार्द्धफलप्राप्तिकामनया इदं वासितजलं भगवते शिवाय ...मया दत्तम् ।

...हिकवस्त्रपूततोयस्य—

दिने दिने तु यस्तोयं वस्त्रपूतं निवेयदेत् ।
शिवाय शिवभक्तेभ्यो रमते स शिवालये ॥६८४॥

अद्यादि शिवालयाधिकरणकक्रीडनकामनया वस्त्रपूततोयं वरुणदैवतमहर- ...ते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

शिवभक्तसंप्रदानकैतद्दानेऽप्येतदेव फलम् ।

...त्रे—

घृतपात्रमसंख्येयमिह प्रेत्य च शाश्वतम् ॥६८५॥

अद्यैहिकामुष्मिकासंख्येयशाश्वतफलप्राप्तिकामनया इदं घृतपात्रं भगवते ...य तुभ्यं मया दत्तम् ।

1 ने० पा०, मातुलुङ्गं ।

गुडार्द्रकपलद्वये—

दत्वा लभेन्महाभोगान् गुडार्द्रकपलद्वयम् ॥६८६॥

अद्य बहुमहाभोगप्राप्तिकामनया इदं गुडार्द्रकपलद्वयं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

गुडशुण्ठीनिवेदने—

वर्षकोटिद्वयं युग्मं गुडशुण्ठीनिवेदने ॥६८७॥

अद्य वर्षकोटिद्वयावच्छिन्नगुडार्द्रकदानजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया एते गुडशु[1]ण्ठी भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ते ।

सलवणगुडार्द्रकनिवेदने—

गुडार्द्रकं सलवणमाम्रं मरिचसंयुतम् ।
निवेद्य शम्भवे भक्त्या सौभाग्यं परमं लभेत् ॥६८८॥

अद्य परमसौभाग्यप्राप्तिकामनया इदं सलवणं गुडार्द्रकं भगवते शिवाय तुभ्यं निवेदितम् ।

मरिचसंयुताम्रनिवेदने—

अद्य परमसौभाग्यप्राप्तिकामनया इदं मरिचसंयुताम्रं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

भक्ष्यभोज्यनिवेदने—

यः कृत्वा भक्ष्यभोज्यानि यत्नेन विनिवेदयेत् ।
शिवाय शिवलोके स कल्पकोटिं प्रमोदते ॥६८९॥

भक्ष्यं खरविशदं लाजपृथुकादि भोज्यं मृदुविशदमोहनादि ।

अद्य शिवलोकाधिकरणककल्पकोटिप्रमुदितत्वकामनया एतानि भक्ष्यभोज्यानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

१ एते गुडशुण्ठ्यौ ।

लिकापुराणे—

सुपक्वं शीर्णवृन्तञ्च दाडिमं कदलं तथा ।
मार्त्तुलङ्गानि पक्वानि शिवाय विनिवेदयेत् ॥६९०॥
पनसं सहकारं च नारिकेलफलानि च ।
लवलि क्षीरिकां धात्रीं बिल्वञ्चापि तथा शुभम् ॥६९१॥
भव्यं वै नागरंगञ्च प्राचीनामलकं तथा ।
जम्बीरं कर्कटीञ्चैव तथाऽन्यानि फलानि च ॥६९२॥
यान्येतानि सुपक्वानि फलानि विनिवेदयेत् ।
शिवाय गणपैः सार्द्धं शिवलोके महीयते ॥६९३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकबहुगणसहितमहितत्वकामनया एतानि कदला-
तमफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

नैवेद्यञ्च यथा यथा यद्यद्रूपं भुज्यते तत्तथा कृत्वा दातव्यम् अन्यथा बहुतर-
त्र्यतेः ।

ा च लिङ्गपुराणे—

पाचितु[1] पिष्टकं धान्यैरष्टादशैर्घृतेन च ।
तलैश्च तिलसम्भूतैः फलं पक्वं सुशोभनम् ॥६९४॥
यद्यथा च हविर्भक्ष्यं भक्षयेच्च स्वयं नरः ।
कृत्वा देवे तथा दद्यान्नैवेद्यं तदनुत्तमम् ॥६९५॥
नारिकेलफलं नीरं कोषञ्चोद्धृत्य दापयेत् ।
कण्टी[2]फलन्तु पनसं कोषमुद्धृत्य दीयते ॥६९६॥
पाटयित्वा तथा दद्याद्यथाशक्ति नियोगतः ।
रम्भायाश्च फलं रम्यं त्वचमुत्सार्य[3]दापयेत् ॥६९७॥
दध्ना मिश्रीकृतं चान्नं घृतेनाप्लुत्य दापयेत् ।
नैवेद्यं योऽन्यथा दद्यान्नूनमुक्तक्रमादबहिः ॥
ब्रह्महत्यासमं पापं कृतं तेन न संशयः ॥६९८॥

ष्टादशधान्यानि वायुपुराणे—

व्रीह्यश्च यवाश्चैव गोधूमा अणवस्तिलाः ।
प्रियङ्गवोद्युदाराश्च[4] कोरदूषाः सतीलकाः ॥६९९॥
माषा मुग्द मसूराश्च निष्पावश्च कुल थ्वकाः[5] ।
आढकाश्चणकाश्चैव गणाः सप्तदशस्मृताः ॥७००॥

१ ने० पा०, पाचितं ।
२ तत्रैव, करनाफलम् ।
३ तत्रैव, अशुद्ध पाठ अछि ।
४ प्रयङ्गवोद्युदारश्च
५ कुलत्थकाः ।

मुख्यधान्येन सहाष्टादशधान्यत्वम् ।

प्रियङ्गुः कङ्गुः; उदारो देवधान्यं—जन्गोगर[1] इतिप्रसिद्धम्; कोरदूषः कोद्रव; सतीलकः कलायः; निष्पावः श्वेतशिम्बिः; आढ़की राहलिः; चणको रहिला ।

सिद्धान्ननैवेद्यं त्रैवर्णिकेन दातव्यम् । शूद्रेण तु द्विजशुश्रूषाभिरतेन ।

तदुक्तं वाराहपुराणे—

त्रिषु वर्णेषु कर्त्तव्यं पाकभोजनमेव च ।
शुश्रूषामभिपन्नानां शूद्राणाञ्च वरानने ॥७०२॥

सिद्धान्ननैवेद्यं घृतपक्वं वर्ज्यम् । पर्य्युषितन्न दातव्यम् ।

तदुक्तं कालोत्तरे—

अपर्य्युषितपक्वानि दातव्यानि प्रयत्नतः ।
खण्डाज्यादिकृतं पक्वं नैव पर्य्युषितम्भवेत् ॥७०३॥

सर्वञ्चैव नैवेद्यादि पुष्पाक्षततोयेन समुत्सृजेत् ।

अथ ताम्बूलदाने

शिवधर्म्मे—

ताम्बूलस्य प्रदानेन श्रियमाप्नोत्यनुत्तमाम् ॥७०४॥

अद्यानुत्तमलक्ष्मीप्राप्तिकामनया एतानि ताम्बूलानि गन्धर्वदैवतानि भगवन् शिवाय तुभ्यम्मया दत्तानि ।

एकताम्बूलदाने त्वेकवचनं योज्यम् ।

पञ्चसुगन्धिद्रव्योपेतताम्बूलदाने—

पञ्चसौगन्धिकोपेतं यस्ताम्बूलं निवेदयेत् ।
शिवाय गुरवे चैव तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७०५॥

---

१ ने० पा०, जजेगव (?) ।

सुगन्धिदेहस्तेजस्वी सर्वावयवसुन्दरः ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं शिवलोके महीयते ॥७०६॥

कर्पूरपूगकक्कोल[1]जातीफललवङ्गकैः ।
सुगन्धिः पञ्चभिर्द्रव्यैः पञ्चसौगन्धिकं मतम् ॥७०७॥

अद्य सुगन्धिदेहत्वतेजस्वित्वसर्वावयवसुन्दरत्वदिव्यवर्षकोटिशतावच्छिन्न-लोकमहितत्वकामनया इदं कर्पूरपूगकक्कोलजातीफललवङ्गवृन्तमयपञ्चसौगन्धि-तं ताम्बूलं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदये ।

बहुषु प्रतिताम्बूलमेतानीति च योज्यम् ।

पुराणे पञ्चसौगन्धिकोपेतताम्बूलस्य—

ताम्बूलञ्चापि ये दद्युः पञ्चसौगन्धिकान्वितम् ।
स याति परमं धाम धन्यं त्रिपुरविद्विषः ॥७०८॥

अद्य परमधन्यत्रिपुरारिधामप्राप्तिकामनया इदं कर्पूरपूगकक्कोलजाती-फललवङ्गवृन्त[2]मयपञ्चसौगन्धिकान्वितताम्बूलं भगवते शिवाय तुभ्यमहन्ददे ।

कोललताकस्तूरिकोत्पलान्वितजातीफलदाने—

जातीफलं सकक्कोलं लताकस्तूरिकोत्पलम् ।
यान्येतानि सुगन्धीनि फलानि विनिवेदयेत् ॥७०९॥

फले फले महाभोगैर्वर्षलक्षत्रयन्नरः ।
कामिकेन विमानेन क्रीडते स शिवालये ॥७१०॥

अद्य प्रतिफलं वर्षलक्षत्रयावच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमहाभोगकामिक-विमानकरणकक्रीडनकामनया एतानि कक्कोललताकस्तूरिकोत्पलान्वितजातीफलानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, कंक्कोल ।
२ तत्रैव, चूर्णमय ।

कर्पूरदाने—

त्रुटिमात्रप्रदानेन कर्पूरस्य शिवे गुरौ ।
वर्षलक्षं महाभोगैः शिवलोके महीयते ॥७११॥

अद्य लक्षवर्षावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणक बहुमहाभोगमहितत्वकामनया इदं कर्पूरं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पूगताम्बूलपत्राधारदाने—

पूगताम्बूलपत्राणामाधारं यो निवेदयेत् ।
वर्षकोटयष्टकं भोगैः शिवलोके महीयते ॥७१२॥

अद्य वर्षकोट्यष्टतयावच्छिन्नशिवलोकाधिकरणकवहुमहाभोगमहितत्वकामोऽमुं पूगताम्बूपलत्राणामाधारं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

चूर्णाधारश्रेष्ठकांस्यपात्रनिवेदने—

यश्चूर्णाधारसत्पात्रं कांस्याढ्यं विनिवेदयेत् ।
मोदते स शिवलोके वर्षकोटीश्चतुर्द्दश ॥७१३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकचतुर्द्दशकोट्यवच्छिन्नहर्षकाम इदं चूर्णाधारसत्पात्रं भगवतो शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

मृत्काष्ठवस्त्रखण्डानां शिवाश्रमाधिकरणकनिवेदने—

मृत्काष्ठवस्त्रखण्डानि यः प्रदद्याच्छिवाश्रमे ।
प्राप्नुयाद्विपुलान् भोगान् दिव्यान् शिवपुरे नरः ॥७१४॥

अद्य शिवपुराधिकरणकदिव्यविपुलभोगप्राप्तिकामनया एतानि मृत्काष्ठवस्त्रखण्डानि भगवतः शिवस्याश्रमे मया निवेदितानि ।

मृत्कुम्भपीठकानां दाने—

मृत्कुम्भपीठकान्दद्याद् भोगान् शिवपुरे लभेत् ॥७१५॥

अद्य शिवपुराधिकरणकदिव्यबहुभोगप्राप्तिकामनया एतानि मृत्कुम्भपीठकानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

पुष्पधूपगन्धदधिक्षीरघृताम्भसामाधारपात्रदाने—

य: पुष्पधूपगन्धानां दधिक्षीरघृताम्भसाम् ।
दद्यादाधारपात्राणि शिवलोकं स गच्छति ॥७१६॥

अद्य शिवलोकगमनकामनया एतानि गन्धपुष्पधूपदधिक्षीरघृताम्भसामाधार-पात्राणि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

वंशतालादिसम्भवपुष्पाधारकरण्डकदाने—

वंशतालादिसम्भूतपुष्पाधारकरण्डकम् ।
एवमादीनि दत्त्वा तु शिवलोके महीयते ॥७१६॥

अद्य शिवलोकमहितत्वकाम इदं वंशतालाद्यन्यतमनिर्मितपुष्पाधारकरण्डकं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

तोयाधारपिधानदाने—

तोयाधारपिधानानि मृद्वस्त्रतरुजानि च ।
वंशालाबूसमुत्थानि दत्त्वाप्नोति शिवं पुरम् ॥७१८॥

अद्य शिवपुरप्राप्तिकामनया इदं मृन्निर्मितं पात्रं शिवालये तोयाधारपिधानार्थं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं वस्त्रतरुजावावपि फलम् ।

अथ शिवसंप्रदानकदानानि

शिवपुराणे हेममात्रस्य—

यो मे प्रयच्छते देवि त्रुटिमात्रन्तु काञ्चनम् ।
तस्मै हैमवते शृङ्गे गृहं बालार्कसन्निभम् ॥
तुष्टो देवि प्रयच्छामि सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥७१९॥

त्रुटिस्त्रसरेणुः । तु शब्दोऽप्यर्थः ।

अद्य हिमवच्छृङ्गाधिकरणकबालार्कसन्निभशिवप्रसादहेतुकगृहप्राप्तिकामनया इदं हेम वह्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

भविष्यपुराणे हिरण्यदानस्य—

यो मे गावो हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
तस्य कामदुघां पृथ्वीं ददामि निरुपद्रवाम् ॥७२० ।

अद्य कामदुघनिरुपद्रवपृथ्वीप्राप्तिकामनया इदं हिरण्यमग्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

हिरण्यदानस्य—

यो मे गान्तु हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
लोकान्ददाम्यहं तस्मै सर्वकामसमन्वितान् ॥७२१॥

अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकप्राप्तिकाम इदं हिरण्यमग्निदैवतं शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

भविष्ये हेमदानस्य—

त्रुटिमात्रन्तु यो हेम दद्याल्लिङ्गस्य मूर्द्धनि ।
इन्द्रस्यार्द्धासने तावद्यावदिन्द्राश्चतुर्द्दश ॥७२२॥

अद्य चतुर्द्दशेन्द्रसमयावच्छिन्नेन्द्रासनोपवेशनकामनया इदं हेम[1] वह्निदैवतं भगवते शिवाय लिङ्गमूर्द्ध्नि मया दत्तम् ।

लिङ्गपुराणे समौक्तिकहेमदानस्य—

त्रुटिमात्रन्तु यो दद्याद्धेम लिङ्गे समौक्तिकम् ।
इन्द्रस्यार्द्धासने तावद्यावदिन्द्राश्चतुर्द्दश ॥७२३॥

अद्य चतुर्द्दशेन्द्रसमयावच्छिन्नेन्द्रासनोपवेशनकामनया इदं हेम समौक्तिकं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय लिङ्गे तुभ्यं मया दत्तम् ।

हेममुकुटादिदानस्य—

एवमेवानुसारेण फलं ज्ञेयं समासतः ।
सर्वेषामेव हैमानां मुकुटादीनाञ्च सर्वशः ॥७२४॥

अद्य चतुर्द्दशेन्द्रसमयावच्छिन्नेन्द्रार्द्धासनोपवेशनकामनया इदं हेममुकुटं वह्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

एवं हेमाभरणान्तरेऽपि ।

शक्तितः फलभूमापेक्षया वा व्यवस्था ।

---

१ ने० पा०, विष्णुदेवता ।

पुराणे केयूरकटकदाने—

केयूरकटकदानेनाधिपत्यं महेच्छताम्[1] ।
प्राप्नुवन्ति नरा लोके शिवभक्तिपरायणाः ॥७२५॥

अद्य लोकाधिपत्यमहेच्छत्वप्राप्तिकामनया इमे केयूरकटके वह्निदैवते ते शिवाय तुभ्यं मया दत्ते ।

दानस्य—

सुवर्णदानं यो दद्याद् गाणपत्यं ददाम्यहम्[2] ॥७२६॥

अद्य गाणपत्यप्राप्तिकामनया इमं सुवर्णमग्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं

पलदानस्य –

हेम्नां कोटिं प्रदद्याद्यो ब्राह्मणे वेदपारगे ।
पलानां तच्छिवे दत्वा पलेनैकेन चाप्नुयात् ॥७२७॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकसुवर्णपलकोटिदानफलप्राप्तिकामनया इदं रिमितं सुवर्णं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

पुराणीयवहुवस्त्रदाने—

वासांसि सुपवित्राणि सारवन्ति मृदूनि च ।
धूपितानि शिवे दत्वा विकेशानि[3] नवानि च ॥७२८॥
यावत्तद्वस्त्रतन्तूनां परिमाणं विधीयते ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७२९॥

परिमाणं संख्या ।

अद्य एतद्वस्त्रत्रयतन्तुसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया नि सुपवित्राणि सारवन्ति मृदूनि विकेशानि सुधूपितानि नवानि वासांसि बृहस्पति-नि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

---

१ ने० पा०, सहेच्छताम् ।
२ तत्रैव, नमाम्यहम् ।
३ तत्रैव, विकशानि ।

भविष्ये यज्ञोपवीतदानस्य—

त्रिवृच्छुल्कं सुपीतं वा पट्टसूत्रादिनिर्मितम् ।
दत्वोपवीतं रुद्राय भवेद्व दान्तगः सुधी:[1] ॥७३०॥

अद्य वेदपारगत्वसुधीत्व[2]प्राप्तिकामनया इदं त्रिवृत्तं श्वेतं पीतं वा पट्टसूत्रादिनिर्म्मितमुपवीतं प्रजापतिदैवतं भगवते तुभ्यं मया दत्तम् ।

भविष्ये दर्प्पणदानस्य—

शिवस्य पुरतो दत्वा दर्प्पणञ्च सुनिर्म्मितम् ।
पर्य्यन्तशोभितं कृत्वा श्वेतैर्म्माल्यैः सचन्दनैः ॥७३१॥
चन्द्रांशुनिर्म्मलः श्रीमान् सुभगः कामरूपधृक् ।
कल्पायुतसहस्रन्तु शिवलोके महीयते ॥७३२॥

अद्य श्रीमत्त्व[3]चन्द्रांशुनिर्म्मलत्वसुभगत्वैच्छिकरूपधारित्वकल्पायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एष सुनिर्म्मलः पर्य्यन्तानुपक्तचन्दनः श्वेतमाल्योपशोभितो दर्प्पणो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

अयन्तु शिवपुरतो देयः ।

मायूरव्यजनदाने—

मायूरव्यजनं दत्वा शिवायातीवशोभनम् ।
वर्षकोटिशतं दिव्यं रुद्रलोके महीयते ॥ ३३॥

अद्य दिव्यवर्ष (कोटि) शतावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इदं मायूरव्यजनमतिशोभनं वायुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवधर्म्मे तालवृन्तदाने—

भक्त्या निवेद्य रुद्राय तालवृन्तं सुशोभनम् ।
दशवर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७३४॥

तालवृन्तनं व्यजनम् ।

अद्य दशवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इदं तालवृन्तं सुशोभनं वायुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, सुखी ।
२ तत्रैव, सुखीत्व ।
३ तत्रैव, सुभगत्व ।

ष्यपुराणे चामरदानस्य—

चामरं यः शिवे दद्यान्मणिदण्डविभूषितम् ।
हेमरूप्यादिदण्डं वा तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७३५॥
चामरासक्तहस्ताग्रदिव्यस्त्रीपरिवारितः ।
महाभोगविमानस्थश्चिरं शिवपुरे वसेत् ॥७३६॥

आदिपदेन ताम्रकांस्यरैत्यादीनां[1] ग्रहणम् ।

अद्य चामरासक्तहस्ताग्रदिव्यस्त्रीपरिवारितमहाभोगविमानस्थात्मीयचिर-यशिवपुरवासकामनया इदं चामरं मणिदण्डविभूषितं हेमादिदण्डविभूषितं वा दैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

वरहस्ये दीपिकादिदानस्य—

दीपिका धूपदहनं घण्टापात्र्यथ यष्टिका ।
गड्डूकान्यथ कुम्भांश्च ब्रह्मन् वंशमयानि च ॥
सप्तलोकेश्वरास्ते स्युर्ये प्रयच्छन्ति शङ्करे ॥७३७॥

अद्य सप्तलोकेश्वरत्वभवनकामनया एतानि दीपिकाधूपदहनघण्टापात्री-ष्टिकागड्डूकबहुकुम्भबहुवंशमयपात्राणि विष्णुदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया त्तानि।

वधर्मे शङ्खद्वयदानस्य—

महन्महास्वनं दत्वा शङ्खयुग्मं शिवालये ।
युगकोटिशतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥७३८॥

अद्य साग्रयुगकोटिशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया शिवालये नार्थं महन्महास्वनं शङ्खयुग्मं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

रीमृदङ्गादिदानस्य—

भेरीमृदङ्गमुरजतिमिलापटहानि च ।
वंशकांस्यादिवादित्रं यः शिवाय निवेदयेत् ॥७३९॥
स विमानैर्महाभोगैर्वंशवीणाकृतस्वनैः ।
युगायुतशतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥७४०॥

१. रौप्यादिना ।

अद्य वंशवीणाकृतस्वनमहाभोगविधानकरणकसाग्रयुगायुतशतावच्छिन्नशिव-लोकमहितत्वकामनया इदं भेरीमृदङ्गादिवादित्रं गन्धर्वदैवतं शिवालये वादनार्थं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्त्रीसङ्गीतकदाने—

स्त्रीसङ्गीतकदानेन सनाट्येन विशेषतः ।
यथेष्टमैश्वरे लोके मोदते कालमक्षयम् ॥७४१॥

अद्य यथेष्टाक्षयकालिकेश्वरलोकमोदनकामनया इदं स्त्रीसङ्गीतकं सनाट्यं गन्धर्वदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

नाट्याशक्तौ सङ्गीतकमात्रदानेप्येतदेव फलम् ।

दासीदासान्यतरदाने --

सुविनीतां स्त्रियं दासीं भृत्यं यो वा निवेदयेत् ।
नरमेधस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं लभेत् ॥७४२॥

अद्य नरमेधयज्ञफलाष्टगुणफलप्राप्तिकामनया इयं दासी सुविनीता विष्णु-दैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

विनीतदासदानेप्येतदेव फलम् ।

उभयतोमुखीदाने—

दत्वोभयमुखीं गान्तु शिवायातीव शोभनाम् ।
सप्तद्वीपां क्षितिं दत्वा यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥७४३॥

अद्य सप्तद्वीपावच्छिन्नपृथ्वीदानफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं प्रसूयमानो-भयतोमुखीगौरतिशोभनारुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

पयस्विन्याः कपिलायाः दाने—

स्नानादिकार्य्यमुद्दिश्य स्वरूपाञ्च पयस्विनीम् ।
कुलीनां कपिलां दत्वा दत्तं भवति गोशतम् ॥६४४॥

कुलीनां जीवापत्यपयस्विगोपरम्परासम्भवाम् ।

अद्य गोशतदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया शिवक्षीरस्नानाद्यर्थमियं स्वरूपा कपिला पयस्विनी कुलीना गौरुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

तयदाने—

यो मे गां वा[1] हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
तस्य कामदुघां पृथ्वीं ददामि निरुपद्रवाम्[2] ॥७४५॥

अद्य[3] निरुपद्रवकामदुधपृथ्वीप्राप्तिकामनया एता गावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

गोदानस्य—

यो मे गान्तु हिरण्यं वा दद्यादविमनाः प्रिये ।
लोकान्ददाम्यहं तस्मै सर्वकामसमन्वितान् ॥७४६॥

अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकप्राप्तिकामनया इमां गां रुद्रदैवतां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

वृषपयस्वितरुणगवीदाने—

यो गाँ पयस्विनीं दद्यात्तरुणां वृषसंयुताम् ।
शिवाय तेन दत्तं स्याज्जगत्सर्वं चराचरम् ॥७४७॥

अद्य चराचरसर्वजगद्दानफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं पयस्विनी तरुणी वृषसंयुता गो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

वृषभदशगवीदाने—

दशगावः सवृषभावृषभैकादशी स्मृता ।
शिवाय विनिवेद्यैतां विशुद्धेनान्तरात्मना ॥७४८॥
रुद्रैकादशतुल्यात्मा बलभोगादिभिर्गुणैः ।
शिवादिसर्वलोकेषु यथेष्टं मोदते वशी ॥७४९॥
कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोट्ययुतानि च ।
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानशेषकुलजैः सह ॥७५०॥
तदन्ते ज्ञानमासाद्य प्रसादात् परमेष्ठिनः ।
विमुच्य मोहकलिलं स्वात्मन्येवावतिष्ठते ॥७५१॥

स्वात्मन्येवावतिष्ठते इति भुक्तो भवतीत्यर्थः ।

---

१ गाश्च (ई हस्तलेखमे देल अछि)।
२ ने० पा०, लोकान् ददाम्यहं तस्मै सर्वकामसमन्वितान् ।
३ ने० पा०, अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकप्राप्तिकामनया इमां गां रुद्र ।

अद्य रुद्रैकादशवलभोगादिबहुगुणतुल्यबलभोगादिबहुगुणवत्त्वशिवादिगुणत्व शिवादिसकललोकाधिकरणकयथेष्टहर्षबहुशिवत्वकल्पकोटिसहस्रकल्पकोट्ययुतावच्छिन्ना शेषबहुफल जसहितात्मविपुलभोगभुक्तिलदुत्तरपरमेष्ठिप्रसादलब्धज्ञानहेतुकमोहकलिलपरित्यागपूर्वकात्मस्वरूपावस्थानकामनया एताः सवृषभा दशगावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

सवृषभगोशतदाने—

सवृषं गोशतं दद्याच्छिवायातीव शोभनम् ।
त्रिसप्तकुलजैः सार्द्धं शृणु यत्फलमाप्नुयात् ॥७५२॥
सूर्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैः सार्वकामिकैः[1] ।
महायानैरसंख्यातैरमरासुरपूजितैः ॥७५३॥
शतरुद्रबलोपेतो वीरभद्र इवापरः ।
गत्वा शिवपुरं दिव्यमशेषाधिपतिर्भवेत् ॥७५४॥
भुक्त्वा तु विपुलान् भोगान् प्रलये सर्वदेहिनाम् ।
मोहकञ्चुकमुत्सृज्य ज्ञानं कैवल्यमाप्नुयात् ॥७५५॥
सर्वज्ञः परमः शुद्धः स्वात्मन्ये[2]वव्यवस्थितः ।
सर्वज्ञः परिपूर्णश्च शिववत्पतिरव्ययः ॥७५६॥

अद्य सूर्यकोटिसमप्रभसर्वकामसमन्वित[3]सुरासुरपूजितासंख्येयविमानकरणकत्रिसप्तकुलसहितशतरुद्रबलोपेतवीरभद्रतुल्यात्मश्रीमच्छिवपुरगमनाशेषतत्पुरमर्त्याधिपत्यतत्रत्यविपुलभोगभुक्तितदुत्तरसर्वदेहिप्रबलयानान्तरमोहकञ्चुकपरित्यागपूर्वकज्ञानकैवल्यावाप्तिसर्वज्ञपरमशुद्धत्वात्मव्यवस्थितिसर्वत्वपरिपूर्णास्वत्वशिवतुल्यैश्वर्याव्ययत्वकामनया एताः शतं गावो रुद्रदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ॥

वृषचदाने—

वृषभं परिपूर्णाङ्गमुदारञ्च शशिप्रभम् ।
गोपतिं नीलवर्णं वा यथेष्टं विनिवेदयेत् ॥७५७॥
यावन्ति देहरोमाणि सप्रसूतिकुलेषु वै ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७५८॥

---

१ ने० पा०, सर्वकामदैः
२ तत्रैव, शुद्धात्मनि ।
३ तत्रैव, सर्वकामदैः

गोपतिं तरुणं यथेष्टं वर्णान्तरयुक्तमपि ।

अद्य सप्रसूत्येतत्कुलसम्बद्धरोमसहितैतद्देहरोमसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एष वृषभः सुपरिपूर्णाङ्गः उदारः शशिप्रभो गोपतिरन्यवर्णोवा रुद्रदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

श्वेतनीलान्यतरवृषभदाने—

शिवाय वृषभं दत्वा श्वेतं नीलमथापि वा ।
रथेन वृषयुक्तेन न च्यवेतैश्वरात् पदात् ॥७५९॥

अद्य वृषभयुक्तरथकरणकेश्वरपदाप्रच्यवत्वकामनया एष श्वेतवृषभो नीलवृषभो रुद्रदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

स्कन्दपुराणे भूमिदानस्य—

गोचर्म्मद्वयमात्रं वा यो मे दद्याद्वसुन्धराम् ।
समे पूरं समासाद्य गणेशैः सह मोदते ॥७६०॥

अद्य शिवपुरप्राप्तिपूर्वकबहुगणेशसहहर्षप्राप्तिकामनया गोचर्म्मद्वयपरिमिता भूमिः प्रियदत्ता विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

ग्रामदानस्य—

सर्वसस्यफलोपेतं सर्वबाधाविवर्जितम् ।
ग्रामं शिवाय यो दद्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७६१॥
सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
सर्वदानेषु यत्पुण्यं ग्रामदानेन तत्फलम् ॥७६२॥

अद्य सर्वतीर्थसर्वयज्ञसर्वदानफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽयं ग्रामः सर्वसस्यफलोपेतः सर्वबाधाविवर्ज्जितो विष्णुदैवतः प्रियदत्तो भगवते शिवाय तुभ्यं मयादत्तः ।

ग्रामदानस्य —

सूर्य्यकोटिप्रतीकाशैर्दिव्यस्त्रीकोटिसंयुतैः ।
संयुक्तः कोटिशोऽनेकैः सर्वकामसमन्वितैः ॥७६३॥
विमानैर्ग्रामदानेन त्रिसप्तकुलसंयुतैः ।
यथेष्टमैश्वरे लोके क्रीडते कालमक्षयम् ॥७६४॥

अद्य सूर्य्यकोटिप्रतीकाशदिव्यस्त्रीकोटियुतसर्वकामसमन्वितबहुकोटिसंख्याकविमानकरणकाक्षयकालिकैकविंशतिकुलयुतात्मीयेश्वरलोकक्रीडनकामनयाऽयं ग्रामः प्रियदत्तो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

नगरदानस्य—

पुण्यं नगरदानस्य ग्रामदानशताधिकम् ।
देशदानस्य चानन्तं नशवयं तत्प्रकीर्त्तितुम् ॥७६५॥

अद्य ग्रामदानशतफलाधिकफलप्राप्तिकामनया इदं नगरं प्रियदत्त विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्य मया दत्तम् ।

देशदानस्य—

अद्य परकीर्त्तिनाशक्यानन्तफल प्राप्तिकामनयाऽयं देशः प्रियदत्तो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

खट्वादानस्य—

पञ्चतुलीसमायुक्तां मृद्वी खट्वां स्वलंकृताम् ।
सर्वोपकरणोपेतां शिवशय्यां प्रकल्पयेत् ॥७६६॥
सम्पूज्यगन्धपुष्पाद्यैर्वस्त्रालङ्कारचामरैः ।
भक्ष्यभोज्यैरशेषैस्तु तथा शय्यां निवेदयेत ॥७६७॥
तन्तूनां तूलवसात्रणां परिसंख्या तु यावती ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥७६८॥
क्रमादागत्य लोकेऽस्मिन् सिंहासनपतिर्भवेत् ॥७६९॥

अद्यैतत्खट्वास्थतूलीतूलवस्त्रतन्तुसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्व पूर्वकैहलौकिकसिंहासनपतित्वभवनकामनया इयं पञ्चतूलीसमायुक्ता मृद्वी स्वलङ्कृता सर्वोपकरणोपेता खट्वा विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

इयं च खट्वा गन्धपुष्पवस्त्रालङ्कारचामराद्यैर्भक्ष्यभोज्यैश्च भगवन्तं शिवं सम्पूज्य दातव्या ।

भविष्यपुराणे शिवालये घण्टाबन्धनस्य—

शृङ्खलादामसयुक्तां महाघण्टां महास्वनाम् ।
कांस्यलौहमयीं वापि निबध्नीयाच्छिवालये ॥७७०॥
घण्टाकर्णोगणः श्रीमान् शिवस्यातीव वल्लभः ।
तस्य तुल्यबलो भूत्वा शिवलोके महीयते ॥७७१॥

'वापि' शब्दस्वरसाद्द्रव्यान्तरमयीमपि ।

अद्य श्रीमद् घण्टाकर्णनामकातिवल्लभशिवगणसमानबलत्वभवनपूर्वकशिवलोकमहितत्वकामनया इमां शृङ्खलादामसंयुक्तां महास्वनां कांस्यमयीं महाघण्टां भगवतः शिवस्यायतने बध्नामि ।

घण्टाशङ्खयोरन्यतरदानस्य—

यो घण्टामथवा शंखं प्रदद्याच्छङ्कराय वै[१] ।
सोऽक्षयं समवाप्नोति स्वर्गलोकं न संशयः ॥७७२॥

अद्याक्षयस्वर्गप्राप्तिकामनया इयं घण्टा विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

शंखदानेप्येतदेवफलम् ।

स्कन्दपुराणेछत्रदानस्य—

छत्रं पताकानिचयं शोभां कृत्वा ददाति यः ।
सोपि दीप्यते भूयो रविवत्तेजसा दिवि ॥७७३॥

अद्य स्वर्गाधिकरणकरविदीप्तिकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

बहुपताकायामप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्मे वितानकदाने—

वितानं सितपद्माभमंके कमलभूषितम् ।
विचित्रमेकवर्णं वा नववस्त्रोपकल्पितम् ॥७७४॥
किंकिणीरवकोपेतं कन्दुकैश्चोपशोभितम् ।
लम्बकैः सूत्रदामैश्च घण्टाचामरभूषितम ॥७७५॥
शिवस्योपरि यो दद्यात् पुरतोवापि कल्पयेत् ।
रुद्रवत्सर्वलोकेषु युगकोटि स मोदते ॥७७६॥

मध्ये कमलभूषितं मध्ये वस्त्रकृतपद्मसंस्थानम् ।

अद्य रुद्रहर्षवत्सर्वलोकाधिकरणकयुगकोट्यवच्छिन्नहर्षकाम इदं सितपद्माभं मध्ये कमलभूषितं विचित्रमेकवर्णं वा नववस्त्रोपकल्पितं किंकिणीरवकोपेतं लम्बककन्दुकबहुसूत्रदानघण्टाचामरोपशोभितं वितानकं बृहस्पतिदैवतं भगवतः शिवस्योपरि ददे ।

[१] ने० पा०, प्रदद्याच्छङ्करालये ।

शिवस्य[१] पुरतः करणेऽप्येतदेव फलम् ।

शिवधर्म्मे महाध्वजदानस्य—

श्वेतं महाध्वजं दिव्यं दत्वा वा पञ्चरङ्गकम् ।
किंकिणीरवकोपेतं मायूरछत्रभूषितम् ॥७७७॥
स श्वेतेन विमानेन सर्वदेवोपरि स्थितः ।
मन्वन्तरसहस्रैकं मोदते दिवि रुद्रवत् ॥७७८॥

अद्य श्वेतविमानकरणकसर्वदेवोपरिस्थितात्मीयमन्वन्तरसहस्रैकावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकरुद्रहुर्षतुल्यहर्षप्राप्तिकामनयाऽयं किंकिणीरवकोपेतो मयूरछत्रोपशोभितः श्वेतः पञ्चराङ्गकोवा महाध्वजो विष्णुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

शिवधर्म्मे मौक्तिकमण्डपदानस्य—

शिवस्योपरि यो दद्यात् सर्वरत्नोपशोभितम ।
मण्डपं मौक्तिकं श्रीमान् तस्य पुण्यफलं शृणु ॥७७९॥
कोटिकोटिविमानैश्च सर्वकामसमन्वितः ।
आभूतसंवयात्वद्वसेच्छिवपुरे सुखी ॥७८०॥

मौक्तिकं मुक्तामयम् ।

अद्य कोटिकोटिविमानकरणकसर्वकामसमन्वितात्मीययावदाहूतसंप्लवसुखित्वशिवपुरवासकामनयाऽमुं सर्वरत्नोपेतं मौक्तिकमण्डपं वरुणदैवतं भगवतः शिवस्योपर्य्यहं दास्ये ।

वितानदाने——

वितानकन्तु यो दद्याच्छिवे पद्मोपशोभितम् ।
स वै युगसहस्रन्तु मोदते रुद्रवत्प्रिये ॥७८१॥

अद्य युगसहस्रावच्छिन्नरुद्रहर्षतुल्यहर्षकामनया इदं पद्मोपशोभितं वितानकं बृहस्पतिदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, शिव ।

शिवधर्मे वस्त्रदाने——

वस्त्रं ध्वजं वितानञ्च यो दद्याल्लिङ्गसन्निधौ ।
लभते परमैश्वर्य्यं जायते विमले कुले ॥७८२॥

अद्य परमैश्वर्य्यविमलकुलजन्मप्राप्तिकामनया इदं वस्त्रं बृहस्पतिदैवतं सन्निधौ भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

वितानकान्यतरदानेत्येतदेव फलम् ।

ने—

वस्त्रस्य तु प्रदानेन अग्निष्टोमफलं भवेत् ॥७८३॥

अद्याग्निष्टोमफलसमफलप्राप्तिकामनया इदं वस्त्रं बृहस्पतिदैवतं भगवते य तुभ्यं मया दत्तम् ।

दाने—

धान्यानि यस्तु मे दद्याद्धिरण्यं गामथापि वा ।
बहुलोकमवाप्नोति सर्वकामसमन्वितम् ॥७८४॥

अद्य सर्वकामसमन्वितबहुलोकावाप्तिकामनया एतानि धान्यानि प्रजापति-ति भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

गोहिरण्यदानयोरपीदमेव फलम् ।

वृषभखरमेषाणामन्यतमदाने—

अजां वा वृषभं वापि खरं मेषं शिवाय च ।
दत्वा प्रमोदते तावद्यावद्रोमाब्दसंख्यकम् ॥७८५॥

अद्य तदजादेहस्थलोमसमसंख्यवत्सरावच्छिन्नहर्षकामनया इयमजा विष्णु-ता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

वृषभखरमेषाणामन्यतमदानेपीदमेव फलम् ।

ताम्रपात्रताम्रकुम्भकटाहादीनामन्यतमदाने—

ताम्रपात्रताम्रकुम्भकटाहाद्ये निवेदने ।
पले पले वर्षकोटिं मोदते स शिवे पुरे ॥७८६॥

अद्यै तत्ताम्रपात्रीयताम्रपलसमसंख्यवर्षकोट्यवच्छिन्नशिवपुराधिकरणकमोदन-कामनया एतत्ताम्रपात्रं प्रजापतिदैवतम् भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ताम्रकुम्भादीनामन्यतमदानेप्येतदेव फलम् ।

बहुरत्नदाने—

बहुरत्नानि दिव्यानि यो ददाति शिवाय वै ।
पुनः पुनश्च यो दद्याद्रत्नाभरणभूषणम् ।
गाणपत्यमवाप्नोति अक्षयं परमं ध्रुवम् ॥७८७॥

अद्यात्मीयपरमगाणपत्यप्राप्तिकामनया एतानि रत्नानि वरुणदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

इन्द्रनीलवैदूर्य्ययोरन्यतरदाने—

इन्द्रनीलप्रदानेन सद्वैदूर्य्यप्रदानतः ।
मोदते विविधैर्भोगैः कल्पकोटिं शिवे पुरे ॥७८८॥

अद्य शिवपुराधिरणकविविधबहुभोगहेतुककल्पकोट्यवच्छिन्नहर्षकामनया इदमिन्द्रमीलं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सद्वैदूर्य्यप्रदानेप्येतदेव फलम् ।

पद्मरागदाने——

मसूरमात्रमपि यः पद्मरागं सुशोभनम् ।
निवेदयति शर्वाय मोदते कालमक्षयम् ॥७८९॥

अद्याक्षयकालिकहर्षकामनया इदं पद्मरागरत्नं सुशोभनं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

रत्नदाने——

कीटपक्षं महाशुद्धं निवेद्य यवमात्रकम् ।
शिवाय स पुरे शैवे मोदते कालमक्षयम् ॥७९०॥

अद्य शिवपुराधिकरणकाक्षयकालिकहर्षकामनया इदं कीटपक्षरत्नं महाशुद्धं दैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

ने——

गोधूममात्रंमणि यो दद्याद्वज्रं शिवाय वै ।
आभूतसंप्लवं यावच्छिवलोके वसेत् सुखी ॥७९१॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकप्रलयकालावच्छिन्नवाससुखित्वकामनया इदं शुद्धं गोधूममात्रं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

बद्धक्षुद्रबहुरत्नदाने--

क्षुद्ररत्नानि यो दद्याद्धेमबद्धानि शम्भवे ।
मोदते स शिवलोके कल्पकोट्ययुतं नरः ॥७९२॥

अद्य शिवलोकाधिकरणककल्पकोट्ययुतावच्छिन्नहर्षकामनया एतानि नानि हेमबद्धानि वरुणदैवतानि भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

दाने—

रत्नानि चैव यो दद्याद्ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
स्त्री वा शूद्रो वा महत्सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥७९३॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकमहासौख्यप्राप्तिकामनया एतानि रत्नानि वरुण-न भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तानि ।

लीदाने—

रत्नावलीञ्च यो दद्याद्ब्राह्मणः क्षत्रियोपि विट् ।
स्त्री शूद्रो महत्सौख्यं मम लोके समश्नुते ॥७९४॥

अद्य शिवलोकाधिकरणकमहासौख्यप्राप्तिकामनया इयं रत्नावली वरुण-भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

रत्नदाने यथोत्कर्षं फलोत्कर्षः ।

यदाह—

यथा यथा महारत्नं शोभनञ्च यथा यथा ।
तथा तथा महापुण्यं ज्ञेयं तच्छिवदानतः ॥७९५॥

सुवर्णरजतान्यतरमयरचितमहारत्नमहीदाने—

हेम्ना रूप्येण वा कृत्वा महारत्नचितां महीम् ।
निवेदयित्वा शर्वाय शिवतुल्यः प्रजायते ॥७९६॥

अद्य शिवतुल्यत्वभवनकामनया इयं सुवर्णमयी रचितमहारत्नमही विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

रजतमयरचितमहारत्नमहीदानेप्येतदेवफलम् ।

वज्रेन्द्रनीलवैदूर्य्यपद्मरागं समौक्तिकम् ।
कीटपक्षं सुवर्णञ्च महारत्नानि सप्त वै[1] ॥७९७॥

मौक्तिकदाने—

निवेद्य मौक्तिकन्त्वेकं यत्किञ्चिल्लवमात्रकम् ।
भोगैः शिवपुरे दिव्यैः कल्पकोटिं प्रमोदते ॥७९८॥

अद्य शिवपुराधिकरणककल्पकोट्यवच्छिन्नदिव्यवहुभोगहेतुकहर्षकामनया इदं मौक्तिकं वरुणदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवधर्म्मे छत्रदानस्य—

शरच्चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितम् ।
मणिदण्डमयं छत्रं दद्याद्वै काञ्चनान्वितम् ॥७९९॥

छत्रेण सविचित्रेण धार्य्यमात्रेन शोभितः ।
त्रिमानशतसम्भोगैश्चिरं शिवपुरे वसेत् ॥८००॥

अथवा राज्यमाकाङ्क्षेद्देही कालस्य पर्य्ययात् ।
भुङ्क्ते समुद्रपर्य्यन्तामेकच्छत्रां वसुन्धराम् ॥८०१॥

अथवेति फलान्तरद्योतनार्थम् ।

अद्य विचित्रछत्रशोभितत्व[2] विमानशतभोगहेतुक शिवपुराधिकरणकचिरवासतदुत्तरैकछत्रवसुन्धराधिपत्यप्राप्तिकामनया इदं चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितं मणिदण्डमयं सकाञ्चनं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

---

१ ने० पा०, सम्भवै ।
२ तत्रैव, शोभितात्म ।

अथवा

अद्य विचित्रछत्रशोभितास्व[1]विमानशतभोगहेतुकशिवपुराधिकरणक-निवासकामनया इदं शरच्चन्द्रांशुविमलं मुक्तादामोपशोभितं मणिदण्डमयं सकाञ्चनं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

स्कन्दपुराणीयछत्रदानस्य—

छत्रं दद्याच्च यः सोपि[2] दीप्यते तेजसा दिवि ॥८०२॥

अद्य स्वर्गाधिकरणक तेजो(देह)हेतुकदीप्तिमत्वकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्य मया दत्तम् ।

शिवपुराणीयछत्रदानस्य—

यस्तु छत्रं प्रयच्छेत मम तेजोधिपोपमम् ।
तेजोमण्डलसंङ्काशो दिवि व्रजति शुक्रवत् ॥८०३॥

अद्य स्वर्गाधिकरणक तेजोमण्डलवत्प्रकाशमानात्मीयशूक्रतुल्यगतिमत्वप्राप्ति-कामनया इदं सितछत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

तत्रैव छत्रदानस्य—

छत्रं दद्यात्तु यः कश्चिच्छिवोपरि च धार्य्यते ।
स वै भृत्यसहस्रस्य आधिपत्यं करिष्यते ॥८०४॥

अद्य भृत्यसहस्राधिपत्यभवनकामनया इदं छत्रमुत्तानाङ्गिरोदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

उपरिधारणमत्राङ्गम् ।

---

१ नो० पा०, शोभितात्म ।
२ तत्रैव, कोऽपि ।

शिवालये ध्वजमालाधारणे—

ध्वजमालाकुलं कुर्य्याद्यश्च प्रान्ते[1] शिवालये ।
महाध्वजाष्टक वापि दिग्विदिक्षु दिवेदयेत् ॥८०५॥

सविमानसहस्रेण दिव्यध्वजविशोभिना ।
कल्पायुतशतं साग्रं मोदते दिवि रुद्रवत् ॥८०६॥

अद्य दिव्यध्वजशोभिविमानसहस्रकरणकसाग्रकल्पायुतशतावच्छिन्नरुद्रहर्ष-प्राप्तिकामः शिवालयप्रान्ते ध्वजमालानिवेशनमहं कुर्वीय ।

महाध्वजाष्टकदाने—

अद्य दिव्यध्वज्वजोपशोभिविमानसहस्रकरणकसाग्रकल्पायुतशतावच्छिन्न-रुद्रहर्षतुल्यहर्षकामनया इद महाध्वजाष्टकं वायुदैवतं भगवतः शिवस्यायतने दिग्वि-दिक्षु निवेदयिष्ये ।

शिवायतने वस्त्रकरणकशोभायाम्—

शर्वस्यायतने कुर्य्याद्वस्त्रशोभान्तु यो नरः ।
दुकूलपट्ववस्त्राद्यैर्वस्त्रैर्वा गैरिका[2]न्वितैः ॥८०७॥

वस्त्रादिपट्वतन्तूनां यावत्संख्या विधीयते ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥८०८॥

दुकूलपट्ववस्त्राद्यैरिति सर्वपट्ववस्त्रोपलक्षणम्; वस्त्रैर्वेति कार्प्पासिकैः; वर्णि-कान्वितैर्गैरिकादिवर्णान्वितैः ।

अद्यं तद्वस्त्रतन्तुसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया एभि-र्दुकूलपट्ववस्त्राद्यैर्भगवतः शिवस्यायतने शोभामहङ्करिष्ये ।

वर्णिकान्वितवहुवस्त्रभूषणेप्यायतनस्यैतदेवफलम् ।

शक्त्यपेक्षयाफलभूमापेक्षया वा व्यवस्था ।

१ ने० पा०, यश्च प्रातः ।
२ तत्रैव, वर्णिकान्वितैः ।

मेखलाकटिसूत्रदाने—

मेखलां कटिसूत्रं यो दद्याल्लिङ्गमूर्त्तिषु ।
चतुःसागरपर्य्यन्तं सक्ष्मायास्तु यतिर्भवेत् ॥८०९॥

अद्य चतुःसागरावच्छिन्न क्ष्मापतित्वभवनकामनया एतेमेखलाकटिसूत्रे विष्णुदैवते शिवाय लिङ्गे तुभ्यं मया दत्ते ।

श्वेतध्वजदाने—

ध्वजं ददाति यः कश्चित्सितवस्त्रं शिवालये ।
एकेन[1] परिवर्त्तेन गोसहस्रफलं लभेत् ॥८१०॥

अद्य गोसहस्रदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनयाऽयं श्वेतध्वजो वायुदैवतो भगवते शिवाय शिवालये तुभ्यं मया दत्तः ।

श्वेतमहाध्वजदाने—

श्वेतमहाध्वजं दत्वा शिवाय वृषचिह्नितम् ।
स याति परमं स्थानं यत्र देवः पिनाकधृक् ॥८११॥

अद्य पिनाकधराधिष्ठितपरमस्थानगमनकामनया एषवृगभचिह्नितो महाध्वजो वायुदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दतः ।

१ मे० पा०, एकेव ।

अथ पताकालक्षणम्

चतुरङ्गुलविस्तारा दीर्घहस्तद्वयापरा ।
पताका लोकपालानां दशानां परिकीर्त्तिता ॥८१२॥

पञ्चहस्तास्तु वै दण्डाः पताकार्थं प्रकीर्त्तिताः ।
हस्तद्वयप्रमाणन्तु वितानं स्नानवासने ॥८१३॥

पीतरक्तकृष्णनीलधूम्रपीतरजोऽरुणाः ।
दीर्घाहस्तद्वयमात्रा व्यायामाश्चतुरङ्गलाः ॥८१४॥

आसां दण्डाः पञ्चहस्ता मुनिभिः परिकीर्त्तिताः ।
देवेभ्यश्च ध्वजं दद्याद्वाहनैरुपशोभितम् ॥८१५॥

तरङ्गमेण सूर्य्यस्य हरस्य-वृषचिह्नितम् ।
विष्णवे गरुडाङ्कन्तु दुर्गायै सिंहचिह्नितम् ॥८१६॥

कार्य्यं ध्वजपताकाद्यमन्यथा न कथञ्चन ॥८१७॥

घण्टापुष्करशङ्खद्यैः शिवभक्तौ—

घण्टापुष्करशब्देन शङ्खाद्यैस्तु मनोहरैः ।
यः कुर्य्याच्छिवभक्तितु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८१८॥

रुद्रलोके वसित्वा तु पुनर्मर्त्त्यमुपागतः ।
राजस्कन्धेन यात्येष महाशब्देन पूजितः ॥८१९॥

एवं ददाति यः कश्चिच्छिवाय सुनुहायशाः ।
तस्य तच्चाक्षयं देवि जन्मान्तरशतेष्वपि ॥८२०॥

अद्य रुद्रलोकवासनान्तरमर्त्यलोकीयराजस्कन्ध करणकमहाशब्दपूजितगतिम-स्वाक्षयैतज्जातीयवाद्यशब्दलाभकामो घण्टापुष्करशङ्खादिमनोहुरस्वनैर्भगवतः शिव-स्याराधनमहङ्करिष्ये ।

अमीषांनिवेदनेप्येततेव फलम् ।

शिवधर्म्मेमृन्मयार्घपात्रदानस्य—

अर्घपात्रन्तु यो दद्यान्मृन्मयन्तु शिवे गुरौ ।
दिवः पातेनच ागत्य सोपि कोटिपतिर्भवेत् ॥८२१॥

अद्य स्वर्गभुक्त्यनन्तरकोटिपतित्वभवनकामनया इदं मृन्मयमर्घपात्रं विष्णुदैवतं शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

मयपात्रदानस्य—

रौप्यपात्रप्रदानेन यत्फलं वेदपारगे ।
तस्माच्छतगुणं पुण्यं शिवे मृत्पात्रदानतः ॥८२२॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकरौप्यपात्रशतदानफल समफलप्राप्तिकामनया मृन्मयपात्रं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताम् ।

म्रपात्रदानस्य—

हेमपात्रेण दत्तेन यत्फलं वेदपारगे ।
ताम्रपात्रप्रदानेन तस्माच्छतगुणं स्मृतम् ॥८२३॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकहेमपात्रशतदानफलसमफल प्राप्तिकामनया ताम्रपात्रमादित्यदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताम् ।

प्यपात्रदानस्य—

पलकोटिसुवर्णस्य यो दद्याद्वेदपारगे ।
शिवाय रौप्यपात्रेण तस्य पुण्यं ततोधिकम् ॥८२४॥

अद्य वेदपारगब्राह्मणसम्प्रदानकसुवर्णपलकोटिदानफलाधिकफलप्राप्तिकामनया रजतपात्रं चन्द्रदैवत भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताम् ।

पात्रदानस्य——

हेमपात्रन्तु यो दद्याच्छिवाय विधिपूर्वकम् ।
न शक्यं तत्फलं वक्तुं पुण्यानन्त्याद्विशेषतः ॥८२५॥

अद्य विशिष्याशक्याख्यानानन्तपुण्यफलप्राप्तिकामनया इदं हेमपत्रं वह्निदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

म्रकांस्यान्यतरभोजनाधारपात्रदानस्य—

यस्ताम्रकांस्ययोर्दद्याद्भोजनाधारमुत्तमम् ।
शिवाय शिवयोगिभ्यः कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥८२६॥

अद्य कल्पकोट्यवच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकवासकामनया इदं ताम्रमयभोजनाधारपात्रं कांस्यमयमाधारपापात्रं वा विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

शिवयगसिम्प्रदानकदानेप्येतदेव फलम्

शैवे अलंकृताश्वदाने—

योऽलंकृत्य शिवायाश्वमुत्तमं विनिवेदयेत् ।
सोऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं लभेत्[1] ॥८२७॥

अद्याश्वमेधयज्ञफलाष्टगुणफलप्राप्तिकामनयाऽयमुत्तमालंकृताश्वो यमदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

पर्वकालिकोत्तमालंकृतगजदाने—

निवेदयेत यो नागं भक्त्या भद्रमलंकृतम् ।
शिवाय पर्वदिवसे तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८२८॥

मत्तैरैरावतप्रख्यैर्गजैर्युक्तैः सुशोभनैः ।
क्रीडते सुमहायानैः शतसंख्यैरनेकधा ॥८२९॥

कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
रुद्रलोके ततश्चान्ते भवेदिन्द्रः सुराधिपः ॥८३०॥

चतुर्युगसहस्रान्ते स गां प्राप्य नराधिपः ।
भवेदिन्द्रसमः श्रीमान्रूपवीर्यसमन्वितः ॥८३१॥

अद्यामुकपर्वणि मत्तैरावतप्रख्यशोभनबहुगजयुक्तशतसंख्यकमहायानकरणक-रुद्रलोकाधिकरणककल्पकोटिसहस्रकल्पकोटिशतावच्छिन्नानेकधाक्रीडनोत्तरचतुर्युगसह-स्रावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकसुराधिपत्वभवनोत्तरश्रीमत्ववीर्यवत्वेन्द्रसमनराधिपतित्वभव-नकामोऽमुमुत्तमालंकृतगजं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

शैवामृते दोलादानस्य—

गजाश्वरथदोलादि शिवाय विनिवेदयेत् ।
तनदन्तफलं वक्तुं देवैरपि न शक्यते ॥८३२॥

अद्य बहुदेवाशक्यनिर्वचनानन्तफलप्राप्तिकामनया इयं दोला विष्णुदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

एवं गजाश्वादौ ।

---

१ मूले, भवेत् ।

भविष्यपुराणे—

सर्वेषामेव पात्राणां परं पात्रं महेश्वरः ।
पतन्तं त्रायते यस्मादतीवनरकार्णवात् ॥८३३॥

शिवमुद्दिश्य यद्दत्तं सर्वकारणकारणम् ।
तदनन्तफलं दातुर्भवतीति किमद्भुतम् ॥८३४॥

शिवे दत्तं हुतं जप्तं बलिपूजानिवेदनम् ।
एकान्ततोऽनन्तफलं तद्भावे नात्र संशयः ॥८३५॥

यद्यदिष्टं विशिष्टञ्च न्यायेन समुपार्ज्जितम् ।
तच्छिवाय निवेद्यं स्याद्भक्त्यानन्तफलार्थिना ॥८३६॥

सर्वस्वमपि यो दद्याच्छिवेऽभक्तिसमन्वितः ।
न तेन फलभाक् स स्याद्भक्तिरेवात्र कारणम् ॥८३७॥

विभवे सति यो मोहान्न कुर्य्याद्विधिविस्तरम् ।
नैव तत्फलमाप्नोति प्रलोभाक्रान्तमानसः ॥८३८॥

तुल्यमेव फलं प्रोक्तं शिवे चाढ्यदरिद्रयोः ।
तयोरप्यधिकं तस्य यः शिवे भावनाधिकः ॥८३९॥

तस्मात्पत्रैः फलैस्तोयैरेवमाद्यैश्च यत्कृतम् ।
तदनन्तफलं ज्ञेयं भक्तिरेवात्रकारणम् ॥८४०॥

अद्यानन्तफलप्राप्तिकामनया इदं वस्तु भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

घृतमयशिवमूर्तिदाने—

शिवमूर्त्तिं घृतमयीं प्रदद्याद्यः शिवालये ।
मन्वन्तरशतं साग्रं रुद्रलोके महीयते ॥८४१॥

अद्य साग्रमन्वन्तरशतावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इयं घृतमयी शिवमूर्तिर्विष्णुदेवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

अत्र च दानान्तरम्—

शिवभक्तेषु भोजनं कार्यम् ब्राह्मणानां तर्पणं प्रीयतां मे शिवो नित्यमिति ब्राह्मणोत्यापनं । द्विजेन्द्रैःसह तद्रूपस्य शिवलिङ्गसमीपतो नीत्वा वेद्यां समर्पणमङ्गम् ।

अथात्मप्रतिकृतिदानस्य

स्कन्दपुराणे—

दद्याद्धिरण्मयीं यो मे कृत्वा प्रतिकृतिं स्वकाम् ।
सर्वगन्धरसैर्युक्तां निर्य्यासैश्चैव संस्कृताम् ॥८४२॥
भक्ष्यभोज्यैश्च विविधैः कृष्णपक्षे चतुर्द्दशीम् ।
पूर्वदक्षिणयोश्चास्य पश्चिमोत्तरयोस्तथा ॥८४३॥
पार्श्वे तु हरितालञ्च कृष्णागुरुमनःशिलाम् ।
चन्दनञ्चैव दद्याद्वै यथासंख्येन पूजितम् ॥८४४॥
तस्य पुण्यफलं देवि शृणु यन्मत्तकाशिनि ।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तस्तथा निष्कल्मषश्च ह ॥८४५॥
वर्षकोटिशतान्यष्टौ दिवि भुक्त्वा महासुखम् ।
इहलोके सुखी जातो मामेव प्रतिपद्यते ॥८४६॥

प्रतिकृतिं सर्वगन्धरसैर्युक्तां कृत्वेत्यर्थः । निर्यासैर्गन्धवद्वृक्षरसैः । चतुर्द्दशीमिति सप्तम्यर्थे द्वितीया । सर्वगन्धाः कुंकुमागुरुकर्पूरजातीफलश्रीखण्डकस्तूरिकाः । सर्वरसाः कटुतिक्तकषायाम्ललवणमधुराः ।

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां सर्वव्याधिविनिर्मुक्तनिष्पापत्ववर्षाष्टकोटिशतावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणकमहासुखभोगपूर्वकैहिकजन्मसुखप्राप्त्युत्तरशिवप्रतिपत्तिकामनया इयं सर्वगन्धरससंयुक्ता बहुनिर्य्यासुसंस्कृता विविधभक्ष्यभोज्यसहिता पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरपार्श्वदत्तहरितालकृष्णागुरुमनःशिलाचन्दनात्मप्रतिकृतिर्हिरण्मयी वह्निदेवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता । हिरण्मय्यशक्तौ पिष्टमयी प्रजापतिदैवतात्मप्रतिकृतिरनयैव कामनया भगवते शिवाय दातव्या । दद्यात् पिष्टमयीं यो मे कृत्वा प्रतिकृतिं स्विकामित्यादिवचनान्तरात् । शक्त्यपेक्षया व्यवस्था ।

विष्ये पिष्टकमयलिङ्गदानस्य—

यो हि पिष्टमयं लिङ्गं सर्वगन्धोपशोभितम् ।
कुसुमैश्च सुगन्धैश्च फलैश्च विविधैस्तथा ॥८४७॥

भक्ष्यभोज्यैरशेषैश्च घृतदीपैश्च संयुतम् ।
तस्य दक्षिणपार्श्वे तु विन्यसेदगुरुं बुधः ॥८४८॥

दद्यात् पश्चिमभागे तु शोभनाञ्च मनःशिलाम् ।
उत्तरे चन्दनं दद्याद्धरितालञ्च पूर्वतः ॥८४९॥

एव वित्तानुसारेण कृत्वा विभवविस्तरम् ।
कृष्णपक्षे चतुर्द्दश्यां शिवाय विनिवेदयेत् ॥८५०॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वोपद्रववर्जितः ।
निष्फलः सर्वगो भूत्वा प्रविशेच्छिवमव्ययम् ॥८५१॥

अद्य कृष्णचतुर्द्दश्यां सर्वपापविनिर्मुक्तत्वसर्वोपद्रववर्जितत्वनिष्कलत्वसर्वगत्वपूर्वकाव्ययशिवप्रवेशकामनया इदं सर्वगन्धोपशोभितं सुगन्धिबहुकुसुमविविधफलयथाविभवविस्तरोपात्तानेकभक्ष्यभोज्यबहुघृतदीपसंयुक्तं दक्षिणपार्श्वन्यस्तकृष्णागुरुकं पश्चिमपार्श्वदत्तशोभनमनःशिलम् उत्तरपार्श्वदत्तचन्दनं पूर्वपार्श्वधृतहरितालं पिष्टकमयशोभनवेदिकलिङ्गं प्रजापतिदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

सर्वगन्धास्तु—कुङ्कुमकर्पूरकस्तूरिकाजातीफलागुरुश्रीखण्डाः ।
रसाः—लवणादयः षट् । पौर्णमास्यां पूजानन्तरसागुरुकृष्णतिलप्रस्थदानस्य—

दद्यात् कृष्णतिलानान्तु प्रस्थमेकञ्च सागुरुम् ।
अर्च्चयित्वा प्रयत्नेन पौर्णमास्यां विशेषतः ॥
युगायुतसहस्रन्तु शिवलोके महीयते ॥८५२॥

अद्य पौर्णमास्यां युगायुतसहस्रावाच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एषसागुरुतिलप्रस्थः सोमदैवतः शिवमभ्यर्च्य भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

सुवर्णतिलप्रस्थदाने—

सुवर्णन्तु यो दद्यात् प्रस्थमेकं तिलस्य च ।
युगायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८५३॥

अद्य युगायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकामनया एष सुवर्णतिलप्रस्थः सोमदैवतो भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तः ।

प्रमाणस्थपुरुषस्य प्रमाणकरेण द्वादशप्रसृतिभिः कुडवश्चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः तदिदमुक्तम्—

तिलप्रस्थस्तु विज्ञेयश्चत्वारिंशद्भिरष्टभिः ।
करप्रसृतिभिर्लोकैः एषमानविनिर्णयः ॥८५४॥

पौर्णमास्यां विधिवत्पूजोत्तरघृतपूर्णपात्रादिबलिदाने—

भोजनं घृतसम्पूर्णं मधुनोपरिशोभितम् ।
दद्यात् कृष्णतिलानाञ्च प्रस्थमेकञ्च मागधम् ॥८५५॥
द्विगुणं तण्डुलानाञ्च पृथक्प्रस्थं प्रकल्पयेत् ।
लिङ्गं संवेष्ट्य वस्त्राभ्यां बलिमेनं निवेदयेत् ॥८५६॥
अर्च्चयित्वा विधानेन पौर्णमास्यां विशेषतः ।
युगायुतसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८५७॥
पुण्यक्षयादिहागत्य समृद्धे जायते कुले ।
मेधावी सुभगः श्रीमान् वेदवेदाङ्गपारगः ॥८५८॥

मागधः प्रस्थः मगधदेशभवो द्वात्रिंशत्पलिकः ।[1]

तथा च गोपथब्राह्मणे—

पञ्चकृष्णलको माषस्तैश्चतुःषष्टिभिः पलम् ।
द्वात्रिंशता पलैः प्रस्थो मगधेषु प्रकीर्त्तितः ॥८५९॥

द्विगुणं तिलप्रस्थापेक्षया ।

अद्य पौर्णमास्यां युगायुतसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वतदुत्तरसमृद्धकुलजन्ममेधावित्ववेदवेदाङ्गपारगत्वकामनया इदं घृतपूर्णमधूपरिशोभितभाजनमागधकृष्णतिलप्रस्थपृथक्परिकल्पितद्विगुणतण्डुलप्रस्थात्मकबलिं विधिवदर्च्चयित्वा वस्त्राभ्यां शिवलिङ्गं संवेष्ट्य भगवते शिवाय तुभ्यमहं निवेदयिष्ये ।

१ ने० पा०, पलकः ।

स्कन्दपुराणे तिलगौरसर्षपदानस्य—

दद्यात् कृष्णतिलांश्चैव तथा सिद्धार्थकांश्च ह ।
यो मे देवि सदा भक्त्या सोपि नन्दिसमो भवेत् ॥८६०॥

अत्र चकारद्वयाद्दाने समुच्चयः

अद्य नन्दिसमत्वभवनकामनया एते कृष्णतिलाः सोमदैवताः एते गौरसर्षपाश्च प्रजापतिदैवता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ताः ।

शिवधर्म्मे सर्वसस्योत्पत्तिक्षयजलोपेतमहिदानस्य—

यः शिवाय जलोपेतं सर्वसस्यप्ररोहिणीम् ।
महीं महपतिर्दद्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥८६१॥

यावद्दण्डा भवेद्भूमिर्मीयमाना समन्ततः ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥८६२॥

एवं सर्वत्र विज्ञेयं फलं दण्डप्रमाणतः ।
ग्रामखेटपुरक्षेत्रविषयादिनिवेदने ॥८६३॥

अद्य दातव्यभूमियावद्दण्डमानसमसंख्यबहुयुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया इमां जलोपेतां सर्वसस्यप्ररोहिणीं भूमिं प्रियदत्तां भगवते शिवाय तुभ्यमहं ददे ।

ग्रामदानेप्येतदेव फलम् ।

भूमिदानस्य—

रत्नान्नपानगोऽश्वाद्यं सर्वं भूमौ प्रजायते ।
तस्माद्भूमिप्रदानेन नरो भवति सर्वदः ॥८६४॥

अद्य रत्नान्नपानगोऽश्वादिसकलदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया इयं भूमिः विष्णुदैवता प्रियदत्ता भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्ता ।

बहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नोपरचितसिंहासनदाने—

अद्य त्रिंशत्कुलयुतान्तःपुरपरिच्छदान्वितसमस्तभृत्ययुतात्मीयशिवलोकावाप्तित्रत्यप्रलयबाधशिवतुल्यपराक्रमत्वमहाभोगभुक्त्युत्तरमुक्तिप्राप्तिकामनया इदं सिंहासनं रचितबहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

अथवा

अद्य त्रिंशत्कुलयुतान्तःपुरपरिच्छदान्वितसमस्तभृत्ययुतात्मीयशिवलोकप्राप्तिपूर्वकसमन्वितात्मीयसप्तद्वीपसमुद्रावच्छिन्नपृथिव्यधिकरणकजन्मकोटिसहस्रजन्मकोटिशतावच्छिन्नराज्यकरणोत्तरशिवपुरगमनकामनया इदं सिंहासनरचितबहुमहारत्नक्षुद्रबहुरत्नं विष्णुदैवतं भगवते शिवाय तुभ्यं मया दत्तम् ।

उत्खचितरत्नासनोत्खचितरत्नपादुकाद्वयोत्खचितरत्नमुकुटाभरणादीनामन्यतमदानेप्येतदेव फलम् ।

अथ नीराजनस्य

शिवधर्म्मे—

त्रिशूलशङ्खचक्राब्जश्रीवत्सस्वस्तिकादिभिः ।
हेमरूप्यादिपात्रेषु कल्पितैर्गोमयादिभिः ॥८६५॥
नानावर्णकसंयुक्तै रक्षतैस्तिलतण्डुलैः ।
भक्तैश्च दधिसंमिश्रैर्यथाशोभं प्रपूरितैः ॥८६६॥
उच्चैः पिष्टप्रदीपाद्यैश्च चूताश्वत्थादिपल्लवैः ।
ओषधीभिश्च मेध्याभिःसर्वबीजैर्यवाङ्कुरैः ॥८६७॥
अष्टम्यादिषु सर्वेषु दिवसेषूत्सवेषु च ।
पर्वकालेषु पुण्येषु चतुर्द्दश्यां विशेषतः ॥८६८॥
शङ्खभेर्य्यादिनिर्घोषैर्महागेयपदान्वितैः ।
कुर्य्यान्नीराजनं लिङ्गे शिवमुद्दिश्य मङ्गलैः ॥८६९॥
यावत्पूर्वाणि विधिना कुर्य्यान्नीराजनं शिवे ।
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥८७०

अद्यास्मिन् पर्वकाले बहुयुगसहस्रावच्छिन्नशिवलोकमहित्वकामो गोमयोपकल्पितत्रिशूलशङ्खचक्राब्जश्रीवत्सस्वस्तिकादिना नानावर्णकसंयुक्ताक्षततिलतण्डुलदधिसंयुक्तभक्तयथाशोभिप्रपूरितसुवर्णरजतबहुपात्रैरुच्चैः पिष्टप्रदीपाद्यैश्चूताश्वत्थादिबहुपल्लवमेध्यबहवोषधियवादिसर्वबीजमहागेयपदान्वितशङ्खभेर्य्यादिनिस्वनैर्भगवतः शिवस्य लिङ्गे नीराजनमहं करिष्ये ।

अथारात्रिकायाः—

करोत्यारात्रिकां यस्तु बहुभावपुरःसरः ।
प्राप्य ज्ञानं प्रयाणान्ते गमिष्यत्यक्षयं पदम् ॥८७१॥

आरात्रिका आरतिरिति प्रसिद्धा ।

अद्य प्रयाणकालोत्तरतत्त्वज्ञानप्राप्तिपूर्वकाक्षयपदगमनकामनया भगवतः शिवस्यारात्रिकामहं करिष्ये ।

अथ जपफलम्

शिवरहस्ये—

ज्ञेयो नमः शिवायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ।
सर्वमन्त्राधिकश्चायमोङ्काराद्यः षडक्षरः ॥८७२॥
तन्मन्त्रजापी तत्कर्म्मरतस्तद्गतमानसः ।
निष्कामः पुरुषो राजन् स रुद्रपदमश्नुते ॥८७३॥

अद्य रुद्रपदप्राप्तिकामनया शैवषडक्षरमन्त्रजपमहंकरिष्ये ।

मन्त्रस्वरूपन्तु—ॐ नमः शिवाय ।

शिवधर्म्मे सन्ध्यायां षडक्षरजपस्य—

तस्मादनेन मन्त्रेण प्रकुर्वीत शिवार्च्चनम् ।
सन्ध्यायां तु जपेदेनं सर्वपापविशुद्धये ॥८७४॥

अद्यास्यां सन्ध्यायां सर्वपापक्षयकामः शैवषडक्षरमन्त्रजपमहङ्करिष्ये ।

शिवरहस्ये—समुद्रादितीराधिकरणकजपस्य—

समुद्रतीरे देवह्रदे गिरौ देवालयेषु च ।
पुण्याश्रमेषु देशेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥८७५॥

अद्य कोटिगुणजपजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया समुद्रतीरे भगवतः शिवस्य पञ्चाक्षरजपमहङ्करिष्ये ।

देवह्रदादावप्येवम् ।

अथ प्रदक्षिणफलम्

भविष्यपुराणे—

कृत्वा प्रदक्षिणं भक्त्या शिवास्यायतने नरः ।
अश्वमेधसहस्रस्य स्वयज्ञस्य फलं लभेत् ॥८७६॥

अद्य स्विष्टाश्वमेधसहस्रफलसमफलप्राप्तिकामः शिवस्यायतने भक्त्या प्रदक्षिणमहं करिष्ये ।

लिङ्गपुराणे प्रदक्षिणत्रयस्य—

प्रदक्षिणत्रयं कुर्य्याद्यः प्रासादे समन्ततः ।
सव्यापसव्यन्यासेन मृदुगत्या शुचिर्नरः ॥
पदे पदेऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलमश्नुते ॥८७७॥

अद्य प्रदक्षिणपदसमसंख्याश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया सव्याऽपसव्यमृदुगत्या भगवतः शिवस्य प्रासादे समन्ततः प्रदक्षिणमहं करिष्ये ।

देवीपुराणे प्रदक्षिणत्रयस्य—

सव्यं व्रजेत्ततोऽसव्यं प्रणालं नैव लङ्घयेत् ।
एकीभूतमना रुद्रे यः कुर्य्यात् त्रिःप्रदक्षिणम् ॥
छिन्नस्तेन भवग्रन्थिर्न तस्य पुनरुद्भवः ॥८७८॥

अद्य भवग्रन्थिच्छेदपुनरुद्भवविरहकामः सव्याऽसव्यगत्या भगवतः शिवस्य प्रदक्षिणत्रयमहङ्करिष्ये ।

तात्कालिकशिवैकाग्रमानसत्वमत्राङ्गम् ।

अथ प्रणामफलम्

शिवरहस्ये—

प्रमादेनापि यैः क्वापि प्रणामः शूलिनः कृतः ।
कल्पान्ते च भवग्रन्थिर्न तेषां जायते पुनः ॥८७९॥

अद्य पुनरुद्भवविरहकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

तत्रैव सकृत्प्रणामस्य—

आचारहीनोऽपि निराकृतोऽपि प्रहीणसत्वो व्यसनान्वितोऽपि ।
सकृन्महादेवकृतप्रणामो विध्वस्तदोषोऽमरतामुपैति ॥८८०॥

अद्य विध्वस्तदोषत्वामरत्वप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

तत्रैवाष्टाङ्गप्रणामस्य—

अष्टाङ्गसम्पुष्टधरातलश्च प्रदक्षिणीकृत्य यदाह ईश्वरम् ।
नमस्करोमीति स चक्रवर्त्तितां प्राप्नोत्यवश्यं हि पृथुः पुरा यथा ॥८८१॥

अद्य चक्रवर्त्तित्वप्राप्तिकामनया प्रदक्षिणीकृत्य धरासंस्पृष्टाङ्गो भगवन्तमीश्वरमहं प्रणमामि ।

भविष्यपुराणे दण्डवत्प्रणामस्य—

प्रणम्य दण्डवद्भूमौ नमस्कारेण योऽर्च्चयेत् ।
स यां गतिमावाप्नोति न तां क्रतुशतैरपि ॥८८२॥

अद्य क्रतुशतजन्यगत्यधिकगतिप्राप्तिकामनया भगवन्तं शिवं दण्डवद्भूमौ प्रणम्य नमस्कुर्वीय ।

भविष्ये जानुपाणिशिरःकरणकप्रणामस्य—

जानुभ्याञ्चैव पाणिभ्यां शिरसा च विचक्षणः ।
कृत्वा प्रणामं देवेशे सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥८८३॥

अद्य सर्वकामावाप्तिकामो जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

स्मृतौ प्रणाममात्रस्य—

तीर्थकोटिसहस्राणि तीर्थकोटिशतानि च ।
महादेवप्रणामस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥८८४॥

अद्य तीर्थकोटिसहस्रतीर्थकोटिशतसेवनजन्यपुण्यषोडशगुणाधिकपुण्यप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं प्रणमामि ।

भविष्ये नमस्कारस्य—

मदा[1]शीर्मन्नमस्कारो मामेव प्रतिपद्यते ॥८८५॥

अद्य शिवप्राप्तिकामो भगवन्तं शिवमहं नमस्कुर्वीय ।

---

१ मूले मदासि ।

शिवरहस्ये नमस्कारस्य—

नमस्कारः कृतो ज्ञेयः सर्वयज्ञोत्तमोत्तमः ।
नमस्कृत्य पुनः शम्भुमश्वमेधफलं लभेत् ॥८८६॥

अद्याश्वमेधफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवन्तं शिवमहं नमस्कुर्वीय ।

ब्रह्मवैवर्ते नमस्कारस्य—

यथा वृक्षात् फलं पक्वं पवनेन समीरितम् ।
नमस्कारेण रुद्रस्य तथा पापं प्रणश्यति ॥८८७॥

अद्य पापक्षयकामनया भगवन्तं रुद्रमहं नमस्कुर्वीय ।

भविष्यपुराणे स्तुतिफलम्—

सर्वदानोपवासेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
स्तुतिजप्योपहारेण शिवे तत्फलमाप्नुयात् ॥८८८॥

अद्य सर्वदानसर्वोपवाससर्वयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य स्तोत्रपाठमहङ्करिष्ये ।

अथ ध्यानफलम्

महाभारते—

सर्वलक्षणहीनोऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ।
सर्वन्तरति तत्पापं भावयन् शिवमात्मना ॥८८९॥

भावयन् ध्यायन् ।

अद्य सर्वपापतरणकामो भगवतः शिवस्य ध्यानमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे[1] सदाध्यानस्य—

न शक्योऽस्मि तपोयुक्तैर्द्रष्टुं मुनिगणैरपि ।
ध्यानिनो नित्ययुक्ताश्च देवि पश्यन्ति मां बुधाः ॥८९०॥

अद्यादि शिवसाक्षात्कारकामो नित्यं शिवध्यानमहङ्करिष्ये ।

१ ने० पा०, स्कन्दपुराणे ।

अथ रुद्राक्षधारणम्

स्कन्दपुराणे षण्मुखं प्रति रुद्रवाक्यम्—

हस्ते बाहौ तथा कण्ठे मूर्ध्नि रुद्राक्षधारणात् ।
अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवद्विचरेद्भुवि ॥८९१॥

सुरासुराणां सर्वेषां वन्दनीयो यथा शिवः ।
ध्यानधारणहीनोऽपि रुद्राक्षं धारयेत्तु यः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सः याति परमां गतिम् ॥८९२॥

अद्यादि सर्वभूतावध्यत्वभूतलाधिकरणकरुद्रगतितुल्यगतिमत्वसुरासुरकर्तृक... वतुल्यवन्द्यत्वसर्वपापविनिर्मुक्तत्वपरमगतिप्राप्तिकामो रुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षधारणस्य—

लक्षन्तु जपतः पुण्यं कोटिर्भवति संख्यया ।
दशकोटिसमं पुण्यं धारणाल्लभते नरः ॥८९३॥
यावदेतच्छरीरस्थं तावन्मृत्युर्न बाधते ॥८९४॥

अद्यादि शिवमन्त्रदशकोटिजपजन्यपुण्यसमपुण्याकालिकमृत्युबाधाशून्यत्वकामनया रुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षं धारयतो लक्षजपे कोटिजपजन्यफलसमफलत्वम् ।

एकवक्त्रधारणस्य—

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥८९५॥

अद्यादि ब्रह्महत्याजन्यपापक्षयकामनया एकवक्त्रशिवनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

द्विवक्त्रधारणस्य—

द्विवक्त्रो देवदेवो हि गोवधं नाशयेद्ध्रुवम्[1] ॥८९६॥

अद्यादि गोवधजन्यपापक्षयकामनया द्विवक्त्रदेवदेवनामकरुद्राक्षरधारणमहङ्करिष्ये ।

---

1 शिवमहापुराण, विदेश्वरसंहिता, प्रथम खंड, अध्याय २५, द्विवक्त्रो देवदेवेशः सर्वकामफलप्रदः । विशेषतः स रुद्राक्षो गोवधं नाशयेद्द्रुतम्

त्रिवक्त्रधारणस्य—

त्रिवक्त्रो धनदः साक्षाद्धस्तिहत्यां व्यपोहति[1] ॥८९७॥

अद्यादि हस्तिहत्याजन्यपापक्षयकामनया त्रिवक्त्रधनदनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

चतुर्वक्त्रधारणस्य—

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति[2] ॥८९८॥

अद्यादि नर-हनन-जन्यपापक्षयकामनया चतुर्वक्त्रब्रह्मानामकरुद्राक्षधारणमहंकरिष्ये ।

पञ्चवक्त्रधारणस्य—

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्न्नाम नामतः ।
अगम्यागमनाच्चैव अभक्ष्यस्य च भक्षणात् ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यः पञ्चवक्त्रस्य धारणात्[3] ॥८९९॥

अद्यागम्यागमनाभक्ष्यभक्षणादिजन्यसर्वपापविमुक्तिकामनया कालाग्निरुद्रनामकपञ्चवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

षड्वक्त्रधाणस्य—

षडवक्त्रः कर्त्तिकेयस्तु धारणाद्दक्षिणे भुजे ।
ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः[4] ॥९००॥

अद्यादि ब्रह्मवधादिजन्यबहुपापविमुक्तिकामनया दक्षिणे भुजे कार्त्तिकेयनामक षड्वक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्य ।

सप्तवक्त्रधारणस्य—

सप्तवक्त्रो महासेन[5] अनन्तो नाम नागराट् ।
सुवर्णः सुभगश्चैव[6] दरिद्रोपीश्वरो भवेत्[7] ॥९०१॥

अद्यादि सुवर्णत्वसुभगत्वेश्वरत्वप्राप्तिकामनयाऽनन्तनामसप्तवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

---

१ स्कन्दपुराण; विदेश्वर संहिता, प्रथम खंड, २५, ६७ ।
२ तत्रैव २५, ६८ ।
३ तत्रैव २५, ६९ ।
४ तत्रैव २५, ७० ।
५ ने० पा० कापी सं० २. पृ० २१, शिवमहापुराण प्रथम खंड विदेश्वर-संहिता, २५, ७२, महेशानि ।
६ तत्रैव, सुवर्णित्व ।
७ स्कन्दमहापुराण, विदेश्वर संहिता, प्रथमखंड, २५, ७१।

ष्टवक्त्रधारणस्य—।

रुद्राक्षस्याष्टवक्त्रस्य कार्त्तिकेय विधारणात् A।
जीवेद्वर्षशतं साग्रं मृतो भवति शूलभृत्[1] ।।९०२।।

अद्यादि साग्रशतवर्षजीवित्वतनुत्यागान्तरकालिकशूलभृतत्वभवनकामनयाऽ-
वक्त्रहरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

वक्त्रधारणस्य—

भैरवं नवमं वक्त्रं कपिलं मुक्तिदं स्मृतम् ।
धारयेद्वामहस्तेन मम तुल्यबलो भवेत् ।।९०३।।

लक्षकोटिसहस्राणि ब्रह्महत्याः करोति यः ।
तत्सर्वं दहते शीघ्रं नववक्त्रस्य धारणात् ।।९०४।।

अद्यादि लक्षकोटिसहस्रब्रह्महत्याजन्यतात्कालिकपापक्षयशिवतुल्यबलत्वप्राप्ति-
नया भैरवं नववक्त्रंरुद्राक्षं वामबाहावहं धारयिष्ये ।

लनववक्त्रधारणस्य—

अद्यादि मुक्तिप्राप्तिकामनया कपिलनववक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

वत्र रुद्राक्षधारणस्य—

दशवक्त्रो महासेनः स्वयं देवो जनार्दनः ।
ग्रहाश्चैव[3] पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः ।।
पन्नगाश्च विनश्यन्ति दशवक्त्रस्य धारणात् ।।९०५।।

अद्यादि बहुग्रहपिशाचवेतालब्रह्मराक्षसपन्नगकर्तृकात्मीयभयाभावकामनया
वक्त्रजनार्दननामरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

---

१ स्कन्दमहापुराण, विदेश्वरसंहिता, प्रथम खंड २५, ७२।
२ ने० पा०, कापी सं०, २, पृ० २१, शिवमहापुराण, प्रथम खंड, विदेश्वर
३ संहिता, २५, ७२, महेशानि ।

एकादशवक्त्रधारणस्य —

एकादशमुखो वत्स रुद्राश्चैकादश स्मृताः ।
शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥१०६॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
स तत्फलमवाप्नोति रुद्राक्षस्य च धारणात् ॥१०७॥

अद्याश्वमेधसहस्रवाजपेयशतजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया शिखायां रुद्रनामकैकादशवक्त्ररुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

द्वादशवक्त्रधारणस्य—

द्वादशास्यं तु रुद्राक्षं धारयेत् केशदेशतः ।
आदित्याश्चैव ते सर्वे द्वादशैव व्यवस्थिताः ॥१०८॥

गोमेधस्य तु यज्ञस्य धारणाल्लभते फलम् ।
दुर्भगः सुभगश्चैव रोगी रोगाद्विमुच्यते ॥१०९॥

अद्यादि गोमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिसुभगत्वभवनकामनया केशदेशे द्वादशवक्त्रादित्यनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

सति रोगे रोगविमुक्तिश्चफलम् ।

त्रयोदशवक्त्रधारणस्य —

त्रयोदशमुखञ्चैव रुद्राक्षं प्राप्यते यदि ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सौभाग्यं परमं लभेत् ॥९१०॥
कामदेवं हि रुद्राक्षं सदा कण्ठेन[1] धारयेत् ।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्य्याणि भाग्यहीनस्य षण्मुख ॥९११॥

अद्यादि सर्वकामावाप्तिपरमसुभगत्वसर्वकार्य्यसिद्धिप्राप्तिकामनया कण्ठे त्रयोदशवक्त्रकामदेवनामकरुद्राक्षधारणमहङ्करिष्ये ।

चतुर्द्दशवक्त्रधारणस्य—

चतुर्द्दशमुखं यत्तु पुण्येन प्राप्यते यदि ।
धारयेत् सततं मूर्ध्नि सर्वपापप्रणाशनम् ॥९१२॥
पूज्यते सततं देवैः प्राप्यते पुण्यगोचरैः ॥९१३॥

अद्यादि सर्वपापक्षयबहुदेवकर्त्तृकपूजाकर्म्मत्वप्राप्तिकामनया मूर्द्धनि चतुर्द्दशवक्त्ररुद्राक्षधारण महङ्करिष्ये ।

रुद्राक्षमालाधारणस्य—

रुद्राक्षमालां यो धत्ते भक्त्या चैव सदा करे ।
शतार्द्धार्द्ध प्रमाणेन स रुद्रो नात्र संशयः ॥९१४॥

अद्यादि रुद्रत्वभवनकामनया करे रुद्राक्षमालामहं धारयिष्ये ।

रुद्राक्षधारणमन्त्राः

एकवक्त्रे—ओँ भृशं नमः[3] । द्विवक्त्रे—ओँ ओँ नमः । त्रिवक्त्रे–ओँ हूँ नमः[4] । चतुर्वक्त्रे—ओँ ह्रीँ नमः । पंचवक्त्रे—ओँ हूँ नमः । षड्वक्त्रे- ओँ ह्रूँ ह्रूँ नमः[5] । सप्तवक्त्रे – ओँ हँ ज्ञमः[6] । अष्टवक्त्रे–ओँ हँ नमः[7] । नववक्त्रे—ओँ यूँ नमः[8] । दशैकादशवक्त्रयोः—ओँ श्रीनमः । द्वादशवक्त्रे-ओँ ह्राँह्राँनमः[9] । त्रयोदशवक्त्रे—ओँ क्षौँ क्षौँ नमः । चतुर्द्दशवक्त्रे—ओँ नमोनमः ।

---

१ ने० पा० कण्ठेव धारयेत् ।
२ शिवमहापुराण, प्रथम खंड, विदेश्वरसंहिता मे रुद्राक्षक मंत्र मे अन्तर अछि ।
३ ने० पा० ओँ भृशे नमः ।
४ ने० पा०, ओँ वूँ नमः ।
५ वएह, ओँ हुँ हूँ नमः ।
६ वएह, ओँ हुँ ननः ।
७ वएह, ओँ ह्रीँ नमः ।
८ वएह, ओँ ···· नमः ।
९ वएह, ओँ हुँ हुँ नमः ।

प्रत्येकमष्टोत्तरशतं जपित्वा शिवाम्भसा प्रक्षाल्य धारणीयम् ।

विना मन्त्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरकं घोरं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥९१५॥

अथ शिवायतनकरणफलम्

भविष्ये—

मृदारम्भेष्टकाशैले यः कुर्य्यात्तु शिवालयम् ।
द्विः सप्तकुलसंयुक्तः शिवलोके महीयते ॥९१६॥

अद्य चतुर्द्दशकुलयुतात्मीयशिवलोकमहितत्वकामो मृदा भगवतः शिवस्यायतनमहङ्करिष्ये ।

दारुमयायतनकरणस्य—

मृन्मयात् कोटिगुणितं फलं स्याद्दारुभिः कृते ॥९१७॥

अद्य मृण्मयायतनकरणजन्यफलकोटिगुणफलप्राप्तिकामो दारुभिर्भगवतः शिवस्यायतनमहङ्करिष्ये ।

इष्टकायतनकरणे—

कोटिगुणं पुण्यं दारवादिष्टकामये ॥९१८॥

अद्य दारुमयायतनकरणजन्यपुण्यकोटिगुणपुण्यप्राप्तिकामनया इष्टकाभिर्भगवतः शिवस्यायतनमहङ्करिष्ये ।

प्रस्तरमयायतनस्य—

ऐष्टिकाद्द्विगुणं पुण्यं शैलेये स्याच्छिवालये ॥९१९॥

अद्य इष्टकाकरणकायतनजन्यफलद्विगुणफलप्राप्तिकामनया शिलाभिर्भगवतः शिवस्यायतनमहं करिष्ये ।

ाशक्तीष्टकामयकरणे—

इष्टेष्टकासमायुक्तं योपि कुर्याच्छिवालयम् ।
विधूय पापसंघातं स गच्छेच्छङ्करालयम् ॥९२०॥

अद्य पापसंघातविमुक्तिपूर्वकशिवालयगमनकामनया इष्टकामयं शिवालयमहं रिष्ये ।

ङ्गपुराणे यथाशक्तिमन्दिरकरणस्य—

मन्दिरं वापि कुर्वीत शिवाय विधिपूर्वकम् ।
भक्त्या वित्तानुसारेण उत्तमाधममध्यमम् ।
यः करोति महादेवि सोऽनन्तफलमश्नुते ॥९२१॥

अद्यानन्तफलप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य यथाविधि मन्दिरमहङ्करिष्ये ।

वपुराणे मन्दिरकरणस्य—

शङ्ककर्णो यथा चायं यथा कालोऽयमन्तिके ।
यथा नन्दीश्वरोऽयं मे तथा सोऽपि भविष्यति ॥९२२॥

अद्य शङ्कुकर्णमहाकालनन्दीश्वरगणतुल्यशिवान्तिकस्थितिकामनया शिवालयम् हङ्करिष्ये ।

विष्यपुराणे शिवायतनसन्निधौ कृत्रिम[1]भूमिकरणस्य—

यः कुर्यात् कुट्टिमां भूमिं दर्पणोदरसन्निभाम् ।
नानावर्णविचित्राञ्च विचित्रकुसुमोज्ज्वलाम् ॥९२३॥
क्वचिद्विन्यस्तकलसां पङ्क[2]जाद्युपशोभिताम् ।
मनोभिरामां सुख[3]मां शिवायतनसंसदि ॥९२४॥
यावद्दण्डो भवेद्भूमिः समन्तादुपशोभिता ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९२५॥

अद्य समन्ततो विरचनैतद्भूमिदण्डसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामनया शिवायतनसन्निधाविमां भूमिकुट्टिमां दर्पणोदरसन्निभां नानावर्णविचित्रां विचित्रकुसुमोज्ज्वलां विन्यस्तकलसां पङ्कजा[4]द्युपशोभितामहङ्करिष्ये ।

१. नें० पा०, पृ० २३, कुट्टिम ।
२. वैह, पक्वजाम्बूपशोभिताम् ।
३. वैह, सुसमां । सुषमां शुद्ध पाठ ।
४. वैह, पक्वजाम्बूप शोभिताम्

सुधाप्रलेपनस्य—

सुधाप्रलिप्तं यः कुर्य्यात् सर्वयत्नैः शिवालयम् ।
तावत्पुण्यं लभेत्सोपि यावदायतने कृते ॥९२६॥

अद्य सुधाप्रलेपनयैतच्छिवालयकरणजन्यसमपुण्यप्राप्तिकामोभगवतः शिवस्यैतद्दायतनं सुधाप्रलिप्तमहं करिष्ये ।

प्रत्यब्दं सुधाभिर्धवलीकरणस्य—

प्रत्यब्दं यत्र कुर्वीति शम्भोरायतनं नरः[1] ।
धवलं क्षीरसुधया यथाशोभञ्च वर्णकैः ॥९२७॥

यावन्त्यब्दानि कुरुते धवलं तच्छिवालयम् ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९२८॥

अद्यादिसुधाप्रलेपनाधिकरणाब्दसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामः प्रत्यब्दं भगवतः शिवस्यायतनं सुधाभिर्धवलमहं करिष्ये ।

शिवालये रुद्रादिचित्रलेखनस्य—

कारयेच्चित्रशास्त्रज्ञैर्यत्नाच्चित्रं शिवालये ।
रुद्रावतारक्रीडाद्यैः प्रयोगैरागमोदितैः ॥९२९॥

यावन्ति रुद्ररूपाणि लेखयेत शिवालये ।
तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥९३०॥

अद्यादिलेखनीयैतावद्रुद्रमूर्त्तिसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नरुद्रलोकमहितत्वकामोऽस्मिन् शिवालये आगमादिरुद्रावतारक्रीड़ादियुक्तरुद्रकृतीरहं लेख[2]यिष्ये ।

---

१ ने० पा०, वुधः
२ वैह, पृ० २३, करिष्ये ।

डस्फुटितरुद्रालयादिसंस्कारे—

खण्डस्फुटितसंस्कारं यः करोति शिवालये ।
आरामावसथाद्येषु लभते मौलिकं फलम् ॥९३१॥

अद्य रुद्रालयकरणजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः खंडस्फुटितरुद्रालयसज्जीकरण-
ङ्करिष्ये ।

खंडस्फुटितारामावसथादिसज्जीकरणेप्येतदेव फलम् ।

अथ लिंगस्थापनाफलम्

गपुराणे-

व्रह्मादिस्थावरान्तश्च सर्वं लिङ्गे प्रतिष्ठितम् ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य स्थापयेल्लिङ्गमव्ययम् ॥९३२॥
लिङ्गे वेदी उमादेवी लिङ्गे साक्षान्महेश्वरः ।
प्रतिष्ठायान्तु देवेशो देव्या सार्द्धं प्रतिष्ठितः ॥
य एवं स्थापयेल्लिङ्गं स एव परमेश्वरः ॥९३३॥

अद्य परमेश्वरत्वभवनकामनया सवेदिकं सप्रतिष्ठं शिवलिङ्गमहं स्थापयिष्ये ।

ष्ये लिङ्गस्थापनस्य—

यो लिङ्गं स्थापयेदेकं विधिपूर्वं सदक्षिणम् ।
सर्वागमोदितं पुण्यं कोटिकोटिगुणं भवेत् ॥९३६॥
मातृजां पितृजांश्चैव यतश्चोद्धरते स्त्रि[1]यम् ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य शिवलोके महीयते ॥९३७॥
भुक्त्वाथ विपुलान् भोगान् प्रलये समुपस्थिते ।
ज्ञानयोगं समासाद्य तत्रैव स विमुच्यते ॥९३८॥

अद्य सर्वाङ्गमोदितकोटिकोटिगुणफलप्राप्तिमातृकपैतृकश्वशुरैकविंशतिकुल-
कोत्तारणपूर्वकशिवलोकमहितत्वविपुलभोगभुक्तिपूर्वकप्रलयकालिकज्ञानहेतुकविमुक्ति-
प्तिकामोभवगतः शिवस्य लिङ्गमहं स्थापयिष्ये ।

विधिर्म्मत्स्यपुराणोक्तः ।

---

१ त्रयम् शुद्ध पा० ।

हयशीर्षपञ्चरात्रे अथ जीर्णायतनस्थापनफलं—

वापीकूपतडागानां सुरधाम्नां तथानघे ।
प्रतिमानां समानाञ्च समुद्धर्त्ता नरो भुवि ॥
पुण्यं शतगुणं तस्य भवेन्मूलान्न संशयः ॥९३७॥

अद्य शिवपुरकरणजन्यफलशतगुणफलप्राप्तिकामनया जीर्णशिवगृहोद्धारः महङ्करिष्ये ।

एवं जीर्णवाप्यादौ ।

भविष्ये[1] अथ शिवक्षेत्रे वाप्यादिकरणस्य—

यः कुर्य्याद्दीर्घिकां वापीं कूपं वापि शिवालये ।
त्रिसप्तकुलसंयुक्तः शिवलोके महीयते ॥९३८॥

अद्यं कविंशतिकुलयुतात्मीयशिवलोकमहितत्वकामः शिवालयसमीपे वापीवास्तुकर्म्माहङ्करिष्ये ।

एवं कूपादौ ।

अथ शिवलिंगसमीपस्थनद्यादौ स्नानफलम्

लिंगपुराणे—

शिवलिङ्गसमीपस्था नद्यः सर्वा द्विजोत्तमाः ।
वापीकूपतडागाश्च शिवतीर्थमिति स्मृताः ॥
गंगास्नानसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥९३९॥

अद्य गंगास्नानजन्यपुण्यसमपुण्यप्राप्तिकामः शिवलिङ्गसमीपस्थनद्यां स्नानमहङ्करिष्ये ।

शिवलिङ्गसमीपस्थवापीकूपतडागस्नानेप्येतदेवफलम् ।

---

१ नें० पा०, पृ० २४, नहि अछि ।

ावसमीपस्थप्रस्रवणस्नानस्य—

त्रिश्च प्रस्रवणे स्नात्वा शिवतीर्थे सकृन्नरः ।
शिवसायुज्यमाप्नोति नात्रकार्य्या विचारणा ॥९४०॥

अद्य शिवसायुज्यप्राप्तिकामनया शिवलिङ्गसमीपस्थप्रस्रवणे त्रिःस्नानमहङ्क रिष्ये।

वधर्म्मे शिवपुरोवर्त्तिक्षेत्रस्थजलस्नाने—

शिवक्षेत्रसमीपस्थं यत्तोयं पुरतः थितम् ।
शिवगङ्गेति विज्ञेयं तत्र स्नात्वा दिवंव्रजेत् ॥९४१॥

अद्य स्वर्गप्राप्तिकामनया भगवतः शिवस्य पुरःस्थिताम्भःशिवगङ्गायां स्नान-
हङ्करिष्ये ।

अथ भूतिस्नानम्

वधर्म्मे—

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
तत्पुण्यं लभते सर्वं भस्मस्नानान्न संशयः ॥९४२॥

अद्य सर्वतीर्थसेवनजन्यपुण्यंसर्वयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया भस्मस्नानमहङ्क-
ये।

वा

भस्मस्नानं निषेवेत मुच्यते सर्वपातकैः ।

अद्य सर्वपातकविमुक्तिकामो भस्मस्नानमहङ्करिष्ये ।

ये भूतिस्नानस्य—

यः स्नानमाचरेन्नित्यमाग्नेयं विजितेन्द्रियः ।
कुलैकविंशमुत्तार्य्य स गच्छेत् परमां गतिम् ॥९४३॥

आग्नेयं भस्मस्नानम् ।

अद्य प्रत्यहमेकविंशतिकुलनरकोत्तारणपूर्वकपरमगतिप्राप्तिकामनया भस्मस्नान-
ङ्करिष्ये ।

भूतित्रिपुण्ड्रस्य—

सितेन भस्मना कुर्य्याल्ललाटे यस्त्रिपुण्ड्रकम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवेन सह मोदते ॥९४४॥

अद्य सर्वपापविनिर्मुक्तत्वशिवेन सह हर्षकामनया ललाटे भस्मना त्रिपुण्ड्रकमहङ्करिष्ये ।

लिङ्गपुराणे—

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया ।
पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः ॥
तस्मान्मृदापि कर्त्तव्यं ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम् ॥९४५॥

अथ तपस्विपूजाफलम्

नन्दिकेश्वरे—

व्रतोपवासदानानि तपस्तीर्थफलानि च ।
सम्पूर्णानि लभेद्भक्त्या सम्पूज्य शिवयोगिनम् ॥९४६॥

शिवधर्म्मोत्तरे—

द्विजानां वेदविदुषां कोटिं सम्भोज्य यत्फलम् ।
तत्फलं कोटिगुणितं सम्भोज्य शिवयोगिनम् ॥९४७॥

अद्य कोटिगुणवेदविद्ब्राह्मणकोटिभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवयोगिनमहम्भोजयिष्यामि ।

श्राद्धादिषु शिवयोगिभोजने—

शिवभक्तं नरं भक्त्या यः श्राद्धादिषु भोजयेत् ।
सकलं कुलमुद्धृत्य शिवलोकं स गच्छति ॥९४८॥

अद्य सकलकुलोद्धारणपूर्वकशिवलोकगमनकामः श्राद्धे व्रते वा शिवयोगिमहं भोजयिष्यामि ।

स्मना कुर्याल्ललाटे यस्त्रिपुण्ड्रकम् ।
निर्मुक्तः शिवेन सह मोदते ॥९४४॥

क्तत्वशिवेन सह हर्षकामनया ललाटे भस्मना त्रिपुण्ड्रकमहङ्कु-

मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया ।
महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः ॥
पि कर्त्तव्यं ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम् ॥९४५॥

अथ तपस्विपूजाफलम्

दानानि तपस्तीर्थफलानि च ।
लभेद्भक्त्या सम्पूज्य शिवयोगिनम् ॥९४६॥

वेदविदुषां कोटिं सम्भोज्य यत्फलम् ।
कोटिगुणितं सम्भोज्य शिवयोगिनम् ॥९४७॥

विद्ब्राह्मणकोटिभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिव-

—

नरं भक्त्या यः श्राद्धादिषु भोजयेत् ।
कुलमुद्धृत्य शिवलोकं स गच्छति ॥९४८॥

रणपूर्वकशिवलोकगमनकामः श्राद्धे व्रते वा शिवयोगिमहं

भस्मसँ त्रिपुण्ड करबाक फल :—

जे व्यक्ति उज्जर भस्मसँ कप
भए शिवक संग आनन्द लाभ करैत

आइ हम सभ पापसँ निवृत्ति
ललाटमे भस्मसँ त्रिपुण्ड करब।

लिंगपुराणमे :—

भस्मक त्रिपुण्ड कयने विन
व्यक्ति शिवक पूजा करैत अछि, ओ
तैं हेतु कम-सँ-कम माटियोसँ कपाड़

आब तप

नन्दिकेश्वरमे—

मनुष्य (भक्तिपूर्वक) शैव यो
तीर्थक समस्त फल प्राप्त करैत अछि

शिवधर्मोत्तर मे —

वेदविद् करोड़ ब्राह्मणकेँ भ
करोड़ गुणा अधिक फल शैव योगीकेँ

आइ हम वेद जननिहार
करोड़ गुणा अधिक फल प्राप्तिक का
श्राद आदिमे शैव योगीकेँ भोजन क

जे व्यक्ति श्राद्ध आदिमे भक्ति
समस्त कुलकेँ उद्धार कय शिवलोक

आइ हम समस्त कुलक उ
व्रत मे शैव योगीकेँ भोजन करायब

बृहन्नन्दिकेश्वरे शिवयोगिने दानस्य—

विप्रे दशगुणं दानं श्रोत्रिये शतधा भवेत् ।
सहस्रगुणमाचार्य्ये अनन्तं शिवयोगिने ॥९४९॥

अद्यै तद्द्रव्यदानजन्यानन्तफलप्राप्तिकामनया इदममुकं विष्णुदैवतं शिवयोगिने तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

अमावास्याकालीनतपस्विब्राह्मणसंप्रदानकदाने —

अमावास्यामनुप्राप्य ब्राह्मणाय तपस्विने ।
यत्किञ्चिद्देवदेवेशं दद्यादुद्दिश्य शङ्करम् ॥९५०॥

प्रीयतामीश्वरः सोमो महादेवः सनातनः ।
सप्तजन्मकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥९५१॥

अद्यामावास्यायां सप्तजन्मकृतपापतात्कालिकपापक्षयकामनया इदं वस्तु यथाः दैवतं भगवन्तं शङ्करमुद्दिश्य तपस्विने ब्राह्मणायामुकशर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ओँ स्वस्तीति प्रत्युक्ते—प्रीयतामीश्वरः सोमोमहादेवः सनातनइति पठेत् ।

शैवे कृष्णाष्टम्यां दानस्य—

कृष्णाष्टम्यां विशेषेण धार्मिकाय द्विजातये ।
स्नात्वाभ्यर्च्य यथान्यायं पादप्रक्षालनादिभिः ॥९५२॥

प्रीयतां मे महादेवो दद्याद्द्रव्यं स्वकीयकम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ॥९५३॥

अद्य कृष्णाष्टम्यां सर्वपापविनिर्मुक्तिपरमपदप्राप्तिकाम इदं द्रव्यममुकदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रीयतां मे महादेव इति पठित्वा दद्यात् ।

स्वस्तीत्युक्ते दक्षिणा च देया ।

शिवयोगी शिवज्ञानी शिवधर्म्मरतश्च यः ।
इत्येतत्त्रिविधं ज्ञेयं शिवपात्रस्य लक्षणम् ॥९५४-९५५॥

अथ वर्ज्जनीयानि–

हिंसा परकलत्रञ्च निष्ठुरामनृतां गिरम् ।
स्तेयं केशवनिन्दाञ्च शिवभक्तो विवर्ज्जयेत् ॥९५६॥

परात्परतरं यान्ति नारायणपरायणाः ।
न ते तत्र गमिष्यन्ति ये दुषन्ति महेश्वरम्[1] ॥९५७॥

यश्चाभ्यसूयते देवं कारणात्मानमीश्वरम् ।
स कृत्स्नं नरकं याति सहपूर्वैस्सहानुजैः ॥९५८॥

यो लिंगं द्वेष्टि सम्मोहात् सर्वदेवनमस्कृतम् ।
नरो नरकगामी स्यात्तस्य सम्भाषणादपि ॥९५९॥

न शिवं शिवशास्त्रञ्च शिवाग्नि साधकं गुरुम् ।
निन्दितुर्लंङ्घयेच्चापिच्छायामपि कदाचन ॥९६०॥

मूर्त्तयो याः शिवस्याष्टौ तासु निन्दां विवर्ज्जयेत् ।
गुरौ च शिवभक्तेषु नृपसाधुतपस्विषु ॥९६१॥

१ ने० पा०, पृ० २५, महेश्वरे ।

कालोत्तरे—

देवद्रव्यं गुरुद्रव्यं नचात्मनि नियोजयेत् ।
उपेक्षा चाथवा दानं रक्षितव्यं प्रयत्नतः ॥९६२॥

श्रीरामायणे—

ब्राह्मणद्रव्यमादत्ते देवानाञ्चापि राघव ।
सद्यः पतति घोरेऽस्मिन्नरकेऽवीचिसंप्लवे ॥९६३॥

स्वयं देवस्य हरणं काष्ठपात्रेण पूजनम् ।
स्थापनं वेत्रपात्रेषु त्रयं दारिद्र्यकारणम् ॥९६४॥

शिवपुराणे—

यस्तु शङ्करनिर्म्माल्यं पादेनाक्रमते नरः ।
षष्टिवर्षसाहस्रहणि तिर्य्यग्योनिषु जायते ॥९६५॥

स्कन्दपुराणे—

निर्म्माल्यं नतु यो भ[1]क्त्या शिरसा धारयिष्यते ।
अशुचिर्भिन्नमर्य्यादो नरः पापसमन्वितः ॥९६६॥

नरके पच्यते घोरे तिर्य्यग्योनौ च सम्भवेत् ।
ब्रह्महापि शुचिर्भूत्वा निर्म्माल्यं यस्तु धारयेत् ॥
तस्य पापं महच्छीघ्रं नाशयिष्ये महाव्रते ॥९६७॥

---

१ ने० पा०, पृ० २५, निर्म्माल्यं हि तु यो भक्त्या ।

कालभविष्ये—

केतकीचातिमु[1]क्तश्च कुन्दोयूथी मदन्तिका ।
शिरीषसर्जबन्धूककुसुमानि विवर्ज्जयेत् ॥९६८॥

अङ्कोटपत्रकुसुमं करजेन्द्रतनूद्भवम् ।
वैभीतकानि पत्राणि कुसुमानि विवर्जयेत् ॥९६९॥

निर्गन्धीन्युग्रगन्धीनि कुसुमानि विवर्जयेत् ।
गन्धवन्त्यपवित्राणि यानि तान्यपि वर्जयेत् ॥९७०॥

गन्धहीनमपिग्राह्यं पवित्रं यत् कुशादिकम् ।
केशकीटापविद्धानि जीर्णपर्युषितानि च ॥९७१॥

स्वयंपतितपुष्पाणि त्यजेदुपहतानि च ।
मुकुलैर्नार्चयेद्देवपक्वं न निवेदयेत् ॥
फलं क्वथितबिल्वं च यत्नात् पक्वमपि त्यजेत् ॥९७२॥

अतिमुक्तो माधवीमदन्तिका यूथ्यनुकारिणी गौड़े प्रसिद्धा । इन्द्रतरुः सिन्धुवारः । अपवित्राणि नीलीकपित्थादिकुसुमानि । क्वथितं स्विन्नं-विद्धं कीटकेन । यत्नात् पक्वम् अनलादियोगेन पक्वम् ।

क्वथितं कीटविद्धं पक्वमपिफलं यत्नात्त्यजेदिति केनचित् ।

लिङ्गपुराणे—

सर्जबन्धूकपुष्पाणि कुन्दोयूथीमदन्तिका ।
केतकीचातिमुक्तश्च श्वेता चैवापराजिता ॥
घोषिका श्वेतरक्ताच तथा भण्टिकपुष्पकम् ॥९७३॥

पूजयित्वा तथापुष्पैरेभिश्चैव नरः सदा ॥
अवीचिनरके पापः पतेदेव न संशयः ॥९७४॥

[1] ने० पा०, पृष्ट २५, अतिमुक्ताश्च ।

उमासंवादे—

कपित्थं केतकीपुष्पं नाकुली काष्ठपाटला ।
निम्बपुष्पं करञ्जञ्च धातकीपुष्पमेव च ॥९७५॥

शिरीषं कृष्णलापुष्पमतिमुक्तञ्च वर्ज्जयेत् ।
यानि कण्ठककीर्णानि यानि चोपहतानि च ॥९७६॥

शीर्णानि फललग्नानि कलिकापतितानि च ॥९७७॥

नाकुली रास्ना कृष्णला = गुंजा ।

पुष्पाध्याये—

निर्गन्धीन्युग्रगन्धीनि यत्ती[1]र्थानि वै तथा ।
वारितत्रोटितान्येव वर्ज्जयेदमरार्च्चने ॥९७८॥

बलाद्दत्तानि पुष्पाणि याचितानि वनानि व ।
अशुच्यत्पादितान्येव वर्जयेदमरार्च्चने ॥९७९॥

वामहस्ते धृतं पुष्पमधोवस्त्रधृतं तथा ।
पुष्पहस्तनमस्कारे[2] पुष्पाणि परिवर्ज्जयेत् ॥९८०॥

लैङ्गे—

शयनोत्तरमारम्य फाल्गुनान्तं न कारयेत् ।
यस्तु कुर्य्याद्विमंहेन पूजां दमनकेन च ॥
अविच्यां रौरवे वासो भवेत्तस्य न संशयः ॥९८१॥

पुष्पनिषेधस्तु फलविशेषाद्विहित[3]कर्त्तव्यपूजातिरिक्तपूजायां बोद्धव्यः ।

---

१ ने० पा०, पृ० २६, क्रयक्रीतानि, यानि तैर्थानि शुद्ध पाठ ।

२ वैंह, पुष्पहस्तेनमस्कार ।

३ वैंह, अशुद्धपाठ अछि ।

नमेरुपत्रैश्च फलैस्तथा कुङ्कुमकेसरैः ।
सुगन्धिपुष्पैर्यत्नेन स्थलपद्मै र्विशेषतः ॥९८२॥

नैषां पर्य्युषितत्वं हि स्थितौ संवत्सरावधि ।
पद्मानि सितरक्तानि कुसुमान्युत्पलानि च ॥९८३॥

अपर्य्युषितान्येतानि पुन्नागं बिल्वपत्रिका ।
एषां पर्य्युषिताशङ्का कार्य्या पञ्चदिनोद्र्ध्वतः ॥९८४॥

दिने दिने तु दातव्व शोधयित्वा वकं पुनः ।
सप्तरात्रमतिक्रम्य निर्म्मालत्वं प्रपद्यते ॥९८५॥

वकपुष्पञ्च षण्मासान्निर्म्मल्यत्वं न गच्छति ।

पद्मानि मृदुगन्धीनि सदाभीष्टानि शूलिनः ॥
शुष्काण्यपि च पत्राणि श्रीवृक्षस्य सदैव हि ॥९८६॥

१ ने० पा०, पृ० २६कुमुदानि ।

अथ शिवे विहितपुष्पाणि

भविष्यपुराणे

करवीरो वकश्चैव अर्क उन्मत्तकस्तथा ।
पाटला बृहतीचैव तथैव गिरिकर्णिका ॥१८७॥

तथा कामस्य[1] पुष्पाणि मन्दारश्चापराजिता ।
शमीपुष्पाणि चान्यानि कुब्जकं शिखीनी[2] तथा ॥१८८॥

अपामार्गस्तथा पद्मं जातीपुष्पं सवोकनम्[3] ।
चम्पकोशीरतगरं तथा वै नागकेसरम् ॥१८९॥

पुन्नागं किङ्किरातञ्च द्रोणपुष्पं तथा शुभम् ।
शिशपोदुम्बरश्चैव जया मल्ली तथैव च ॥१९०॥

पुष्पाणि यज्ञवृक्षस्य तथा बिल्वः प्रियः शुभे ।
कुसुम्भस्य च पुष्पाणि तथा वै कुंकुमस्य च ॥१९१॥

नीलञ्च कुमुदञ्चैव तथा रक्तोत्पलानि च ।
अम्लानञ्च लवङ्गञ्च करुणं वकुलं तथा ॥१९२॥

सुरभीणि च सर्वाणि स्थलजान्यम्बुजानि च ।
गृह्णामि शिरसा देवि योमे भक्त्या निवेदयेत् ॥१९३॥

"उन्मत्तको धुस्तूरकः। गिरिकर्णिका कुब्जम्। शिखिनी चुलिया। वोकनं मोकनम्। उशीरं वीरणपुष्पम्। पुन्नागं पुनाल इतिप्रसिद्धम्। किङ्किरातः कुरुण्टकपुष्पम्। जया जयन्ती। यज्ञवृक्षः किंशुकः। नीलं नीलोत्पलम्।

१ ने० पा० पृ० २६, काशस्य।
२ वैह, शिथिली।
३ वैह, समोकनम्।
४ शिथिली।

शिवरहस्ये—]

अजङ्गलरुहैः पुष्पैः शण[1]पुष्पैस्तथैव च ।
जयादाड़िमचित्रैश्च नागकेशरचम्पकैः ॥९९४॥
चूतपुष्पैश्च रक्तैश्च तथा रक्तोत्पलैरपि ।
रक्तपुष्पैः[2] कुसुमैश्च कक्कोलैः कोकिलाक्षकैः ॥९९५॥
किङ्किरातस्य पुष्पेण तथा कुष्माण्ड[3]सम्भवैः ।
कुब्जकस्य च पुष्पेण शङ्खपुष्पकपुष्पकैः ॥९९६॥
भूमिचम्पकपुष्पेण पुष्पेण कूटजैस्तथा ।
पद्मेन्दीवरकुमुदैस्तथा सौगन्धिकेन च ॥९९७॥
घण्टारवस्य पुष्पेण गन्धवत्तगरेण च ।
कृष्णापराजितापुष्पै राजपट्टिकपुष्पकैः ॥९९८॥
सर्वदा च प्रवालेन तथा नीलकुरुण्टकैः ।
पीतिकाकरवीरैश्च नेपालीपाटलेन च ॥९९९॥
केसरैर्वञ्जुलेनाथ तिलकेन तथैव च ।
मल्लिकाभिश्च सर्वाभिः शतपत्रिकयापि च ॥१०००॥
मालतीकुसुमेनाथ लवङ्गेनाथ सर्वदा ।
दूर्वा[4]रुकुसुमैश्चाश्चापि जयन्तीकुसुमेन च ॥१००१॥
कदम्बनीलपुन्नागतिलपुष्पैश्च सर्वदा ।
पूजयेत् सर्वदा देवं शङ्करं परमेश्वरम् ॥१००२॥

स्मृतिः—

कुसुमैः करवीराद्यैस्तमालतुलसीदलैः ।
रसालकिंशुकाशोकैर्दू[5]र्वायाश्च प्रवालकैः ॥
शाद्वलैश्च सदा पूजा स्वभावेन सदाशिवे ॥१००३॥

१ ने० पा०, पृ० २७ शलपुष्पैः ।
२ रक्तद्मैः ।
३ कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य ।
४ खारीक फूल ने० पा० अशुद्धपाठ । खीरा इति भाषायाम ।
५ ने० पा०, पृ० २७, दुर्वायाश्च ।

नन्दिकेश्वरे—

सौगन्धिकं तथागस्तिसिद्ध[1]शेफालिकार्ज्जुनाः ।
तुलसीतुवरकक्कोलनागवञ्जुलसौरभाः ॥
नन्द्यावर्त्तकसम्पाकतिलकं नवमल्लिका ॥१००४॥

अथ पत्राणि

बिल्वपत्रं शमीपत्रं भृङ्गराजदलं तथा ।
अटरुषस्य पत्रञ्च पत्रं रुद्रजटस्य च ॥१००५॥
दमनस्य च पत्रञ्च पत्रं मरुवकस्य च ।
कर्प्पूरपत्रिकापत्रं पत्रं वर्वरमल्लिकम् ॥१००६॥
नागदमनपत्रं च पत्रं शिशुकघूलिकम् ।
तमालपत्रकुसुमैरुदुम्बरदलैस्तथा ॥१००७॥
गङ्गापत्रकपत्रञ्च पत्रं कह्लारकस्य च ।
जलकह्लारिकापत्रं पत्रं क्षेत्रमरुवकम् ॥१००८॥
कुशपत्रं सदा प्रोक्तं ग्रन्थिलं वकपत्रकम् ।
द्रोणापामार्गपत्रञ्च पत्रं खदिरकस्य च ॥१००९॥
येषां पत्रैः सदा पूज्यस्तेषां पुष्पैश्च सर्वदा[2] ॥१०१०॥

इह विहितमात्रालाभे विहितनिषिद्धमुपादेयंनिषिद्धं सर्वथानुपादेयमेवेति ।
इति शैवसर्वस्वपूजाकोषः ।

अथ शिवव्रतफलम्

भविष्यपुराणे महाव्रतस्य—

चतुर्द्दश्यां तथाष्टम्यां पक्षयोः शुक्लकृष्णयोः ।
योऽब्दमेकं न भुञ्जीत शिवार्चनपरः शुचिः ॥१०११॥
यत्पुण्यमक्षयं प्रोक्तं सततं सत्रयाजिनाम् ।
तत्पुण्यं सकलं तस्य शिवलोकञ्च गच्छति ॥१०२१॥

---

१ ने० पा०, पृ० २७, बिल्व
२ पुष्पचिन्तामणि, शिवे विहितपत्राणि लिङ्गपुराण पृ०, ९-१० ।

व्रतपूर्वदिने स्नानादिना शरीरशुद्धिं विधाय निरामिषमेकवारं भुक्त्वा दन्तान् संशोध्य व्रतदिने प्रात: स्नात्वा सूर्य्योदये शुचिराचान्तो दर्भपाणिरुदङ्मुखो जानुभ्यामवनीं गत्वा वारिपूर्णं ताम्रपात्रमादाय भगवन् सूर्य्य भगवत्यो देवता अद्यादि वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशिप्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहमाचरिष्यामीति निवेद्य कुशतिल-जलपुष्पाण्यादाय अद्यादि संततबहुसत्रयाजित्वाक्षतपुण्यसमपुण्यप्राप्तिशिवलोकगमन-कामनया वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशिप्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

फाल्गुनशुक्लचतुर्द्दश्यामस्यारम्भः शिवार्च्चनमत्राङ्गम् ।

स्कन्दपुराणे महाव्रतस्य—

चतुर्द्दशीमष्टमीञ्च पक्षयोरुभयोरपि ।
अहोरात्रं क्षपेद्यस्तु संवत्सरमशेषतः ॥१०१३॥

स तेन कर्म्मणा युक्तः सर्वपापविवर्ज्जितः ।
न याति नरकं देवि यमञ्च स न पश्यति ॥१०१४॥

फाल्गुनकृष्ण[1]चतुर्द्दश्यां प्रातः स्नानादि विधाय पूर्ववन्निवेद्य अद्यादिसर्व-पापविवर्ज्जितत्वनरकगमनरहितत्वयमादर्शनकामनया वर्षमेकं यावत् प्रतिचतुर्द्दशि-प्रत्यष्टम्युपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

महाभारते महाव्रतस्य—

अष्टमीमथ कौन्तेय शुक्लपक्षे चतुर्द्दशीम् ।
उपोष्य व्याधिरहितो रूपवानभिजायते ॥१०१५॥

फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां प्रातःस्नानादि विधाय भगवन् सूर्य्य भगवत्योदेवता अद्यादिवर्षमेकं यावत्प्रतिशुक्लाष्टमिप्रतिचतुर्द्दशिव्रतमहमाचरिष्यामीति निवेद्य अद्यादि व्याधिराहित्यरूपवत्वप्राप्तिकामनया वर्षमेकंयावत्प्रतिशुक्लाष्टमिप्रति-चतुर्द्दश्युपवासमहङ्करिष्ये ।

---

१ ने० पा०, पृ० २८, शुक्ल ।

लिङ्गपुराणे केवलचतुर्द्दश्युपवासस्य—

उपवासश्चतुर्द्दश्यां महापातकनाशनः ॥१०१६॥

प्रातः स्नानादि विधाय सूर्य्यादिदेवताभ्यो निवेद्य अद्य चतुर्द्दश्यां महापातकनाशकामनया उपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

वराहपुराणे कृष्णचतुर्द्दश्यां नक्तव्रतस्य—

रौद्रं व्रतं चतुर्द्दश्यां कृष्णपक्षे विशेषतः ।
तन्माघमासादारभ्य पूर्णं संवत्सरं नृप ॥१०१७॥

व्रतमिदं नक्तरूपं पापक्षयफलञ्चेति वराहपुराण एव व्यक्तं व्रते शुक्लादिमासव्यवस्था । फाल्गुनकृष्णचतुर्द्दश्यामस्यारम्भः ।

भगवन् सूर्य्य भगवत्योदेवता अद्यादिवर्षमेकं यावत्प्रतिकृष्णचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहमाचारिष्यामीति निवेद्य अद्यादि पापक्षयकामनया वर्षमेकं यावत्प्रतिकृष्णचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

भविष्यपुराणे नक्तव्रतस्य—

कृष्णाष्टमीन्तु नक्तेन तथा कृष्णचतुर्द्दशीम् ।
इह भोगानवाप्नोति परत्र शिवमृच्छति ॥१०१८॥

फाल्गुनकृष्णाष्टम्यां प्रातर्निवेदनं कृत्वा अद्यादि ऐहिकबहुभोगावाप्तिपारलौकिकशिवप्राप्तिकामनया वर्षमेकं यावत्प्रतिकृष्णाष्टमिप्रतिकृष्टचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

त्स्यपुराणे चतुर्द्दश्यां नक्तव्रतस्य—

चतुर्द्दश्यान्तु नक्ताशी समाप्ते गोयुगप्रदः ।
शैवं पदमवाप्नोति त्रैयम्बकमिदं स्मृतम् ॥१०१९॥

फाल्गुनकृष्णचतुर्द्दश्यां प्रातःस्नानादिनिवेदनं विधाय अद्यादिशैवपदप्राप्ति-
मनया वर्षमेकं यावत्प्रतिचतुर्द्दशिनक्तभोजनेतरभोजननिवृत्तिव्रतमहङ्करिष्ये ।

व्रतसमाप्तौ वर्षान्तरे ब्राह्मणाय गोयुगदानम् ।

अद्यकृतैतद्वर्षाविच्छिन्नचतुर्द्दशीयनक्तव्रतप्रतिष्ठार्थमिदं गोयुगं रुद्रदैवतममुक-
यामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

े शिवरात्रिचतुर्द्दशीव्रतस्य—

भूतेश्वरादिह परोऽस्ति न पूजनीयो
नैवाश्व[1]मेधसदृशः क्रतुरस्ति लोके ।
गंगासमं त्रिभुवने नच तीर्थमस्ति
नान्यद्व्रतञ्च शिवरात्रिसमं तथास्ति ॥१०२०॥

एकाहमेवशिवरात्रिचतुर्द्दशीं यो
भक्त्या करोति निशि जागरणाभिरामाम् ।
देवेन्द्रमन्त्रिचतुराननषण्मुखाद्याः
पुण्यञ्च तस्य सकलं नहिवक्तुमीशाः ॥१०२१॥

गंगा गया कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च ।
अमीषां फलमाप्नोति शिवरात्रिषु जागरैः ॥१०२२॥

प्रातःस्नानादिसूर्य्यादिदेवताभ्यो विवेदनं विधाय अद्य फाल्गुनकृष्ण-
चतुर्द्दश्यां ब्रह्मादिदेवापरिसंख्येयपुण्यप्राप्तिकामनया उपवासव्रतमहङ्करिष्ये ।

1 ने० पा० अशुद्ध पाठ ।

अत्र जागरस्य—

अद्यगङ्गागयाकुरुक्षेत्रनैमिषपुष्करसेवनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः शिवरात्रिजागरमहङ्करिष्ये ।

भविष्ये नृत्यगीताद्यैर्जागरस्य—

जागरं नृत्यगीताद्यैः सकृत्कृत्वा तु शङ्करे[1] ।
मन्वन्तरशतं साग्रं शिवलोके वसेत् सुखी ।।१०२३।।

अद्य साग्रमन्वन्तरशतावच्छिन्नसुखित्वशिवलोकवासकामः शिवरात्रौ नृत्यगीताद्यैर्जागरमहङ्करिष्ये ।

अथगामकल्पेन शिवरात्रिविधिः

फाल्गुनकृष्णत्रयोदश्यामेकवारं भुक्त्वा चतुर्दश्यां प्रातः स्नात्वा शिवालये प्राङ्गणे वा शुचिराचम्य वारिपूर्णताम्रपात्रं हस्ते कृत्वा जानुभ्यामवनीं गत्वा भगवन् सूर्य भगवत्यो देवता इत्यभिधाय अद्यादि आजन्मसमुपार्जितपापक्षयेन्द्रादिलोकगमनपूर्वकानेकभोगभुक्तिभूतलराज्यप्राप्तितदुत्तरपूजितपरमस्थानगमनशिवसायुज्यकामनया चतुर्दशवर्षाणियावत् प्रतिफाल्गुनकृष्णचतुर्दशिशिवरात्रिव्रतमहङ्करिष्ये ।

इति सङ्कल्पं विधाय रात्रौ प्रथमप्रहरे भगवन्तं शिवं पंचगव्येन पञ्चामृतेन वा स्नपयित्वा यवगोधूमयोरन्यतरचूर्णेन रुक्षं विधाय सवाषधिवारिणा स्नपयित्वा उत्तरवक्त्रे भगवन् महादेव इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा नमस्ते कामदेवाय शर्वाय शशिशेखर ।

नमस्ते वामदेवाय शर्वाय शशिशेखर ।
पापशुद्ध्यर्थमर्घोऽयं गिरीश प्रतिगृह्यताम् ।।१०२४।।

इत्यर्घदानम् । ॐ ह्रीं[2] वामदेवाय नमः इतिचन्दनकुंकुमागुरुकर्पूराद्यनुलेपनं विधाय विल्वपत्रनानापुष्पैरभ्यर्च्य धूपदीपनानानैवेद्यानि स्वाहान्तमन्त्रेण दद्यात् ।

---

१ ने० पा० पृ० २९, शिवेपुरः । तु नहि अछि ।
२ वँह, पृ० २९ ।

पूर्ववक्त्रे ओं भगवन् तत्पुरुष इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्ते दितिजान्तक ।
तत्पुरुष नमस्तेऽस्तु अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२५॥

इत्यर्घं दत्वा ओं हौं[1] तत्पुरुषाय नम, इत्यनुलेपनं दत्वा समभ्यर्च्य स्वाहान्तमन्त्रेण दीपनैवेद्यानि दद्यात् ।

दक्षिणवक्त्रे—भगवन् अघोर इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते शूलहस्ताय नमस्ते दितिजान्तक ।
अघोराय नमस्तुभ्यमघर्योऽम् प्रतिगृह्यताम् ॥१०२६॥

इत्यर्घं दत्वा ओं हुं अघोराय नमः इत्यनुलेपनं दत्वा समभ्यर्च्य स्वाहान्तण धूपदीपनैवेद्यानि दद्यात् ।

पश्चिमवक्त्रे—भगवन् सद्योजात इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते सद्योजाताय नमः कैलानवासिने ।
नमस्ते देवदेवेश अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२७॥

त्यर्घं दत्वा ओं हां[2] सद्योजाताय नमः इत्यनुलेपनं दत्वा पुष्पैरभ्यर्च्य स्वाहान्त धूपादिकं दद्यात् ।

वक्त्रे—भगवन् ईशान इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते मोक्षदायिने ।
ईशानाय नमस्तुभ्यमर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१०२८॥

इत्यर्घं दत्वा ॐ हौं ईशानायनमः इतिचन्दनानुलेपनं दत्वा स्वाहान्तमन्त्रेण नैवेद्यानि दद्यात् ।

पुनरपि—ओं हौं नमः शिवायेति सम्पूज्यानेनैव वस्त्राणि हिरण्यञ्च त्वा प्रणमेत् ।

एवं प्रहरे प्रहरे पूजा स्नानञ्च विशेषतः । नृत्यगीतजागरणंकुर्यात् । शिवधर्माश्च श्रोतव्याः व्रतान्ते विप्राय दक्षिणां गां हिरण्यं वस्त्रं च दद्यात् वान् भोजयेत् ।

---

१ ने० पा०, ह्रौं ।
२ वएह, ह्रां ।

अथ सोमव्रतम् ।

भविष्ये सुमन्तुवाच ।

सोमव्रतं तथा चान्यं शङ्करप्रीतये शृणु ।
ताम्रपात्रं पयःपूर्णं कृत्वा तत्स्थञ्च शङ्करम् ॥१०२९॥

प्रच्छाद्योपरिवस्त्रेण गन्धपुष्पार्च्चितं महत् ।
शिवभक्ते द्विजे दद्याद्भोजयित्वा विधानतः ॥१०३०॥

प्राच्यां समुद्गते सोमे प्रतीच्याञ्च रवौ गते ।
पौर्णमास्यां च वैशाख्यां गृह्यपात्रं शिवाग्रतः ॥१०३१॥

प्रीयतां मे महादेवः सोममूर्त्तिर्जगत्पतिः ।
तस्मै विप्राय तत्पात्रमर्पयेद्भक्तितः शनैः ॥१०३२॥

एतत्सोमव्रतं नाम कृत्वा रुद्रान्तिकं व्रजेत् ।
रुद्रलोकात्परिभ्रष्टो भवेज्जातिस्मरो नरः ॥१०३३॥

पूर्वाभ्यासेन तेनैव पुनः शिवपुरं व्रजेत् ॥१०३४॥

महत्ताम्रपात्रमित्यर्थः ।

वैशाख्यां प्रातः स्नानादिकृत्वा सूर्य्यादिदेवताभ्यो निवेद्य अद्य वैशाख्यां रुद्रान्तिकगमनरुद्रलोकप्रच्यवानन्तरजातिस्मरत्वपूर्वतदभ्यासजनितपुनःशिवपुरगमनकामः सोमव्रतमहङ्करिष्ये ।

अथ नामकृष्णाष्टमीव्रतं ।

भविष्यपुराणे विष्णुरुवाच ।

कृष्णाष्टम्यां प्रयत्नेन कृत्वा नक्तं विधानतः ।
मार्गशीर्षे शुभे मासे शङ्करं देवमर्चयेत् ॥१०३५॥

पीत्वा शक्त्याच गोमूत्रमनाहारो निशि स्वपेत् ।
अतिरात्रस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं भवेत् ॥१०३६॥

एवं पौषेऽपि सम्पूज्य शम्भुनामानमीश्वरम् ।
कृष्णाष्टम्यां घृतं प्राश्य वाजपेयफलं लभेत् ॥१०३७॥

माघे महेश्वरं विप्र कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
निशि पीत्वा च गोक्षीरं गोमेधफलमाप्नुयात् ॥१०३८॥

फाल्गुने च महादेवं सम्पूज्य प्राशयेत्तिलान् ।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं भवेत् ॥१०३९॥

चैत्रं तु स्थाणुनामानं कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
यवांश्च भर्जितान् प्राश्य सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥१०४०॥

वैशाखे शिवनामानं पूजयित्वा प्रयत्नतः ।
रात्रौ कुशोदकं पीत्वा सर्वमेव फलं लभेत् ॥१०४१॥

ज्येष्ठे पशुपतिं पूज्य गवां शृङ्गोदकं पिबेत् ।
गवां कोटिप्रदानस्य यत्फलं तदवाप्नुयात् ॥१०४२॥

आषाढ़े चोग्रनामानमिष्ट्वा प्राश्य च गोमयम् ।
वर्षाणाञ्च शतं साग्रं शिवलोके महीयते ॥१०४३॥

शर्वं तु श्रावणे मासि पूज्यार्कं प्राशयेन्निशि ।
गोष[१]रस्य तु यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥१०४४॥

त्र्यम्बकं भाद्रपदे कृष्णाष्टम्यां प्रपूजयेत् ।
सम्प्राश्य बिल्वपत्रन्तु वाजपेयफलं लभेत् ॥१०४५॥

मासे चाश्वयुजे प्रोक्तं प्राशनं तण्डुलोदकम् ।
नाम्ना ईशं यजेद्देवं पुण्डरीकफलं लभेत् ॥१०४६॥

१. ने० प०, गोरस्य ।

मासे तु कार्तिकेऽष्टम्यामीशानाख्यं प्रपूजयेत् ।
पञ्चगव्यं सकृत्पीत्वा पञ्चयज्ञफलं लभेत् ॥१०४७॥

वर्षान्ते भोजयेद्विप्रान् शिवभक्तिपरायणान् ।
पायसं मधुसंयुक्तं घृतेन सुपरिप्लुतम् ॥१०४८॥

निवेदयेन्तु रुद्राय गाञ्च कृष्णां पयस्विनीम् ।
वर्षमेकं तथा कुर्य्यान्नैरन्तर्य्येण योनरः ॥
कृष्णाष्टमीव्रतं भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥१०४९॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वैश्वर्य्यसमन्वितः ।
वसेच्छिवपुरे नित्यं नचेहायाति नाकभाक् ॥१०५०॥

कृत्वा नक्तमिति नक्तव्रतं सङ्कल्प्येत्यर्थः ।

नतु नक्तभोजनान्तरं रात्रावेव पूजेति बोद्धव्यम् ।

एवं पौषेपीति नक्तप्राशनं तदनन्तरमनाहारत्वञ्चातिदृश्यते ।

एवं मासान्तरेष्वपि ।

विहितद्रव्यविशेषं निशि प्राश्यानाहारः स्वपेत् ।

यत्रापि कृष्णाष्टमी न श्रुता निशाकालश्च न श्रुतस्तत्रापि मासे तद्बोध्यं पूर्वापरपरामर्शात् ।

प्रतिमासे श्रुतप्राशनफलञ्चात्र गुणफलरीत्या संवत्सरव्रतञ्चाधिकारिविशेषणमिति सर्वं समञ्जसम् ।

तत्र मार्गकृष्णाष्टम्यां प्रातः प्रधानसङ्कल्पं कुर्य्यात् ।

भगवन् सूर्य्य भगवत्यौ देवता इति निवेद्य—अद्यादिसर्वपापविनिर्मुक्तत्वसर्वैश्वर्य्यसमन्वितत्वशिवपुराधिकरणकसार्वकालिकवासस्वर्गलोकाप्रच्यवकामनया वर्षमेकं यावत् प्रतिकृष्णाष्टमिनक्तव्रतमहङ्करिष्ये ।

अथ प्रतिमासं(प्रत्येक[1])सङ्कल्पः ।

तत्र मार्गे मासे अद्य मार्गकृष्णाष्टम्यामष्टगुणातिरात्रयज्ञजन्यफलसमफल-
[प्रा]प्तिकामनया शङ्करं देवमर्चयित्वा नक्तकालिकगोमूत्राहारेतराहारनिवृत्तिमहङ्क-
[रि]ष्ये ।

पौषे—अद्यपौषकृष्णाष्टम्यां वाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईश्वर-
पूर्वकनक्तकालीनघृतप्राशनेतरहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

माघे—अद्यमाघकृष्णाष्टम्यां गोमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया
[महेश्]वरं सम्पूज्य नक्तकालिकगोक्षीराहारेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

फाल्गुने—अद्यफाल्गुनकृष्णाष्टम्यामष्टगुणराजसूययज्ञफलसमफलप्राप्तिकामनया
[दे]वं सम्पूज्य नक्तकालिकतिलप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

चैत्रे—अद्य चैत्रकृष्णाष्टम्यामश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया स्थाणुं
[सम्पूज्]य नक्तकालिकभृष्टयवप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

वैशाखे—अद्य वैशाखकृष्णाष्टम्यां सर्वमेधयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया
सम्पूज्य नक्तकालिककुशोदकपानेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

ज्येष्ठे—अद्य ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गोकोटिप्रदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया
[...]न सम्पूज्य नक्तकालिकगोशृङ्गोदकपानेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

आषाढे—अद्याषाढकृष्णाष्टम्यां साग्रवर्षशतावच्छिन्नशिवलोकमहितत्वकाम-
[...]ं सम्पूज्य नक्तकालिकगोमयप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

---

1 ने० पा० से प्राप्त ।

श्रावणे—अद्य श्रावणकृष्णाष्टम्यां गोषव(रस[1]) यज्ञजन्यफलसमफलप्राप्ति-कामनया त्र्यम्बकं(शवं) सम्पूज्य नक्तकालिकार्कप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहंकरिष्ये ।

भाद्रे—अद्य भाद्रकृष्णाष्टम्यां वाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकायनया त्र्यम्बकं सम्पूज्य नक्तकालिकबिल्वपत्रप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

आश्विने—अद्याश्विनकृष्णाष्टम्यां पुण्डरीकयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईश्वरं सम्पूज्य नक्तकालिकतण्डुलोदकप्राशनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

कार्त्तिके—अद्य कार्त्तिककृष्णाष्टम्यां पञ्चयज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामनया ईशानं सम्पूज्य नक्तकालिकपञ्चगव्यभोजनेतराहारनिवृत्तिमहं करिष्ये ।

व्रतसमाप्तौ वर्षान्ते शिवभक्तब्राह्मणान् मधुसंयुक्तं घृतपरिप्लुतं पायसं भोजयेत् ।

रुद्राय पयस्विनीं कृष्णां गां निवेदयेदिति नामकृष्णाष्टमीव्रतम् ।

भविष्यपुराणे—

पूर्वाह्णे भुञ्जते देवा मध्याह्ने मानुषादयः ।
अपराह्णे तु पितरः सायाह्ने गुह्यकादयः ॥१०५१॥
सर्ववेलामतिक्रम्य नक्तभोजनमुत्तमम् ॥१०५२॥
हविष्यभोजनं स्नानं सत्यमाहारलाघवम् ॥
अग्निकार्यमधःशय्यां नक्तभोजी षडाचरेत् ॥१०५३॥

हविष्यं यवास्तदलाभे माषकोद्रवचणकगौरसर्षपमसुरचीनकुलत्थवर्जमन्यद-प्यन्नम् ।

लवणे सैन्धवसामुद्रे । सामुद्रं साम्भरीति प्रसिद्धम् ।

गव्यं दधि पयो घृतञ्च । अग्निकार्यं व्याहृतिहोमः ।

न व्याहृतिभ्यः परं होम इति शंखेन सामान्यतोऽभिधानात् न च व्याहृतिहोमा-ङ्गत्वे तदुपसंहारापत्तेः ।

---

१ ने० पा० ।

स्त्रीशूद्रयोरनधिकारः—

१ नरो वा यदि वा नारीत्यादिश्रवणात् व्रतोपवासनियमैः शरीरपरिशोधनमिति-
नात्यधर्मेष्वभिधानाद्वैश्यशूद्रयोस्त्रिरात्रपंचरात्रोपवासनिषेधात् स्त्रीशूद्रयोर्व्रताधिकारो
प्रतिष्ठादाविव होतृद्वारा होमसम्भवात् स्त्रीणां होमो न कर्तव्य इत्याचारानुगृहीत-
नाग्यनिषेध बलात् स्त्रीणां होमाभाव एव बोद्धव्यः ।

अधःशय्यामिति खट्वादिव्यावृत्यर्थं नतु केवलभूमिशयनार्थमेवानौचित्या-
त्।

अथ शिवे जयास[1]नमन्त्राः

तीये :—

जयेश्वर महादेव जय भूतपते हर ।
जयाशेषमहाबाहो मोचय त्रिपुरान्तक ॥२०५४॥

जयमुच्चार्य्य यो नाम स्मरेद्देवस्य शूलिनः ।
विसृज्य दुरितं[2] सर्वं स याति परमां गतिम् ॥१०५५॥

जयभवशिवशर्वत्र्यक्षदक्षार्च्चितांघ्रे ।
स्मरहरवृष[3]केतो धूर्ज्जटे व्योमकेश ।
वरद कुरु कृपां मे मोहविध्वस्तबुद्धे- ।
र्विहितविविधमूर्त्ते भूय एवोन्नमस्ते[4] ॥१०५६॥

स्वस्त्यस्तु वस्तुहिनरश्मिभृतः प्रसादा—
दंकं वपुः श्रितवतो हरिणा समेत्य ।
तन्नाभिपङ्कजसहोत्थमृणाललील—
माविष्करोति हृदि यस्य भुजङ्गराजः ॥१०५७॥

---

१ ने॰ पा॰, पृ॰ ३२, अथ शिवे जयाशनसनम् मन्त्राः ।
२ ओएह, वृजिनम् ।
३ ओएह, मृड (महादेव)
४. ओएह, पृ॰ ३२, एवन्नमस्ते ।

यादद्गङ्गाविभूविस्त्रिपुरहरजटामण्डलं मण्डयन्ती ।
यावन्मालासुमेरोः[1] शिरसि सितसहावैजन्त जयन्ती ।
यावत् पतालमूलं स्फूरदमलरुचिः[2] शेषनिर्मोकवल्ली ।
तावद्विश्वासदेव्या जगति विजयतां शैवसर्वस्त्र कीर्त्तिः ॥१०५७॥

समस्तप्रक्रियात्रिराजमान महादेवी श्रोमद् ।
बिश्वासदेवी विरचितं शैवसर्वस्वं सम्पूर्णम् ।

---

१ विद्यापति वाङ्मय, पृ० १३८, मल्ली मोला विद्यापति-विमर्श, पृ० ६०, मल्ली मोला; गंगावाक्यावली, अन्तिम अंश, पृ० ।

२ विद्यापति वाङ्मय, पृ० १३८, स्फूरदमररुचिः, विद्यापति-विमर्श, स्फुरदमररुचिः ।